॥ॐ॥
॥श्री परमात्मने नमः ॥
॥श्री गणेशाय नमः॥

॥ अथर्ववेद संहिता ॥

॥ अथर्ववेद॥

॥ अथ एकोनाविंश काण्डम्॥

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन
॥ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विषय सूची

सूक्त १ – यज्ञ सूक्त 7

सूक्त २ – आपः सूक्त 9

सूक्त ३ – जातवेदा सूक्त..... 12

सूक्त ४ – आकूति सूक्त..... 14

सूक्त ५ – जगद् – राजा सूक्त..... 16

सूक्त ६ – जगद्बीजपुरुष सूक्त 17

सूक्त ७-नक्षत्र सूक्त..... 23

सूक्त ८- नक्षत्र सूक्त..... 26

सूक्त ९ – शान्ति सूक्त 29

सूक्त १० – शान्ति सूक्त..... 35

सूक्त ११ – शान्ति सूक्त..... 40

सूक्त १२ – सुवीर सूक्त..... 43

सूक्त १३ – एकवीर सूक्त 44

सूक्त १४ – अभय सूक्त 49

सूक्त १५ – अभय सूक्त 49

सूक्त १६ – अभय सूक्त 53

सूक्त १७ – सुरक्षा सूक्त..... 55

सूक्त १८ – सुरक्षा सूक्त 61

सूक्त १९ – शर्म सूक्त 65

सूक्त २० – सुरक्षा सूक्त 70
सूक्त २१ – छन्दांसि सूक्त 72
सूक्त २२- ब्रह्मा सूक्त..... 73
सूक्त २३ – अथर्वाण सूक्त..... 78
सूक्त २४ – राष्ट्रसूक्त 84
सूक्त २५- अश्व सूक्त 88
सूक्त २६ – हिरण्यधारण सूक्त 89
सूक्त २७ – सुरक्षा सूक्त..... 91
सूक्त २८ – दर्भमणि सूक्त..... 97
सूक्त २९- दर्भमणि सूक्त 101
सूक्त ३० – दर्भमणि सूक्त 105
सूक्त ३१ – औदुम्बरमणि सूक्त 107
सूक्त ३२ – दर्भ सूक्त..... 113
सूक्त ३३ -दर्भ सूक्त 117
सूक्त ३४ – जङ्गिड़मणि सूक्त 120
सूक्त ३५ – जङ्गिड़ सूक्त..... 124
सूक्त ३६ – शतवारमणि सूक्त 127
सूक्त ३७ – बलप्राप्ति सूक्त 130
सूक्त ३८ – यक्ष्मनाशन सूक्त..... 132
सूक्त ३९ – कुष्ठनाशन सूक्त 134

सूक्त ४० – मेधा सूक्त 139
सूक्त ४१ – राष्ट्रबल सूक्त 141
सूक्त ४२ – ब्रह्मयज्ञ सूक्त 142
सूक्त ४३ – ब्रह्मा सूक्त 144
सूक्त ४४ – भैषज्य सूक्त 148
सूक्त ४५ – आञ्जन सूक्त 152
सूक्त ४६ – अस्तृतमणि सूक्त 157
सूक्त ४७ – रात्रि सूक्त 161
सूक्त ४८- रात्रि सूक्त 165
सूक्त ४९ – रात्रि सूक्त 168
सूक्त ५०- रात्रि सूक्त 173
सूक्त ५१ – आत्मा सूक्त 176
सूक्त ५२ – काम सूक्त 177
सूक्त ५३ – काल सूक्त 180
सूक्त ५४ – काल सूक्त 185
सूक्त ५५ – रायस्पोष प्राप्ति सूक्त 187
सूक्त ५६ – स्वप्ननाशन सूक्त 190
सूक्त ५७ – स्वप्ननाशन सूक्त 193
सूक्त ५८ – यज्ञ सूक्त 196
सूक्त ५९ – यज्ञ सूक्त 199

सूक्त ६० – अङ्ग सूक्त 201
सूक्त ६१ – पूर्ण आयु सूक्त 202
सूक्त ६२ – सर्वप्रिय सूक्त 203
सूक्त ६३- आयुवर्धन सूक्त 204
सूक्त ६४- दीर्घायु सूक्त 205
सूक्त ६५- सूक्त 207
सूक्त ६६ – असुरक्षयणम् सूक्त 208
सूक्त ६७ – दीर्घायु सूक्त 209
सूक्त ६८ – वेदोक्तकर्म सूक्त 211
सूक्त ६९- आपः सूक्त 212
सूक्त ७० – पूर्णायु सूक्त 214
सूक्त ७१-वेदमाता सूक्त 215
सूक्त ७२ – परमात्मा सूक्त 216

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त १ – यज्ञ सूक्त

देवों के उद्देश्य से यज्ञ में आहुति तथा आहुतियों से यज्ञ की रक्षा की कामना

संसं स्रवन्तु नद्यः सं वाताः सं पतत्रिणः ।
यज्ञमिमं वर्धयता गिरः संस्राव्येण हविषा जुहोमि ॥१९,१.१॥

नदियाँ सम्यक् रूप से प्रवहमान रहें । वायुदेव अनुकूल होकर प्रवाहित रहें । पक्षी भी स्वाभाविक रूप से उड़ते रहें । यज्ञों को हमारी स्तुतियाँ संवर्धित करें । सुख- सौभाग्य का संचार करने वाली आहुतियों से हम यजन करते हैं ॥ १९,१.१॥

इमं होमा यज्ञमवतेमं संस्रावणा उत यज्ञमिमं वर्धयता गिरः संस्राव्येण हविषा जुहोमि ॥१९,१.२॥

हे होमे गये पदार्थों ! आप इस यज्ञ की सुरक्षा करें । हे सुखदायक प्रवाहो ! आप भी इस यज्ञ की रक्षा करें। हमारी स्तुतियाँ यज्ञ को संवर्धित करें। सुख- सौभाग्य को संचारित करने वाली आहुतियोंसे हम यजन करते हैं ॥ १९,१.२॥

रूपंरूपं वयोवयः संरभ्यैनं परि ष्वजे ।
यज्ञमिमं चतस्रः प्रदिशो वर्धयन्तु संस्राव्येण हविषा जुहोमि ॥१९,१.३॥

हम (याजक) विविध रूपों और विविध बलों से युक्त इस (यजमान अथवा यज्ञों की सुरक्षा करते हैं । चारों दिशाएँ इस यज्ञ को संवर्द्धित करें । हम सुख- संचार करने वाली आहुतियों से वजन करते हैं ॥ १९,१.३॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त २ – आपः सूक्त

कल्याणकारी जलों का वर्णन तथा जलों की वंदना

शं त आपो हैमवतीः शमु ते सन्तूत्स्याः ।
शं ते सनिष्यदा आपः शमु ते सन्तु वर्ष्याः ॥१९,२.१॥

(हे साधको !) हिम से उत्पन्न जल- प्रवाह, स्रोत (झरने) से प्रवाहित होने वाले, अनवरत तीव्रवेग से बहने वाले तथा वर्षा द्वारा नदियों में आये जल- प्रवाह , ये सभी आपके लिए सुखदायक एवं कल्याणकारी हों ॥ १९,२.१॥

शं त आपो धन्वन्याः शं ते सन्त्वनूप्याः ।
शं ते खनित्रिमा आपः शं याः कुम्भेभिराभृताः ॥१९,२.२॥

हे यजमान ! मरुस्थल के जल, जल सम्पन्न भू-भाग में होने वाले जल, खोदकर प्राप्त किये गए (कुएँ, बावड़ी आदि) जल तथा घड़ों में भरकर लाये गए जल, ये सभी प्रकार के जल आपके लिए कल्याणप्रद हों ॥ १९,२.२॥

अनभ्रयः खनमाना विप्रा गम्भीरे अपसः ।
भिषग्भ्यो भिषक्तरा आपो अछा वदामसि ॥१९,२.३॥

कुदाल आदि खनन उपकरणों के न रहते हुए भी जो दोनों ओर के तटों को गिराने में सक्षम हैं। जो स्वयं का जीवन-व्यापार चलाने वाले मनुष्यों की बौद्धिक सामर्थ्य को बढ़ाते हैं तथा जो अतिगहन स्थलों में रहते हैं, ऐसे वैद्यों (ओषधि विशेषज्ञों) से भी अधिक हितकारी जल की हम स्तुति करते हैं ॥ १९,२.३॥

अपामह दिव्यानामपां स्रोतस्यानाम् ।
अपामह प्रणेजनेऽश्वा भवथ वाजिनः ॥१९,२.४॥

हे ऋत्विजो ! वर्षा द्वारा आकाश मार्ग से प्राप्त होने वाले तथा स्रोतों से प्राप्त होने वाले जल के सदुपयोग के लिए अश्व की भाँति शीघ्रता करें ॥ १९,२.४॥

ता अपः शिवा अपोऽयक्ष्मंकरणीरपः ।
यथैव तृप्यते मयस्तास्त आ दत्त भेसजीः ॥१९,२.५॥

हे ऋत्विज्ञो ! आप मंगलकारी, हानिकारक रोगों के शमनकर्ता, ओषधिरूप जल को लेकर शीघ्र आएँ, जिससे सुखों की वृद्धि हो ॥ १९,२.५॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ३ – जातवेदा सूक्त

अग्नि देव की स्तुति अग्नि हर वस्त में विद्यमान है तथाअ अग्नि की महिमा

दिवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षाद्वनस्पतिभ्यो अध्योषधीभ्यः ।
यत्रयत्र विभृतो जातवेदास्तत स्तुतो जुषमाणो न एहि
॥१९,३.१॥

हे सर्वज्ञ अग्निदेव ! आप पृथ्वी, द्युलोक, अन्तरिक्षलोक, वनस्पतियों और ओषधियों में जहाँ कहीं भी विशेष रूप से विद्यमान हों, प्रसन्नतापूर्वक हमारे अनुकूल होकर पधारें ॥१९,३. १॥

यस्ते अप्सु महिमा यो वनेषु य ओषधीषु पशुष्वप्स्वन्तः ।
अग्ने सर्वास्तन्वः सं रभस्व ताभिर्न एहि द्रविणोदा अजस्रः
॥१९,३.२॥

हे अग्निदेव ! आपकी महत्ता जो जल में (बड़वाग्निरूप में), जंगल में (दावानलरूप में), ओषधियों में (फल पाकरूप में), पशु आदि सभी प्राणियों में (वैश्वानररूप में) तथा

अन्तरिक्षीय मेघों में विद्युत् रूप में) विद्यमान है।अपने उन सभी स्वरूपों के साथ आप पधारें और हमारे लिए अक्षय धन प्रदान करने वाले सिद्ध हों॥१९,३.२॥

यस्ते देवेषु महिमा स्वर्गो या ते तनुः पितृष्वाविवेश ।
पुष्टिर्या ते मनुष्येषु पप्रथेऽग्ने तया रयिमस्मासु धेहि ॥१९,३.३॥

हे अग्निदेव ! देवों में स्वाहाकार हव्य को पहुँचाने वाले, पितरों में स्वधाकार कव्य को पहुँचाने वाले तथा मनुष्यों में आहार को पचाने वाले के रूप में आपकी महिमा है। इन सभी रूपों में आप अनुकूल होकर पधारें तथा हमें धन प्रदान करें ॥१९,३.३॥

श्रुत्कर्णाय कवये वेद्याय वचोभिर्वकैरुप यामि रातिम् ।
यतो भयमभयं तन् नो अस्त्वव देवानां यज हेडो अग्ने ॥१९,३.४॥

स्तुतियों को सुनने में समर्थ, अतीन्द्रिय क्षमतायुक्त, सबके जानने योग्य, अभीष्ट फलप्रदाता अग्निदेव की हम वन्दना करते हैं। है अग्निदेव ! जिनसे हमें भय है, उनसे निर्भयता की प्राप्ति हो । आप हमारे प्रति देवों के क्रोध को शान्त करें ॥१९,३.४॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ४ – आकूति सूक्त

अग्नि की स्तुति, देवी सरस्वती की कामना तथा बृहस्पति का आह्वान

यामाहुतिं प्रथमामथर्वा या जाता या हव्यमकृणोज्जातवेदाः ।
तां त एतां प्रथमो जोहवीमि ताभिष्टुप्तो वहतु हव्यमग्निरग्नये स्वाह ॥१९,४.१॥

सर्वप्रथम अथर्वा स्वष ने जो आहुति प्रदान की थी, जिस आहुति को जातवेदा अग्निदेव ने सबसे पहले देवों तक पहुँचाया था । हे अग्निदेव !वहीं आहुति सभी यजमानों से पूर्व मैं आपको प्रदान करता हूँ । प्रसन्नतापूर्वकआप इसे वहन करें, यह आहुति आपको समर्पित है ॥१९,४. १॥

आकूतिं देवीं सुभगां पुरो दधे चित्तस्य माता सुहवा नो अस्तु ।
यामाशामेमि केवली सा मे अस्तु विदेयमेनां मनसि प्रविष्टाम् ॥१९,४.२॥

सौभाग्य प्रदायिनी (सरस्वती देवी को हम पहले स्थापित करते हैं। मातृवत् चित्तवृत्तियों को नियन्त्रित करने वाली ये देवी हमारे आवाहन पर अनुकूल हों । हमारी इच्छाएँ पूर्ण हों । मन में स्थित संकल्प पूर्ण हों ॥१९,४.२॥

आकूत्या नो बृहस्पत आकूत्या न उपा गहि ।
अथो भगस्य नो धेह्यथो नः सुहवो भव ॥१९,४.३॥

हे बृहस्पतिदेव ! प्रबल इच्छाशक्ति के रूप में आप हमें प्राप्त हों । आप हमें ज्ञानरूप ऐश्वर्य प्रदान करें तथा हमारे लिए सुगम रीति से आवाहन योग्य हों ॥१९,४.३॥

बृहस्पतिर्म आकूतिमाङ्गिरसः प्रति जानातु वाचमेताम् ।
यस्य देवा देवताः संबभूवुः स सुप्रणीताः कामो अन्वेत्वस्मान् ॥१९,४.४॥

आंगिरस कुल में उत्पन्न बृहस्पतिदेव हमारे निमित्त वाणी की अधिष्ठात्री शक्ति की स्तुति करें। देवशक्तियाँ जिनके नियंत्रण में रहती हैं, जो सभी के संगठक हैं; वे अभीष्ट फलों के प्रदाता बृहस्पतिदेव हमारे अनुकूल हों ॥१९,४.४॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ५ – जगद् – राजा सूक्त

देवताओं के स्वामी इंद्र की स्तुति

इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधि क्षमि विषुरूपं यदस्ति ।
ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद्राध उपस्तुतश्चिदर्वाक्॥१९,५.१॥

इन्द्रदेव समस्त स्थावर और जंगम जगत् के एकमात्र सर्वप्रथम राजा (शासक) हैं । हविप्रदाता को अनेक प्रकार का वैभव प्रदान करने वाले, वे हमारी स्तुतियों से प्रसन्न होकर हमें धन प्रदान करें ॥१९,५.१॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ६ – जगद्बीजपुरुष सूक्त

नारायण नाम के पुरुष की स्तुति, यज्ञ पुरुष की कल्पना, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की उत्पत्ति, चंद्रमा और सूर्य की उत्पत्ति, अंतरिक्षलोक, स्वर्गलोक, भूमि और दिशाओं की उत्पत्ति, विराट की उत्पत्ति, घोड़ों आदि की उत्पत्ति तथा अश्वमेध यज्ञ का विषय

सहस्रबाहुः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१९,६.१॥

जो सहस्रों भुजाओं वाले, सहस्रों नेत्रों वाले और सहस्रों चरण वाले विराट् पुरुष हैं, वे सम्पूर्ण भूमि को आवृत करके भी दस अंगुल शेष रहते हैं ॥१९,६.१॥

त्रिभिः पद्भिर्द्यामरोहत्पादस्येहाभवत्पुनः ।
तथा व्यक्रामद्विष्वङ्शनानशने अनु ॥१९,६.२॥

चार भागों वाले विराट् पुरुष के एक भाग में यह सारा संसार (जड़ और चेतन) विविध रूपों में समाहित है। इसके तीन भाग अनन्त अन्तरिक्ष में समाए हुए हैं ॥१९,६.२॥

तावन्तो अस्य महिमानस्ततो ज्यायांश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥१९,६.३॥

विराट् पुरुष की महिमा अति विस्तृत है । इस श्रेष्ठ पुरुष के एक चरण में सभी प्राणी समाए हैं। तीन भाग अनन्त अन्तरिक्ष में स्थित हैं ॥१९,६.३॥

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येश्वरो यदन्येनाभवत्सह ॥१९,६.४॥

जो सृष्टि बन चुकी, जो बनने वाली है, यह सब विराट् पुरुष ही है । इस अमर जीव- जगत् के भी वहीं स्वामी हैं । जो अन्न द्वारा वृद्धि प्राप्त करते हैं, उनके भी वही स्वामी हैं ॥१९,६.४॥

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्य किं बाहू किमूरू पादा उच्यते ॥१९,६.५॥

संकल्प द्वारा प्रकट हुए जिस विराट् पुरुष का ज्ञानीजन विविध प्रकार से वर्णन करते हैं। वे उसकी कितने प्रकार से कल्पना करते हैं ? उसका मुख क्या है ? भुजाएँ, जंघाएँ

और पाँव कौन से हैं ? शरीर संरचना में वह पुरुष किस प्रकार पूर्ण बना? ॥१९,६.५॥

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्योऽभवत्।
मध्यं तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥१९,६.६॥

विराट् पुरुष के मुख (से) ज्ञानीजन ब्राह्मण (उत्पन्न हुए। क्षत्रिय उसके बाहुओं से (समुद्भूत हुए । वैश्य उसके मध्य भाग एवं सेवाधर्मी शूद्र उसके पैर (से प्रकट हुए ॥१९,६.६॥

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ॥१९,६.७॥

विराट् पुरुष परमात्मा के मन से चन्द्रमा, नेत्रों से सूर्य, मुख से इन्द्र और अग्नि तथा प्राण से वायु का प्रकटीकरण हुआ ॥१९,६.७॥

नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकामकल्पयन् ॥१९,६.८॥

विराट् पुरुष की नाभि से अन्तरिक्ष, सिर से द्युलोक, पाँवों से भूमि तथा कानों से दिशाएँ प्रकट हुईं। इसी प्रकार

(उसके द्वारा अनेकानेक) लोकों को कल्पित किया (रचा) गया ॥१९,६.८॥

विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥१९,६.९॥

उस विराट् पुरुष से यह ब्रह्माण्ड उत्पन्न हुआ। उसी विराट् से समष्टि जीव उत्पन्न हुए। वही देहधारी रूप में सबसे श्रेष्ठ हुआ, जिसने सबसे पहले पृथ्वी को, तत्पश्चात् शरीर धारियों को उत्पन्न किया ॥१९,६.९॥

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥१९,६.१०॥

जब देवों ने विराट् पुरुष को हवि मानकर यज्ञ का शुभारम्भ किया, तब घृत वसन्त ऋतु, ईंधन (समिधा) ग्रीष्म ऋतु एवं हवि शरद् ऋतु हुई ॥१९,६.१०॥

तं यज्ञं प्रावृषा प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रशः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या वसवश्च ये ॥१९,६.११॥

देवताओं एवं प्राण तथा इन्द्रियों को वश में करने वाले साधकों ने सर्वप्रथम उत्पन्न होने वाले विराट् पुरुष का पवित्र

जल से अभिषेक किया। उसी परम पुरुष से यज्ञ का प्रादुर्भाव हुआ ॥१९,६.११॥

तस्मादश्वा अजायन्त ये च के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥१९,६.१२॥

उसी विराट् यज्ञ पुरुष से दोनों तरफ दाँतवाले घोड़े और उसी विराट् पुरुष से गौएँ, भेड़-बकरी आदि पशु उत्पन्न हुए ॥१९,६.१२॥

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दो ह जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥१९,६.१३॥

उस विराट् यज्ञ पुरुष से ऋग्वेद एवं सामवेद का प्रकटीकरण हुआ। उसी से यजुर्वेद एवं अथर्ववेद का प्रादुर्भाव हुआ ॥१९,६.१३॥

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम् ।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यान् आरण्या ग्राम्याश्च ये ॥१९,६.१४॥

उस सर्वश्रेष्ठ विराट् प्रकृति यज्ञ से दधियुक्त घृत प्राप्त हुआ। उसी से वायु में रहने वाले (उड़ने वाले), वनों और ग्रामों में रहने वाले पशु उत्पन्न हुए ॥१९,६.१४॥

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥१९,६.१५॥

देवों ने जिस(सृष्टि विस्तारक) यज्ञ का विस्तार किया, उसकी सात परिधियाँ हुईं तथा त्रिसप्त(तीन प्रकार की सात-सात) समिधाएँ प्रयुक्त की गईं । उस यज्ञ में विराट् पुरुष को ही पशु (हव्य) के रूप में बाँधा (नियुक्त यो अनुबन्धित किया गया ॥१९,६.१५॥

मूर्ध्नो देवस्य बृहतो अंशवः सप्त सप्ततीः ।
राज्ञः सोमस्याजायन्त जातस्य पुरुषादधि ॥१९,६.१६॥

यज्ञ पुरुष से निष्पन्न हुए राजा सोम के मस्तक से सात रंग वाली सत्तर बार (चार सौ नब्बे) महान् दीप्ति, युक्त किरणें प्रकट हुईं ॥१९,६.१६॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ७-नक्षत्र सूक्त

नक्षत्रों की स्तुति तथा विभिन्न नक्षत्रों के अनुकूल होने की कामना

चित्राणि साकं दिवि रोचनानि सरीसृपाणि भुवने जवानि ।
तुर्मिशं सुमतिमिछमानो अहानि गीर्भिः सपर्यामि नाकम् ॥१९,७.१॥

हम अनिष्ट निवारक श्रेष्ठ बुद्धि की कामना करते हुए, द्युलोक में विचित्र वर्षों से एक साथ चमकते हुए, नष्ट न होने वाले, तीव्र वेग से सतत गतिशील नक्षत्रों एवं स्वर्गलोक की अपनी वाणी से स्तुति करते हैं ॥१९,७.१॥

सुहवमग्ने कृत्तिका रोहिणी चास्तु भद्रं मृगशिरः शमार्द्रा ।
पुनर्वसू सूनृता चारु पुष्यो भानुराश्लेषा अयनं मघा मे ॥१९,७.२॥

हे अग्निदेव ! कृत्तिका और रोहिणी नक्षत्र हमारे लिए सुखपूर्वक आवाहन करने योग्य हों । मृगशिरा नक्षत्र कल्याणप्रद हो ।आर्द्र शान्तिकारक हो । पुनर्वसु श्रेष्ठ

वक्तृत्व कला (वाक्शक्ति देने वाला एवं उत्तम फलदायी हो । आश्लेषा प्रकाश देने वाला तथा मघा नक्षत्र हमारे लिए प्रगतिशील मार्ग प्रशस्त करने वाला हो ॥१९,७.२॥

पुण्यं पूर्वा फल्गुन्यौ चात्र हस्तश्चित्रा शिवा स्वाति सुखो मे अस्तु ।
राधे विशाखे सुहवानुराधा ज्येष्ठा सुनक्षत्रमरिष्ट मूलम् ॥१९,७.३॥

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र पुण्यदायी, हस्त और चित्रा नक्षत्र कल्याणकारी, स्वाति नक्षत्र सुखदायी, राधा-विशाखा नक्षत्र आवाहन योग्य तथा अनुराधा, ज्येष्ठा एवं मूल नक्षत्र मंगलप्रद हों ॥१९,७.३॥

अन्नं पूर्वा रासतां मे अषाधा ऊर्जं देव्युत्तरा आ वहन्तु ।
अभिजिन् मे रासतां पुण्यमेव श्रवणः श्रविष्ठाः कुर्वतां सुपुष्टिम् ॥१९,७.४॥

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हमारे लिए अन्नप्रद और उत्तराषाढ़ा बलदायक अन्नरस प्रदान करे। अभिजित् हमारे लिए पुण्यदायी, श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्र हमारे लिए उत्तम रीति से पालन करने वाले हों ॥१९,७.४॥

आ मे महच्छतभिषग्वरीय आ मे द्वया प्रोष्ठपदा सुशर्म ।
आ रेवती चाश्वयुजौ भगं म आ मे रयिं भरण्य आ वहन्तु
॥१९,७.५॥

शतभिषक् नक्षत्र महान् वैभव प्रदाता तथा दोनों श्रेष्ठपदा नक्षत्र हमें श्रेष्ठ सुख प्रदान करने वाले हों । रेवती और अश्वयुग (अश्विनी) नक्षत्र ऐश्वर्यदाता तथा भरणी नक्षत्र भी हमें वैभव प्रदान करने वाले हों ॥१९,७.५॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ८- नक्षत्र सूक्त

नक्षत्रों की स्तुति तथा अटठाईस नक्षत्र नक्षत्रों के देवताओं का अभिनंदन, इंद्र की स्तुति,

यानि नक्षत्राणि दिव्यन्तरिक्षे अप्सु भूमौ यानि नगेषु दिक्षु ।
प्रकल्पयंश्चन्द्रमा यान्येति सर्वाणि ममैतानि शिवानि सन्तु
॥१९,८.१॥

जो नक्षत्र द्युलोक में, अन्तरिक्ष लोक में, जल में, पृथ्वी में, पर्वतश्रेणियों तथा दिशाओं में दिखाई देते हैं। चन्द्रमा जिनको प्रदीप्त करते हुए प्रादुर्भूत होते हैं, वे सभी नक्षत्र में सुख प्रदान करने वाले हों ॥१९,८.१॥

अष्टाविंशानि शिवानि शग्मानि सह योगं भजन्तु मे ।
योगं प्र पद्ये क्षेमं च क्षेमं प्र पद्ये योगं च नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु
॥१९,८.२॥

कृत्तिकादि कल्याणप्रद जो २८ नक्षत्र हैं, वे हमें अभीष्ट प्रदान करें । नक्षत्रों का सहयोग हमारे लिए लाभप्रद हो ।

हम प्राप्त वस्तु के संरक्षण में समर्थ हों । हम अहोरात्र के प्रति वन्दना करते रहें, हमें योग-क्षेम प्राप्त हो ॥१९,८.२॥

स्वस्तितं मे सुप्रातः सुसायं सुदिवं सुमृगं सुशकुनं मे अस्तु ।
सुहवमग्ने स्वस्त्यमर्त्यं गत्वा पुनरायाभिनन्दन् ॥१९,८.३॥

प्रात: सायं हमारे लिए सुखप्रद हों । हम श्रेष्ठ प्रयोजन हेतु अनुकूल नक्षत्र में गमन करें, जिसमें हरिण आदि पशु-पक्षी शुभ संकेत वाले हों । हे अमर्त्य अग्ने ! आप हमारी प्रार्थना से प्रसन्न होकर यहाँ पधारें ॥१९,८.३॥

अनुहवं परिहवं परिवादं परिक्षवम् ।
सर्वैर्मे रिक्तकुम्भान् परा तान्त्सवितः सुव ॥१९,८.४॥

हे सवितादेव स्पर्धा, संघर्ष, निन्दा, घृणा आदि दुर्गुणों को सारहीन खाली घड़े के समान हमसे दूर कर दें॥१९,८.४॥

अपपापं परिक्षवं पुण्यं भक्षीमहि क्षवम् ।
शिवा ते पाप नासिकां पुण्यगश्चाभि मेहताम् ॥१९,८.५॥

पापयुक्त त्याज्य अन्न को हमसे दूर करें तथा पुण्य से प्राप्त अन्न का हम सेवन करें। हे पाप पुरुष ! तेरी निर्लज्ज नाक

पर श्रेष्ठ मार्गगामी स्त्री-पुरुष अपमान सूचक शब्द कहें ॥१९,८.५॥

इमा या ब्रह्मणस्पते विषुचीर्वात ईरते ।
सध्रीचीरिन्द्र ताः कृत्वा मह्यं शिवतमास्कृधि ॥१९,८.६॥

ब्रह्मणस्पति इन्द्रदेव ! पूर्व आदि जिन दिशाओं में आँधी-तूफान के रूप में वायुदेव चलते हैं, उन्हें आप उपयुक्त मार्ग से चलने वाला बनाकर हमारे लिए मंगलमय बनाएँ ॥१९,८.६॥

स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरत्राभ्यामस्तु ॥१९,८.७॥

हमारा हर तरह से कल्याण हो, हमें निर्भयता की प्राप्ति हो । अहोरात्ररूप देव को हमारा नमस्कार है ॥१९,८.७॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ९ – शान्ति सूक्त

देवों की स्तुति, ज्ञानेंद्रियों का वर्णन तथा शांति की कामना

शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी शान्तमिदमुर्वन्तरिक्षम् ।
शान्ता उदन्वतीरापः शान्ता नः सन्त्वोषधीः ॥१९,९.१॥

द्यौलोक, पृथ्वी, विस्तृत अन्तरिक्षलोक, समुद्री जल और ओषधियाँ ये सभी उत्पन्न होने वाले अनिष्टों का निवारण करके हमारे लिए सुख- शान्ति प्रदान करें ॥१९,९.१॥

शान्तानि पूर्वरूपाणि शान्तं नो अस्तु कृताकृतम् ।
शान्तं भूतं च भव्यं च सर्वमेव शमस्तु नः ॥१९,९.२॥

पूर्वजन्म में किये गये कर्म हमारे लिए शान्ति प्रदायक हों। हमारे द्वारा सम्पन्न किये गये और न किये गये कार्य भी शान्ति प्रदान करें। भूत और भविष्यत् दोनों हमारे लिए शान्ति प्रदायक सिद्ध हों । सभी कर्म हमें शान्तिऔर सुख प्रदान करें ॥१९,९.२॥

इयं या परमेष्ठिनी वाग्देवी ब्रह्मसंशिता ।
ययैव ससृजे घोरं तयैव शान्तिरस्तु नः ॥१९,९.३॥

परमपद पर विराजमान, तेजस्वी ज्ञान से देदीप्यमान जो वाणी की देवी सरस्वतीं हैं, वे हमारे द्वारा दूसरों के प्रति बोले गये अपशब्दों के दोष से हमें मुक्त करें तथा हमारे लिए शान्ति प्रदान करने वाली सिद्ध हों ॥१९,९.३॥

इदं यत्परमेष्ठिनं मनो वां ब्रह्मसंशितम् ।
येनैव ससृजे घोरं तेनैव शान्तिरस्तु नः ॥१९,९.४॥

यह जो परम स्थान में विराजमान ज्ञान से देदीप्यमान इस जगत् को मूल कारण 'मन' हैं । यदि इसके द्वारा दुष्कर्म की उत्पत्ति हुई हो, तो यही हमारे द्वारा किये गये बुरे कर्मों के प्रभाव को शान्ति प्रदान करे ॥१९,९.४॥

इमानि यानि पञ्चेन्द्रियानि मनःषष्ठानि मे हृदि ब्रह्मणा संशितानि ।
यैरेव ससृजे घोरं तैरेव शान्तिरस्तु नः ॥१९,९.५॥

चेतना द्वारा संचालित मन के साथ जो पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हमारे हृदय में वास करती हैं, उनसे यदि अपराध कर्म बन पड़ा

हो, तो उनके द्वारा रचित उस दुष्कर्म की हमारे प्रति शान्ति हो ॥१९,९.५॥

शं नो मित्रः शं वरुणः शं विष्णुः शं प्रजापतिः ।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो भवत्वर्यमा ॥१९,९.६॥

दिन के अधिष्ठाता देवता सूर्य (मित्र), रात्रि के अभिमानी देव वरुण, पालनकर्ता विष्णुदेव, प्रजा के पालक प्रजापति, परम वैभवयुक्त इन्द्रदेव, बृहस्पति तथा अर्यमादेव, ये सभी देवता हमें शान्ति प्रदान करने वाले हों ॥१९,९.६॥

शं नो मित्रः शं वरुणः शं विवस्वां छमन्तकः ।
उत्पाताः पार्थिवान्तरिक्षाः शं नो दिविचरा ग्रहाः ॥१९,९.७॥

मित्र, वरुण, अन्धकारनाशक विवस्वान्, सभी प्राणियों के संहारकर्ता अन्तकदेव, हमें सुख प्रदान करने वाले सिद्ध हों । पृथ्वी और अन्तरिक्षलोक में होने वाले उत्पात और द्युलोक में विचरणशील मंगल आदि ग्रह हमारेदोष का निवारण करके हमारे लिए शान्तिप्रद सिद्ध हों ॥१९,९.७॥

शं नो भूमिर्वेप्यमाना शमुल्का निर्हतं च यत्।
शं गावो लोहितक्षीराः शं भूमिरव तीर्यतीः ॥१९,९.८॥

कम्पायमान पृथ्वी हमारे लिए शान्तिदायक हो । उल्कापात भी शान्तिप्रद हो । लोहित दूध देने वाली गौएँ भी हमारे लिए सुखदायी हों तथा कटी हुई पृथ्वी भी हमारे लिए कल्याणमयी हो ॥१९,९.८॥

नक्षत्रमुल्काभिहतं शमस्तु नः शं नोऽभिचाराः शमु सन्तु कृत्याः ।
शं नो निखाता वल्गाः शमुल्का देशोपसर्गाः शमु नो भवन्तु ॥१९,९.९॥

उल्काओं से फेंका गया नक्षत्र में शान्ति प्रदान करने वाला हो । अभिचार क्रियाएँ तथा कृत्या प्रयोग भी हमारे लिए शान्तिप्रद हों । भूमि में खोदकर किये गए प्रयोग भी हमारे लिए घातक न हों। उल्काएँ शान्त हों । देश में होने वाले सभी प्रकार के विघ्न भी शान्त हो जाएँ ॥९॥

शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा ।
शं नो मृत्युर्धूमकेतुः शं रुद्रास्तिग्मतेजसः ॥१९,९.१०॥

चन्द्र मण्डल के मंगल आदि ग्रह, राहु से ग्रस्त आदित्य ग्रह, मारक धूमकेतु के अनिष्ट और रुद्र के तीखें सन्तापक उत्पात ये सभी शान्त हों ॥१९,९.१०॥

शं रुद्राः शं वसवः शमादित्याः शमग्नयः ।
शं नो महर्षयो देवाः शं देवाः शं बृहस्पतिः ॥१९,९.११॥

एकादश रुद्रगण, आठ वसुगण, बारह आदित्य, सभीप्रकार की अग्नियाँ, इन्द्रादि देव शक्तियाँ, सप्तर्षि और बृहस्पतिदेव ये सभी शान्ति प्रदान करते हुए हमारे लिए कल्याणकारी सिद्ध हों ॥१९,९.११॥

ब्रह्म प्रजापतिर्धाता लोका वेदाः सप्तऋषयोऽग्नयः ।
तैर्मे कृतं स्वस्त्ययनमिन्द्रो मे शर्म यछतु ब्रह्मा मे शर्म यछतु ।
विश्वे मे देवाः शर्म यछन्तु सर्वे मे देवाः शर्म यछन्तु ॥१९,९.१२॥

परब्रह्म, धाता, प्रजापति, ब्रह्मा, सभी वेद, सात लोक, सात ऋषि और सभी अग्नियाँ – इन सबके द्वारा हमारे कल्याण का मार्ग प्रशस्त हुआ है । इन्द्र, ब्रह्मा, विश्वेदेवा और समस्त देव हमारे श्रेय के मार्ग को प्रशस्त करें ॥१९,९.१२॥

यानि कानि चिच्छान्तानि लोके सप्तऋषयो विदुः ।
सर्वाणि शं भवन्तु मे शं मे अस्त्वभयं मे अस्तु ॥१९,९.१३॥

अतीन्द्रिय द्रष्टा सप्तर्षिगण शान्तिप्रद जितनी भी विद्याओं के ज्ञाता हैं, वे सभी युक्तियाँ हमारे लिए कल्याणकारी हों । हमें सभी ओर से सुख-शान्ति एवं निर्भयता की प्राप्ति हो ॥१९,९.१३॥

पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिर्द्यौः शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे मे देवाः शान्तिः सर्वे मे देवाः शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिभिः ।
यदिह घोरं यदिह क्रूरं यदिह पापं तच्छान्तं तच्छिवं सर्वमेव शमस्तु नः ॥१९,९.१४॥

पृथ्वी, अन्तरिक्ष, द्युलोक, जल, ओषधियाँ, वनस्पतियाँ और समस्त देव हमारे लिए शान्तिप्रद हों । शान्ति से बढ़कर असीम शान्ति को हम प्राप्त करें। इन सभी प्रकार की शान्ति प्रक्रियाओं द्वारा हम घोर कर्म, क्रूर कर्मफल और पापपूर्ण फल को दूर हटाते हैं, वे शान्त होकर कल्याणप्रद हों । वे सभी हमारे लिए मंगलप्रद हों॥१९,९.१४॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त १० – शान्ति सूक्त

इंद्र और अग्नि की स्तुति, सभी देवों से सुख की याचना तथा सोम का विषय

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ
॥१९,१०.१॥

हवि ग्रहण करके इन्द्र और अग्निदेव तथा इन्द्र और वरुणदेव हम सभी का कल्याण करें । इन्द्र और पूषादेव मंगलकारी अन्न और ऐश्वर्य प्रदान करें । इन्द्र और सोमदेव सुसन्तति प्राप्ति के लिए तथा रोगों के शमनऔर भय दूर करने के लिए, हमारे लिए मंगलमय हों ॥१९,१०.१॥

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरंधिः शमु सन्तु रायः
।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु
॥१९,१०.२॥

भग देवता हमें शान्ति प्रदान करें। यह शान्ति मनुष्यों द्वारा प्रशंसित हो । बुद्धि एवं धन हमें शान्ति प्रदान करे । श्रेष्ठ एवं शिष्ट बोले गये वचन हमें शान्ति देने वाले हों । अर्यमादेव हमें शान्ति देने वाले हों ॥१९,१०.२॥

शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः ।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ॥१९,१०.३॥

धाता (आधार प्रदान करने वाले), धर्ता (धारण करने वाले), द्यावा-पृथिवी, पृथ्वी का अन्न, पर्वत तथा देवताओं की उपासना- ये सभी हम सबके लिए शान्तिदायक-कल्याणप्रद हों ॥१९,१०.३॥

शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम् ।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः ॥१९,१०.४॥

तेजस्वी अग्निदेव, मित्रावरुणदेव, सूर्यदेव, चन्द्रदेव, दोनों अश्विनीकुमार, सत्कर्मा एवं गमनशील वायुदेव हमें शान्ति प्रदान करें ॥१९,१०.४॥

शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु ।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः
॥१९,१०.५॥

द्यावा – पृथिवीं में प्रथम बार प्रार्थना में शान्ति प्रदान करें । श्रेष्ठ दर्शन के निमित्त अन्तरिक्ष हमें शान्ति प्रदान करे । वनस्पति एवं ओषधियाँ हमें शान्ति प्रदान करें । विजयशील लोकपाल भी हमें शान्ति प्रदान करें ॥१९,१०.५॥

शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः ।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु
॥१९,१०.६॥

इन्द्र देवता वसुगणों सहित हमें शान्ति प्रदान करें । आदित्यों सहित वरुणदेव, रुद्रगणों सहित जलदेव हमें शान्ति प्रदान करें । त्वष्टादेव, देवपत्नियों सहित हमें शान्ति दें । (सभी देवगण) हमारी विनय सुनें ॥१९,१०.६॥

शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः
।
शं नः स्वरूनां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शं वस्तु वेदिः
॥१९,१०.७॥

सोम एवं ग्रावा (सोम कूटने वाला पत्थर) हमें शान्ति दें । ब्रह्मा एवं यज्ञदेव हमें शान्ति प्रदान करें। यूपों का प्रमाण, ओषधियाँ, वेदिका आदि सभी में शान्ति प्रदान करें ॥१९,१०.७॥

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नो भवन्तु प्रदिशश्चतस्रः ।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ॥१९,१०.८॥

विशाल तेजधारी सूर्यदेव हमें शान्ति प्रदान करने के लिए उदित हों । चारों दिशाएँ हमें शान्ति दें, स्थिर पर्वत, जल एवं समुद्र हमें शान्ति प्रदान करें ॥१९,१०.८॥

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः ।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शं वस्तु वायुः ॥१९,१०.९॥

अदिति अपने व्रतों द्वारा हमें शान्ति प्रदान करें । उत्तम तेजस्वी मरुद्गण हमें शान्ति प्रदान करें। विष्णुदेव, पूषादेव, अन्तरिक्ष एवं वायुदेव हमें शान्ति प्रदान करें ॥१९,१०.९॥

शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः ।

शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभुः ॥१९,१०.१०॥

त्राण प्रदाता सवितादेव हमें शान्ति प्रदान करें । तेजस्वी उषाएँ हमें शान्ति प्रदान करें । पर्जन्य एवं क्षेत्रों के कल्याणकारी अधिपति हमारी प्रजा के लिए शान्ति प्रदायक-मंगलकारी हों ॥१९,१०.१०॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ११ – शान्ति सूक्त

सत्य पालक देवों और पितरों की स्तुति

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः ।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवतु पितरो हवेषु ॥१९,११.१॥

सत्य के अधिपति, अश्व एवं गौएँ हमें सुख – शान्ति प्रदान करें। श्रेष्ठ कर्म करने वाले एवं श्रेष्ठ भुजाओ वाले ऋभुगण में शान्ति प्रदान करें । हमारे पितरगण हमारी प्रार्थना सुनकर हमें शान्ति प्रदान करें ॥१९,११.१॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु ।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः ॥१९,११.२॥

विश्वदेव (समस्त देवगण) हमें शान्ति प्रदान करें । सद्बुद्धि देने वाली देवी सरस्वती हमें शान्ति प्रदान करें । यज्ञकर्ता,

दानदाता, द्युलोक, पृथ्वी और जल के देवगण हमें शान्ति प्रदान करें ॥१९,११.२॥

शं नो अज एकपादेवो अस्तु शमहिर्बुध्यः शं समुद्रः ।
शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृष्णिर्भवतु देवगोपा ॥१९,११.३॥

एक पाद अजदेव हमारा कल्याण करें । अहिर्बुध्य और समुद्रदेव हमें शान्ति प्रदान करें । अपांनपात् देव शान्ति दें । देवताओं से संरक्षित गौ (किरणे या प्रकृति हमें शान्ति प्रदान करें ॥१९,११.३॥

आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्तामिदं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः ।
सृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः ॥१९,११.४॥

नवरचित स्तोत्रों को आदित्यगण, वसुगण एवं रुद्रगण ग्रहण करें । द्युलोक, पृथ्वी एवं स्वर्ग में उत्पन्न देवगण और भी जो यजनीय देव आदि हैं, वे सब हमारी स्तुति स्वीकार करें ॥१९,११.४॥

ये देवानामृत्विजो यज्ञियासो मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।

ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥१९,११.५॥

यजनीय देवताओं के लिए भी जो पूज्य हैं एवं मनुष्य के लिए भी जो पूज्य हैं, ऐसे अमर, ऋतज्ञदेव आज प्रसन्न होकर हमें यशस्वी पुत्र दें तथा हमारा पालन एवं कल्याण करें ॥१९,११.५॥

तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम् । अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय ॥१९,११.६॥

हे मित्रावरुण और अग्निदेवो ! हमारे लिए सब कुछ शान्तिप्रद हो। आप हमारे दु:खों को दूर कर सुख का मार्ग प्रशस्त करें । हमें सांसारिक वैभव और प्रतिष्ठा प्राप्त हो। हम, सबके आश्रयभूत द्युलोक को नमन करते हैं ॥१९,११.६॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त १२ – सुवीर सूक्त

उषा की प्रशंसा

उषा अप स्वसुस्तमः सं वर्तयति वर्तनिं सुजातता ।
अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः
॥१९,१२.१॥

रात्रि के अन्धकार को दूर कर भली प्रकार उत्पन्न होने वाली उषा सबको प्रगति का मार्ग दिखाती है । इससे हम देवत्व के विकास के लिए आवश्यक शक्ति प्राप्त करें । हम बलवान् सन्तानों से युक्त होकर सौ वर्ष (पूर्ण आयु तक जीवित रहें ॥१९,१२.१॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त १३ – एकवीर सूक्त

इंद्र की प्रशंसा तथा इंद्र की सहायता से शत्रु विजय की कामना

इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ वृषाणौ चित्रा इमा वृषभौ पारयिष्णू ।
तौ योक्षे प्रथमो योग आगते याभ्यां जितमसुराणां स्वर्यत्॥१९,१३.१॥

इन्द्र के दृढ़, अभीष्ट (शक्ति या सुखों के) वर्षक, अद्भुत, बलशाली, (संकटों से) पार ले जाने वाले बाहुओं को हम अभिषिक्त करते हैं, समय आने पर जिनसे असुरों का स्वच जीता जाता है ॥१९,१३.१॥

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ।
संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतं सेना अजयत्साकमिन्द्रः ॥१९,१३.२॥

स्फूर्तिवान्, विकराल, वृषभ की तरह शत्रु को भयभीत करने वाले, दुष्टनाशक, शत्रुओं को रुलाने वाले, द्वेष करने

वालों को क्षुब्ध करने वाले, आलस्यहीन वीर इन्द्रदेव सैकड़ों शत्रुओं को पराजित करके विजयी होते हैं ॥१९,१३.२॥

संक्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुनायोध्येन दुश्च्यवनेन धृष्णुना ।
तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा
॥१९,१३.३॥

हे योद्धाओ ! शत्रुओं को रुलाने वाले, आलस्यरहित, विजयी, निपुण, अविचल तथा बाणधारी इन्द्रदेव की सहायता से युद्ध जीतकर शत्रुओं को भगाओ ॥१९,१३.३॥

स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी संस्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन ।
संसृष्टजित्सोमपा बाहुशर्ध्युग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता
॥१९,१३.४॥

वे इन्द्रदेव बाण और तलवारधारी योद्धाओं के सहयोग से शत्रुओं को वश में करते हैं। वे युद्ध में अतिकुशल, विजेता, सोम पीने वाले, बाहु-बल सम्पन्न, धनुर्धारी तथा शत्रु – संहारक हैं ॥१९,१३.४॥

बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः ।
अभिवीरो अभिषत्वा सहोजिज्जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोविदम्
॥१९,१३.५॥

है इन्द्रदेव ! आप सबके बलों के ज्ञाता, उत्तम वीर, शत्रु के आक्रमण को सहने वाले, बलवान्, शत्रु-विजेता, उग्र, महावीर, शक्तिशाली होकर भी जन्म लेने वाले, गौ-पालक तथा विजय रथ पर प्रतिष्ठित हों ॥१९,१३.५॥

इमं वीरमनु हर्षध्वमुग्रमिन्द्रं सखायो अनु सं रभध्वम् ।
ग्रामजितं गोजितं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा
॥१९,१३.६॥

हे समान कर्म और बुद्धिशाली वीरो ! आप इन उग्रवीर इन्द्र को प्रसन्न करके उनका अनुगमन करें । वे शत्रुओं के गाँवों, गौओं और युद्ध में भूमि के विजेता हैं । वे वज्रबाहु और वेगपूर्वक शत्रुओं का मर्दन करने वाले हैं ॥१९,१३.६॥

अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदाय उग्रः शतमन्युरिन्द्रः ।
दुश्च्यवनः पृतनाषाडयोध्योऽस्माकं सेना अवतु प्र युत्सु
॥१९,१३.७॥

बल से शत्रु के किलों को भेदने वाले पराक्रमी, शत्रुओं पर दया न करने वाले वीर, अविचल, शत्रु-विजेता, अद्वितीय योद्धा इन्द्रदेव हमारी सेना को संरक्षण प्रदान करें ॥१९,१३.७॥

बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहामित्रामपबाधमानः ।
प्रभञ्जं छत्रून् प्रमृणन्न् अमित्रान् अस्माकमेध्यविता तनूनाम्
॥१९,१३.८॥

हे सर्वपालक इन्द्रदेव ! राक्षसों को मारते हुए, शत्रुओं को त्रास देकर उन्हें कुचलते हुए और अमित्रों का ध्वंस करते हुए यहाँ आएँ । हमारे शरीरों की रक्षा करते हुए आप आगे बढ़े ॥१९,१३.८॥

इन्द्र एषां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः ।
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्तु मध्ये
॥१९,१३.९॥

हमारी सेनाओं के नेतृत्वकर्ता इन्द्रदेव हों ! बृहस्पतिदेव सबसे आगे- आगे चलें । दक्षिणा यज्ञ संचालक सोम भी आगे चले । शत्रु- नाशक मरुद्गण विजयी देवों की सेना के बीच में रहें ॥१९,१३.९॥

इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुतां शर्ध उग्रम् ।
महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात्॥१९,१३.१०॥

बलशाली इन्द्रदेव, राजा वरुण, आदित्यों और मरुतों का तीक्ष्ण बल हमारा सहायक हो । शत्रु- नगरों के विध्वंसक, विशालमना और विजयी देवों का जयघोष गुञ्जायमान हो ॥१९,१३.१०॥

अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु । अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्मान् देवासोऽवता हवेषु ॥१९,१३.११॥

(युद्ध में) ध्वज एकत्रित होने पर इन्द्रदेव हमें सुरक्षा प्रदान करें। हमारे बाण शत्रुओं पर विजय पाने वाले हों । हमारे वीर विजयी हों । हे देवो ! आप युद्ध में हमें सुरक्षा प्रदान करें ॥१९,१३.११॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त १४ – अभय सूक्त

द्यावा और पृथ्वी की स्तुति

इदमुच्छ्रेयोऽवसानमागां शिवे मे द्यावापृथिवी अभूताम् ।
असपत्नाः प्रदिशो मे भवन्तु न वै त्वा द्विष्मो अभयं नो अस्तु
॥१९,१४.१॥

श्रेय के लक्ष्य तक हम पहुँच चुके हैं। द्युलोक और पृथ्वी हमारे लिए कल्याणकारी हों । समस्त दिशाएँ हमारे लिए शत्रुओं के उपद्रवों से रहित हों । हे शत्रुओ ! हम तुम्हारे प्रति द्वेष नहीं रखते, अत: हमें निर्भय करो ॥१९,१४.१॥

सूक्त १५ – अभय सूक्त

अभय करने वाले इंद्र आदि की प्रशंसा तथा कर्मों की सिद्धि हेतु इंद्र से प्रार्थना

यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि ।

मघवं छग्धि तव त्वं न ऊतिभिर्वि द्विषो वि मृधो जहि ॥१९,१५.१॥

हे इन्द्रदेव ! हम भयभीत हैं, हमें भयरहित करें । हे धनवान् देव ! आप सर्वसामर्थ्यवान हैं, अत: द्वेष वृत्तिवालों को जीतकर हमारा संरक्षण करें ॥१९,१५.१॥

इन्द्रं वयमनूराधं हवामहेऽनु राध्यास्म द्विपदा चतुष्पदा ।
मा नः सेना अररुषीरुप गुर्विषूचिरिन्द्र द्रुहो वि नाशय ॥१९,१५.२॥

आराधना योग्य इन्द्रदेव को हम आवाहित करते हैं। हम द्विपाद मनुष्यों और चतुष्पाद (पशुओं) से भली प्रकार से समृद्ध हों । हे इन्द्रदेव ! अनुदार शत्रुसेना हमारे समीप न आ सके, विद्रोही शत्रुओं को सब प्रकार से विनष्ट करें ॥१९,१५.२॥

इन्द्रस्त्रातोत वृत्रहा परस्फानो वरेण्यः ।
स रक्षिता चरमतः स मध्यतः स पश्चात्स पुरस्तान् नो अस्तु ॥१९,१५.३॥

वृत्रासुर के नाशक इन्द्रदेव हमारे संरक्षक हों । वरण करने योग्य इन्द्रदेव शत्रुओं के प्रभाव से हमें बचाएँ। वे इन्द्रदेव

अन्त, मध्य, आगे और पीछे सभी ओर से हमें पूर्ण संरक्षण प्रदान करने वाले हों ॥१९,१५.३॥

उरुं नो लोकमनु नेषि विद्वान्त्स्वर्यज्ज्योतिरभयं स्वस्ति ।
उग्रा त इन्द्र स्थविरस्य बाहू उप क्षयेम शरणा बृहन्ता ॥१९,१५.४॥

हे इन्द्रदेव ! आप ज्ञानवान् हैं, सर्वज्ञ हैं, अतः आप हमें इस बड़े क्षेत्र की बाधाओं से निकालकर सरलतापूर्वक लक्ष्य तक पहुँचाएँ और निर्भय करें । युद्ध में दृढ़ रहने वाली आपकी दोनों भुजाएँ बहुत उग्र हैं। हम आपके विशाल आश्रय (संरक्षण) में रहें ॥१९,१५.४॥

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे ।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ॥१९,१५.५॥

अन्तरिक्ष लोक, द्युलोक और पृथ्वों ये सभी हमें निर्भयता प्रदान करें । उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम ये चारों दिशाएँ भी हमारे लिए निर्भयतायुक्त हों ॥१९,१५.५॥

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं पुरो यः ।

अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥१९,१५.६॥

मित्रों, शत्रुओं तथा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अनिष्टों से हमें किसी प्रकार का भय न हो। हमें दिन और रात्रि से निर्भयता की प्राप्ति हो । म अभय के आकांक्षियों के लिए सभी दिशाएँ मित्रवत् कल्याणकारी हों ॥१९,१५.६॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त १६ – अभय सूक्त

सविता देव तथा अश्विनी कुमारों की स्तुति

असपत्नं पुरस्तात्पश्चान् नो अभयं कृतम् ।
सविता मा दक्षिणत उत्तरान् मा शचीपतिः ॥१९,१६.१॥

हमारे आगे (पूर्व दिशा में) शत्रु न रहें तथा पीछे (पश्चिम) से हम निर्भय रहें । दक्षिण की तरफ से सवितादेव और उत्तर की तरफ से इन्द्रदेव हमारा संरक्षण करें ॥१९,१६.१॥

दिवो मादित्या रक्षतु भूम्या रक्षन्त्वग्नयः ।
इन्द्राग्नी रक्षतां मा पुरस्तादश्विनावभितः शर्म यच्छताम् ।
तिरश्चीन् अघ्न्या रक्षतु जातवेदा भूतकृतो मे सर्वतः सन्तु वर्म ॥१९,१६.२॥

आदित्यदेव द्युलोक से हमारा संरक्षण करें । अग्नियाँ पृथ्वीलोक के अनिष्टों का निवारण करें । इन्द्राग्नि पूर्व दिशा में हमारे संरक्षक हों । अश्विनीकुमार चारों ओर से हमें सुख प्रदान करें। सब भूतों (पदार्थों) के निर्माताजातवेदा अग्निदेव

चारों ओर से हमारे निमित्त अभेद्य कवच रूप हों ॥१९,१६.२॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त १७ – सुरक्षा सूक्त

पृथ्वी की स्तुति तथा अंतरिक्ष के स्थायी देवता सोम व रुद्र की स्तुति

अग्निर्मा पातु वसुभिः पुरस्तात्तस्मिन् क्रमे तस्मिं छ्रये तां पुरं प्रैमि ।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा ॥१९,१७.१॥

अग्निदेव वसुगण के साथ पूर्व दिशा से हमें संरक्षण प्रदान करें । हम उनका अनुगमन करते हैं। हम उनका आश्रय ग्रहण करते हैं। हम उस नगर (या घर) में प्रवेश करते हैं। वे हमारी रक्षा करें, वे हमारा पालन करें, उनके निमित्त हम अपने आप को समर्पित करते हैं ॥१९,१७.१॥

वायुर्मान्तरिक्षेणैतस्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिं छ्रये तां पुरं प्रैमि ।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा ॥१९,१७.२॥

वायुदेव अन्तरिक्ष के साथ इस पूर्व दिशा में हमारा संरक्षण करें । हम उनका अनुगमन करते हैं । हम उनका आश्रय लेते हैं। हम उस नगर (या घर) में प्रवेश करते हैं। वे हमारी रक्षा करें, वे हमारा पालन करें, उनके निमित्त हम अपने आप को समर्पित करते हैं ॥१९,१७.२॥

सोमो मा रुद्रैर्दक्षिणाया दिशः पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिं छ्रये तां पुरं प्रैमि ।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा ॥१९,१७.३॥

सोमदेव रुद्रगण के साथ दक्षिण दिशा में हमारा संरक्षण करें । हम उनका अनुगमन करते हैं। हम उनका आश्रय लेते हैं। हम उस नगर (या घर) में प्रवेश करते हैं। वे हमारी रक्षा करें, वे हमारा पालन करें, उनके निमित्त हम अपने आप को समर्पित करते हैं ॥१९,१७.३॥

वरुणो मादित्यैरेतस्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिं छ्रये तां पुरं प्रैमि ।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा ॥१९,१७.४॥

वरुणदेव आदित्यों के साथ दक्षिण दिशा में हमारे संरक्षणकर्ता हों । हम उनका अनुगमन करते हैं। हम उनका आश्रय लेते हैं । हम उस नगर (या घर) में प्रवेश करते हैं। वे हमारी रक्षा करें, हमारा पालन करें, उनके निमित्त हम अपने आप को समर्पित करते हैं ॥१९,१७.४॥

सूर्यो मा द्यावापृथिवीभ्यां प्रतीच्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिं छ्रये तां पुरं प्रैमि ।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा ॥१९,१७.५॥

सर्वप्रेरक सूर्यदेव द्यावा- पृथिवी सहित पश्चिम दिशा में हमारे संरक्षक हों। हम उनका अनुगमन करते हैं। हम उनका आश्रय लेते हैं। हम उस नगर (या घर) में प्रवेश करते हैं। वे हमारी रक्षा करें, हमारा पालन करें, उनके निमित्त हम अपने आपको समर्पित करते हैं ॥१९,१७.५॥

आपो मौषधीमतीरेतस्या दिशः पान्तु तासु क्रमे तासु श्रये तां पुरं प्रैमि ।
ता मा रक्षन्तु ता मा गोपायन्तु ताभ्य आत्मानं परि ददे स्वाहा ॥१९,१७.६॥

ओषधियुक्त जल इस दिशा से हमारा संरक्षण करे । हम उसको अनुगमन और आश्रय लेते हैं । हम उस नगर में प्रवेश करते हैं। वह हमारी रक्षा और पालन करे, उसके निमित्त हम अपने आपको समर्पित करते हैं ॥१९,१७.६॥

विश्वकर्मा मा सप्तऋषिभिरुदीच्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिं छ्रये तां पुरं प्रैमि ।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा ॥१९,१७.७॥

विश्व के स्रष्टा परमात्मा सप्तर्षियों के सहयोग से हमें उत्तर दिशा में संरक्षण प्रदान करें । हम उनका अनुगमन करते हैं। हम उनका आश्रय लेते हैं । हम उस नगर (या घर) में प्रवेश करते हैं, वे हमारी रक्षा करें, वे हमारा पालन करें। उनके निमित्त हम अपने आप को समर्पित करते हैं ॥१९,१७.७॥

इन्द्रो मा मरुत्वान् एतस्या दिशः पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिं छ्रये तां पुरं प्रैमि ।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा ॥१९,१७.८॥

इन्द्रदेव मरुद्गण के सहयोग से इस दिशा में हमारे संरक्षक हों । हम उनका अनुगमन करते हैं। हम उनका आश्रय लेते हैं। हम उस नगर (या घर) में प्रवेश करते हैं। वे हमारी रक्षा करें, वे हमारा पालन करें, उनके निमित्त हम अपने आपको समर्पित करते हैं ॥१९,१७.८॥

प्रजापतिर्मा प्रजननवान्त्सह प्रतिष्ठया ध्रुवाया दिशः पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिं छ्रये तां पुरं प्रैमि ।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा ॥१९,१७.९॥

सम्पूर्ण विश्व की उत्पत्ति के कारणभूत, प्रजनन क्षमता से युक्त प्रजापतिदेव ध्रुव दिशा में हमारे संरक्षक हों। हम उनका अनुगमन करते हैं और उनका आश्रय लेते हैं। हम उस नगर (या घर) में प्रवेश करते हैं। वे हमारी रक्षा करें, वे हमारा पालन करें, उनके निमित्त हम अपने आप को समर्पित करते हैं ॥१९,१७.९॥

बृहस्पतिर्मा विश्वैर्देवैरूर्ध्वाया दिशः पातु तस्मिन् क्रमे तस्मिं छ्रये तां पुरं प्रैमि ।
स मा रक्षतु स मा गोपायतु तस्मा आत्मानं परि ददे स्वाहा ॥१९,१७.१०॥

देवशक्तियों के हितैषी बृहस्पतिदेव सम्पूर्ण देवों सहित ऊर्ध्व दिशा में हमारे संरक्षक रूप हों। हम उनका अनुगमन करते हैं और उनका आश्रय लेते हैं। हम उस नगर (या घर) में प्रवेश करते हैं। वे हमारी रक्षा करें, वे हमारा पालन करें, उनके निमित्त हम अपने आपको समर्पित करते हैं ॥१९,१७.१०॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त १८ – सुरक्षा सूक्त

वायु से शत्रु विनाश की कामना

अग्निं ते वसुवन्तमृछन्तु ।
ये माघायवः प्राच्या दिशोऽभिदासान् ॥१९,१८.१॥

जो पापी पूर्व दिशा से हमें पराधीन बनाने के आकांक्षी हैं, वे शत्रु वसुओं के साथ अग्नि में भस्म हो जाएँ ॥१९,१८.१॥

वायुं तेऽन्तरिक्षवन्तमृछन्तु ।
ये माघायव एतस्या दिशोऽभिदासान् ॥१९,१८.२॥

जो पापी शत्रु इस दिशा से हमें पराधीन बनाना चाहते हैं, वे अन्तरिक्षीय वायु को प्राप्त (नष्ट)हो जाएँ ॥१९,१८.२॥

सोमं ते रुद्रवन्तमृछन्तु ।
ये माघायवो दक्षिणाया दिशोऽभिदासान् ॥१९,१८.३॥

जो दुष्ट लोग दक्षिण दिशा से हमें हिंसित करना चाहते हैं, वे रुद्रदेवों के साथ सोम को प्राप्त (विनष्ट हों ॥१९,१८.३॥

वरुणं त आदित्यवन्तमृछन्तु ।
ये माघायव एतस्या दिशोऽभिदासान् ॥१९,१८.४॥

जो दुष्ट शत्रु हमें इस दिशा में मारने के इच्छुक हैं, वे अदितिपुत्रों के साथ वरुणदेव के पाश में पड़े ॥१९,१८.४॥

सूर्यं ते द्यावापृथिवीवन्तमृछन्तु ।
ये माघायव प्रतीच्या दिशोऽभिदासान् ॥१९,१८.५॥

जो पाप रूप शत्रु पश्चिम दिशा से आकर हमारा वध करना चाहते हैं, वे द्यावा- पृथिवी को अपने प्रकाश से विस्तृत करने वाले सूर्य को प्राप्त (विनष्ट हों ॥१९,१८.५॥

अपस्त ओषधीमतीर्ऋछन्तु ।
ये माघायव एतस्या दिशोऽभिदासान् १९,१८.॥६॥

जो शत्रु इस दिशा से आकर हमारा संहार करना चाहते हैं, वे ओषधियुक्त जल के वश में (विनष्ट) हों ॥१९,१८.६॥

विश्वकर्माणं ते सप्तऋषिवन्तमृछन्तु ।
ये माघायव उदीच्या दिशोऽभिदासान् ॥१९,१८.७॥

जो शत्रु उत्तर दिशा से आकर हमारा वध करना चाहते हैं, वे सप्तर्षियों से युक्त विश्वकर्मा को प्राप्त हों ॥१९,१८.७॥

इन्द्रं ते मरुत्वन्तमृछन्तु ।
ये माघायव एतस्या दिशोऽभिदासान् ॥१९,१८.८॥

जो शत्रु इस दिशा से आकर हमारे संहारेच्छुक हों, वे शत्रु मरुत्वान् इन्द्रदेव को प्राप्त (विनष्ट) हो जाएँ ॥१९,१८.८॥

प्रजापतिं ते प्रजननवन्तमृछन्तु ।
ये माघायवो ध्रुवाया दिशोऽभिदासान् ॥१९,१८.९॥

जो पापी ध्रुव दिशा से हमारे वधाकांक्षी हैं, वे प्रजनन क्षमता से युक्त प्रजापति के वशीभूत (विनष्ट) हों ॥१९,१८.९॥

बृहस्पतिं ते विश्वदेववन्तमृछन्तु ।
ये माघायव ऊर्ध्वाया दिशोऽभिदासान् ॥१९,१८.१०॥

जो पापी ऊर्ध्व दिशा से आकर हमारे संहार के इच्छुक हैं, वे शत्रु समस्त देवताओं से युक्त बृहस्पतिदेव के वशीभूत (विनष्ट हो जाएँ ॥१९,१८.१०॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त १९ – शर्म सूक्त

मित्र नाम वाले अग्नि आदि देवों की स्तुति

मित्रः पृथिव्योदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यछतु ॥१९,१९.१॥

मित्र (अग्निदेव) पृथ्वी से (जिस स्थान के लिए) ऊर्ध्वगमन किया, उस पुर (नगर) में हम आपको प्रविष्ट करते हैं। आप उसमें प्रवेश करें, उसमें वास करें । यह नगरी आपको सुख तथा कवच की तरह संरक्षण दे ॥१९,१९.१॥

वायुरन्तरिक्षेणोदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यछतु ॥१९,१९.२॥

वायुदेव अपने आश्रय स्थान अन्तरिक्ष से (जिस स्थान के लिए) ऊर्ध्वगमन किया, आप उसमें प्रवेश करें, उसमें वास

करें । यह नगरी आपको सुख तथा कवच की तरह संरक्षण दे ॥१९,१९.२॥

सूर्यो दिवोदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यछतु ॥१९,१९.३॥

सूर्यदेव द्युलोक से (जिस स्थान के लिए) ऊर्ध्वगमन किया, आप उसमें प्रवेश करें, उसमें वास करें । यह नगरी आपको सुख तथा कवच की तरह संरक्षण दे ॥१९,१९.३॥

चन्द्रमा नक्षत्रैरुदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यछतु ॥१९,१९.४॥

चन्द्रदेव नक्षत्रों में से (जिस स्थान के लिए) ऊर्ध्वगमन किया, आप उसमें प्रवेश करें, उसमें वास करें । यह नगरी आपको सुख तथा कवच की तरह संरक्षण दे ॥१९,१९.४॥

सोम ओषधीभिरुदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यछतु ॥१९,१९.५॥

सोम ओषधियों से (जिस स्थान के लिए) ऊर्ध्वगमन किया, आप उसमें प्रवेश करें, उसमें वास करें । यह नगरी आपको सुख तथा कवच की तरह संरक्षण दे ॥१९,१९.५॥

यज्ञो दक्षिणाभिरुदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ॥१९,१९.६॥

यज्ञदेव दक्षिणाओं से (जिस स्थान के लिए) ऊर्ध्वगमन किया, आप उसमें प्रवेश करें, उसमें वास करें । यह नगरी आपको सुख तथा कवच की तरह संरक्षण दे ॥१९,१९.६॥

समुद्रो नदीभिरुदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ॥१९,१९.७॥

सागर नदियों से (जिस स्थान के लिए) ऊर्ध्वगमन किया, आप उसमें प्रवेश करें, उसमें वास करें । यह नगरी आपको सुख तथा कवच की तरह संरक्षण दे ॥१९,१९.७॥

ब्रह्म ब्रह्मचारिभिरुदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ॥१९,१९.८॥

ब्रह्म (परमात्म ज्ञान) ब्रह्मचारियों से (जिस स्थान के लिए) ऊर्ध्वगमन किया, उस पुर में संरक्षण दे ॥१९,१९.८॥

इन्द्रो वीर्येणोदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ॥१९,१९.९॥

इन्द्रदेव वीर्य (शौर्य) से (जिस स्थान के लिए) ऊर्ध्वगमन किया, आप उसमें प्रवेश करें, उसमें वास करें । यह नगरी आपको सुख तथा कवच की तरह संरक्षण दे ॥१९,१९.९॥

देवा अमृतेनोदक्रामंस्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ॥१९,१९.१०॥

देवगण अमृत रस से (जिस स्थान के लिए) ऊर्ध्वगमन किया, आप उसमें प्रवेश करें, उसमें वास करें । यह नगरी आपको सुख तथा कवच की तरह संरक्षण दे ॥१९,१९.१०॥

प्रजापतिः प्रजाभिरुदक्रामत्तां पुरं प्र णयामि वः ।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म च यच्छतु ॥१९,१९.११॥

प्रजापतिदेव ने प्रजाजनों के साथ(जिस स्थान के लिए) ऊर्ध्वगमन किया है, आप उसमें प्रवेश करें, उसमें वास करें । यह नगरी आपको सुख तथा कवच की तरह संरक्षण दे ॥१९,१९.११॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त २० – सुरक्षा सूक्त

इंद्र, अग्नि, सविता आदि देवों की स्तुति तथा सभी प्राणियों के पालनकर्ता प्रजापति

अप न्यधुः पौरुषेयं वधं यमिन्द्राग्नी धाता सविता बृहस्पतिः।
सोमो राजा वरुणो अश्विना यमः पूषास्मान् परि पातु मृत्योः
॥१९,२०.१॥

शत्रुओं द्वारा गुप्तरीति से किये गये मारण प्रयोग से इन्द्र, अग्नि, धाता, सविता, बृहस्पति, सोम, वरुण दोनों अश्विनीकुमार, यम और पूषा आदि सभी देव शक्तियाँ हमारा संरक्षण करें ॥१९,२०.१॥

यानि चकार भुवनस्य यस्पतिः प्रजापतिर्मातरिश्वा प्रजाभ्यः ।
प्रदिशो यानि वसते दिशश्च तानि मे वर्माणि बहुलानि सन्तु
॥१९,२०.२॥

प्रजापति ने प्रज्ञाओं के संरक्षण हेतु जिस कवच की रचना की है, मातरिश्वा-वायु प्रजापति, दिशाएँ एवं प्रदिशाएँ जिन

कवचों को धारण करती हैं, वे सुरक्षा कवच हमारे लिए प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हों ॥१९,२०.२॥

यत्ते तनूष्वनह्यन्त देवा द्युराजयो देहिनः ।
इन्द्रो यच्चक्रे वर्म तदस्मान् पातु विश्वतः ॥१९,२०.३॥

देवशक्तियों ने जिस कवच को अपनी देह पर धारण किया था और इन्द्रदेव ने भी जिसे धारण किया, वह रक्षाकवच चारों ओर से हमारा संरक्षण करने वाला हो ॥१९,२०.३॥

वर्म मे द्यावापृथिवी वर्माहर्वर्म सूर्यः ।
वर्म मे विश्वे देवाः क्रन् मा मा प्रापत्प्रतीचिका ॥१९,२०.४॥

द्यावा- पृथिवी हमारे लिए हो । सूर्यदेव, विश्वेदेवा तथा दिन भी हमारे लिए कवच स्वरूप हों । विरोध करने वाले शत्रु हमें न मिलें ॥१९,२०.४॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त २१ – छन्दांसि सूक्त

छंदों के लिए आहुति

गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती पङ्क्तिस्त्रिष्टुब्जगत्यै ॥१९,२१.१॥

गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप् बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् और जगती इन सभी छन्दों के लिए यह आहुति अर्पित हो ॥१९,२१.१॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त २२- ब्रह्मा सूक्त

अंगिरा गोत्र वाले ऋषियों के लिए आहुति

आङ्गिरसानामाद्यैः पञ्चानुवाकैः स्वाहा ॥१९,२२.१॥

आंगिरसों के प्रारम्भिक पाँच अनुवाकों से यह आहुति समर्पित है॥१९,२२.१॥

षष्ठाय स्वाहा ॥१९,२२.२॥

छठे के लिए यह आहुति समर्पित है॥१९,२२.२॥

सप्तमाष्टमाभ्यां स्वाहा ॥१९,२२.३॥

सातवें और आठवें के लिए आहुति समर्पित है॥१९,२२.३॥

नीलनखेभ्यः स्वाहा ॥१९,२२.४॥

नीलनखों के लिए आहुति समर्पित है॥१९,२२.४॥

हरितेभ्यः स्वाहा ॥१९,२२.५॥

हरितों के लिए यह आहुति समर्पित है॥१९,२२.५॥

क्षुद्रेभ्यः स्वाहा ॥१९,२२.६॥

क्षुद्रों के लिए आहुति समर्पित है॥१९,२२.६॥

पर्यायिकेभ्यः स्वाहा ॥१९,२२.७॥

पर्याय वालों के लिए आहुति समर्पित है॥१९,२२.७॥

प्रथमेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा ॥१९,२२.८॥

प्रथम शंखों के लिए आहुति समर्पित है॥१९,२२.८॥

द्वितीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा ॥१९,२२.९॥

द्वितीय शंखों के लिए श्रेष्ठ आहुति समर्पित है॥१९,२२.९॥

तृतीयेभ्यः शङ्खेभ्यः स्वाहा ॥१९,२२.१०॥

तृतीय शंखों के लिए आहुति समर्पित है॥१९,२२.१०॥

उपोत्तमेभ्यः स्वाहा ॥१९,२२.११॥

उत्तमों के निमित्त आहति समर्पित है॥१९,२२.१२॥

उत्तमेभ्यः स्वाहा ॥१९,२२.१२॥

उपोत्तमों के लिए आहुति समर्पित है॥१९,२२.११॥

उत्तरेभ्यः स्वाहा ॥१९,२२.१३॥

उत्तरों (उच्चतरों) के निमित्त यह आहुति है॥१९,२२.१३॥

ऋषिभ्यः स्वाहा ॥१९,२२.१४॥

मन्त्रद्रष्टा ऋषियों के निमित्त आहुति समर्पित है॥१९,२२.१४॥

शिखिभ्यः स्वाहा ॥१९,२२.१५॥

शिखियों (शिखा बालों) के निमित्त आहुति समर्पित है॥१९,२२.१५॥

गणेभ्यः स्वाहा ॥१९,२२.१६॥

गणों अर्थात् सोद्देश्य समूह के लिए आहुति समर्पित है॥१९,२२.१६॥

महागणेभ्यः स्वाहा ॥१९,२२.१७॥

महागणों के निमित्त आहुति समर्पित है॥१९,२२.१७॥

सर्वेभ्योऽङ्गिरोभ्यो विदगणेभ्यः स्वाहा ॥१९,२२.१८॥

गणों (समूह) के ज्ञाता सभी अंगिराओं के निमित्त आहुति समर्पित है॥१९,२२.१८॥

पृथक्सहस्राभ्यां स्वाहा ॥१९,२२.१९॥

पृथक्-पृथक् सहस्रों के निमित्त आहुति समर्पित है॥१९,२२.१९॥

ब्रह्मणे स्वाहा ॥१९,२२.२०॥

बीस काण्डों से युक्त वेदज्ञ ब्रह्मा नामक अंष के निमित्त आहुति समर्पित है ॥१९,२२.२०॥

ब्रह्मज्येष्ठा सम्भृता विर्याणि ब्रह्माग्रे ज्येष्ठं दिवमा ततान ।
भूतानां ब्रह्मा प्रथमोत जज्ञे तेनार्हति ब्रह्मणा स्पर्धितुं कः ॥१९,२२.२१॥

इस वेद में ब्रह्मज्ञान तथा अन्य सामथ्र्यों का उल्लेख संगृहीत है । सृष्टि के आदिकाल में सर्वप्रथम ब्रह्म तत्त्व का प्रादुर्भाव हुआ। ब्रह्म ने द्युलोक को उत्पन्न किया। तत्पश्चात् ब्रह्मा (सृष्टि उत्पादनकर्ता) की उत्पत्ति हुई, जिन्होंने सृष्टि की रचना की । वे सर्वाधिक सामर्थ्यवान् थे, अतः उनसे स्पर्धा करने में कौन समर्थ हो सकता है? ॥१९,२२.२१॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त २३ – अथर्वाण सूक्त

ऋषियों के लिए आहुति, पांच ऋचाओं की रचना करने वाले ऋषियों को आहुति तथा ब्रह्मा का वर्णन

आथर्वणानां चतुर्ऋचेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.॥

आथर्वणों (अथर्ववेदीय ऋषियों) की चार ऋचाओं के लिए आहुति समर्पित है ॥१९,२३.१॥

पञ्चर्चेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.२॥

पाँच ऋचाओं के लिए आहुति समर्पित है ॥१९,२३.२॥

षळृचेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.३॥

षड्ऋचाओं के निमित्त आहुति समर्पित है ॥१९,२३.३॥

सप्तर्चेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.४॥

सप्त ऋचाओं के लिए आहुति समर्पित है ॥१९,२३.४॥

अष्टर्चेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.५॥

आठ ऋचाओं के लिए आहुति समर्पित हैं ॥१९,२३.५॥

नवर्चेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.६॥

नौ ऋचाओं के निमित्त आहुति समर्पित है ॥१९,२३.६॥

दशर्चेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.७॥

दस ऋचाओं के लिए आहुति समर्पित है ॥१९,२३.७॥

एकादशर्चेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.८॥

ग्यारह ऋचाओं के लिए आहुति समर्पित है ॥१९,२३.८॥

द्वादशर्चेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.९॥

बारह ऋचाओं के निमित्त आहुति समर्पित है ॥१९,२३.९॥

त्रयोदशर्चेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.१०॥

तेरह ऋचाओं के निमित्त आहुति समर्पित है ॥१९,२३.१०॥

चतुर्दशर्चेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.११॥

चौदह ऋचाओं के निमित्त आहुति समर्पित है ॥१९,२३.११॥

पञ्चदशर्चेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.१२॥

पन्द्रह ऋचाओं के निमित्त आहुति समर्पित है ॥१९,२३.१२॥

षोडशर्चेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.१३॥

सोलह ऋचाओं के लिए आहुति समर्पित है ॥१९,२३.१३॥

सप्तदशर्चेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.१४॥

सत्रह ऋचाओं के निमित्त यह आहुति समर्पित है ॥१९,२३.१४॥

अष्टादशर्चेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.१५॥

अठारह ऋचाओं के लिए आहुति समर्पित है ॥१९,२३.१५॥

एकोनविंशतिः स्वाहा ॥१९,२३.१६॥

उन्नीस ऋचाओं के लिए आहुति समर्पित है ॥१९,२३.१६॥

विंशतिः स्वाहा ॥१९,२३.१७॥

बीस ऋचाओं के लिए आहुति समर्पित है ॥१९,२३.१७॥

महत्काण्डाय स्वाहा ॥१९,२३.१८॥

बड़े काण्ड के निमित्त आहुति निवेदित है ॥१९,२३.१८॥

तृचेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.१९॥

तृचों (तीन ऋचा वालों) के लिए आहुति समर्पित हैं ॥१९,२३.१९॥

एकर्चेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.२०॥

एकच (एक ऋचा वालों) के लिए आहुति समर्पित है ॥१९,२३.२०॥

क्षुद्रेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.२१॥

क्षुद्रों के लिए आहुति समर्पित है ॥१९,२३.२१॥

एकानृचेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.२२॥

एकानृचों (एक चरण की ऋचा, जिसे पूर्ण ऋचा नहीं कहा जा सकता) के लिए आहुति समर्पित है ॥१९,२३.२२॥

रोहितेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.२३॥

रोहितों (हरों) के निमित्त आहुति समर्पित है ॥१९,२३.२३॥

सूर्याभ्यां स्वाहा ॥१९,२३.२४॥

दो सूर्यों के निमित्त आहुति समर्पित है ॥१९,२३.२४॥

व्रात्याभ्यां स्वाहा ॥१९,२३.२५॥

व्रात्यों के लिए आहुति समर्पित है ॥१९,२३.२५॥

प्राजापत्याभ्यां स्वाहा ॥१९,२३.२६॥

प्राजापत्यों के लिए आहुति समर्पित है ॥१९,२३.२६॥

विषासह्यै स्वाहा ॥१९,२३.२७॥

विषासही के निमित्त आहुति समर्पित हैं ॥१९,२३.२७॥

मङ्गलिकेभ्यः स्वाहा ॥१९,२३.२८॥

मांगलिकों के निमित्त आहुति समर्पित है ॥१९,२३.२८॥

ब्रह्मणे स्वाहा ॥१९,२३.२९॥

ब्रह्मा के लिए आहुति समर्पित है॥१९,२३.२९॥

ब्रह्मज्येष्ठा संभृता वीर्याणि ब्रह्माग्रे ज्येष्ठं दिवमा ततान ।
भूतानां ब्रह्मा प्रथमोत जज्ञे तेनार्हति ब्रह्मणा स्पर्धितुं कः ॥१९,२३.३०॥

इस वेद (अथर्व) में ब्रह्मज्ञान तथा अन्य अनेक सामथ्र्यों का उल्लेख संगृहीत हैं । सृष्टि के आदि में सर्वप्रथम ब्रह्मतत्त्व का प्रादुर्भाव हुआ, उन्होंने द्युलोक को प्रकट किया। तत्पश्चात् ब्रह्मा (रचयिता) की उत्पत्ति हुई, जिन्होंने सृष्टि की रचना की । वे सबसे अधिक सामर्थ्यवान् थे, अतः उनसे स्पर्धा करने में कौन समर्थ हो सकता है ? ॥१९,२३.३०॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त २४ – राष्ट्रसूक्त

शत्रु विनाशकर्ता ब्रह्मणस्पति की स्तुति, इंद्र की स्तुति तथा देवों से प्रार्थना

येन देवं सवितारं परि देवा अधारयन् ।
तेनेमं ब्रह्मणस्पते परि राष्ट्राय धत्तन ॥१९,२४.१॥

हे ब्रह्मणस्पते ! देवों ने जिस प्रकार सवितादेव को चारों ओर से धारण किया, उसी विधि से इस महान् शान्ति के अनुष्ठाता यजमान को राष्ट्र की सुरक्षा के लिए सन्नद्ध (तत्पर) करें ॥१९,२४.१॥

परीममिन्द्रमायुषे महे क्षत्राय धत्तन ।
यथैनं जरसे नयाज्ज्योक्क्षत्रेऽधि जागरत्॥१९,२४.२॥

इन्द्रदेव इस साधक को आयुष्य और क्षात्र तेज की प्राप्ति के निमित्त प्रतिष्ठित करें । यह साधक वृद्धावस्था तक पहुँचे तथा जागरूकता के साथ क्षात्र धर्म में तत्पर रहे ॥१९,२४.२॥

परीममिन्द्रमायुषे महे श्रोत्राय धत्तन ।
यथैनं जरसे नयाज्ज्योक्श्रोत्रेऽधि जागरत्॥१९,२४.३॥

सोमदेव इस साधक को दीर्घ आयु, महान् ज्ञान, तेजस्विता अथवा यशस्विता के लिए परिपुष्ट करें। यह साधक वृद्धावस्था तक श्रोत्रादि इन्द्रियों की शक्ति से सम्पन्न हो ॥१९,२४.३॥

परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमायुः ।
बृहस्पतिः प्रायछद्वास एतत्सोमाय राज्ञे परिधातवा उ ॥१९,२४.४॥

देवगण इस (शिशु) को वह आवरण धारण कराएँ, हमारे इस बालक को तेजस्विता सम्पन्न कराएँ, इसके जीवन में वृद्धावस्था के बाद ही मृत्यु आए, इसी परिधान को बृहस्पतिदेव ने राजा सोम को भेंट किया था ॥१९,२४.४॥

जरां सु गछ परि धत्स्व वासो भवा गृष्टीनामभिशस्तिपा उ ।
शतं च जीव शरदः पुरूची रायश्च पोषमुपसंव्ययस्व ॥१९,२४.५॥

हे साधक ! आप वृद्धावस्था तक सकुशल रहें । इस जीवनरूपी वस्त्र को धारण किये रहें और प्रजा को विनाश से बचाए रहें । सौ वर्ष तक जीवन जीते हुए धन-सम्पदा से युक्त होकर परिपुष्ट रहें ॥१९,२४.५॥

परीदं वासो अधिथाः स्वस्तयेऽभूर्वापीनामभिशस्तिपा उ ।
शतं च जीव शरदः पुरूचीर्वसूनि चारुर्वि भजासि जीवन् ॥१९,२४.६॥

हे साधक ! आपने इस वस्त्र को कल्याणकारी भावना से धारण किया है, इससे आप गौओं को विनाश से बचाने वाले बन चुके हैं। सौ वर्ष की पूर्ण आयु का उपभोग करें, वस्त्र से युक्त रहते हुए श्रेष्ठ धन- सम्पदा को परिवारों, स्वजनों एवं मित्रों में बाँटते रहें ॥१९,२४.६॥

योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे ।
सखाय इन्द्रमूतये ॥१९,२४.७॥

हम सभी मित्र, प्रत्येक उद्योग और प्रत्येक संग्राम में एकत्र होकर, बलशाली इन्द्रदेव को अपने संरक्षण के लिए आवाहित करते हैं ॥१९,२४.७॥

हिरण्यवर्णो अजरः सुवीरो जरामृत्युः प्रजया सं विशस्व ।

तदग्निराह तदु सोम आह बृहस्पतिः सविता तदिन्द्रः ॥१९,२४.८॥

हे साधक ! आप स्वर्णिम कान्ति से युक्त रहते हुए बुढ़ापे से रहित श्रेष्ठ सन्तति से सम्पन्न, जरावस्था के बाद मृत्यु को प्राप्त करने वाले, पुत्र भृत्यादि के साथ इस घर में विश्राम करें। अग्निदेव, सोमदेव, बृहस्पतिदेव, सविता और इन्द्रदेव भी इस तथ्य का अनुमोदन करते हैं ॥१९,२४.८॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त २५- अश्व सूक्त

शक्तिशाली अश्व की कामना

अश्रान्तस्य त्वा मनसा युनज्मि प्रथमस्य च ।
उत्कूलमुद्वहो भवोदुह्य प्रति धावतात्॥१९,२५.१ १॥

हे देहीं ! हम आपको थकावटरहित मन से संयुक्त करते हैं। जैसे नदी का जल दोनों तटों के ऊपर चढ़कर प्रवाहित होता हैं । आप वैसे ही वेगवान् बने, उठे और लक्ष्य की ओर दौड़ पड़े ॥१९,२५.१ १॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त २६ – हिरण्यधारण सूक्त

अग्नि से उत्पन्न स्वर्ण को धारण करने वाले पुरुष का वर्णन

अग्नेः प्रजातं परि यद्धिरण्यममृतं दध्रे अधि मर्त्येषु ।
य एनद्वेद स इदेनमर्हति जरामृत्युर्भवति यो बिभर्ति ॥१९,२६.१॥

अग्नि से समुत्पन्न होने वाला जो हिरण्य (स्वर्ण या तेज है, मनुष्यों में अमृत स्थापित करता है । इस तथ्य का ज्ञाता पुरुष निश्चित रूप से उसे धारण करने योग्य है । जो मनुष्य इस स्वर्ण को धारण करते हैं, वे वृद्धावस्था में ही मृत्यु को प्राप्त करते हैं अर्थात् उनकी अकाल मृत्यु नहीं होती ॥१९,२६.१॥

यद्धिरण्यं सूर्येण सुवर्णं प्रजावन्तो मनवः पूर्व ईषिरे ।
तत्त्वा चन्द्रं वर्चसा सं सृजत्यायुष्मान् भवति यो बिभर्ति ॥१९,२६.२॥

जिस श्रेष्ठ वर्णयुक्त स्वर्ण या तेजस् को प्रजावान् मनुष्यों ने सृष्टि के प्रारम्भ में सूर्य से ग्रहण किया था, वह हर्षप्रद स्वर्ण आपको तेजस्विता प्रदान करै ।ऐसे स्वर्ण को धारण करने वाला मनुष्य दीर्घायुष्य को प्राप्त करता है॥१९,२६.२॥

आयुषे त्वा वर्चसे त्वौजसे च बलाय च ।
यथा हिरण्यतेजसा विभासासि जनामनु ॥१९,२६.३॥

हे हिरण्यधारी पुरुष ! यह आह्लादप्रद स्वर्ण आपको दीर्घजीवन, तेजस्विता, ओजस्विता तथा शारीरिक बल से युक्त करे। आप मनुष्य समाज में उसी प्रकार देदीप्यमान हों, जिस प्रकार सोना अपने तेज से दमकता है ॥१९,२६.३॥

यद्वेद राजा वरुणो वेद देवो बृहस्पतिः ।
इन्द्रो यद्वृत्रहा वेद तत्त आयुष्यं भुवत्तत्ते वर्चस्यं भुवत्॥१९,२६.४॥

जिस स्वर्ण के ज्ञाता राजा वरुणदेव, बृहस्पतिदेव, वृत्रासुर के संहारक इन्द्रदेव हैं । हे स्वर्णधारी पुरुष ! वरुण आदि देवों से परिचित वह स्वर्ण आपके लिए आयुष्य और तेजस्विता की वृद्धि करने वाला हो ॥१९,२६.४॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त २७ – सुरक्षा सूक्त

विवृत नामक मणि का वर्णन, सोम आदि देवों की स्तुति,
मणिधारक पुरुष तथा आदित्य नाम के देव की प्रशंसा

गोभिष्ट्वा पात्वृषभो वृषा त्वा पातु वाजिभिः ।
वायुष्ट्वा ब्रह्मणा पात्विन्द्रस्त्वा पात्विन्द्रियैः ॥१९,२७.१॥

हे पुरुष ! वृषभ अपने गौ समूह के साथ आपका संरक्षण करे । प्रजनन क्षमता युक्त अश्व तीव्रगामी अश्वों के साथ आपका संरक्षण करे । अन्तरिक्षीय वायु ब्रह्मज्ञान से आपका संरक्षण करे । इन्द्रदेव इन्द्रिय शक्तियों के साथ आपको संरक्षण प्रदान करें ॥१९,२७.१॥

सोमस्त्वा पात्वोषधीभिर्नक्षत्रैः पातु सूर्यः ।
माद्भ्यस्त्वा चन्द्रो वृत्रहा वातः प्राणेन रक्षतु ॥१९,२७.२॥

ओषधियों के अधिपति सोम, ओषधियों के साथ आपके संरक्षणकर्ता हों । सूर्यदेव नक्षत्र ग्रहों के साथ, अंधकार रूप

असुर के हन्ता, चन्द्रदेव मासों के साथ तथा वायुदेव प्राणवायु के साथ आपके संरक्षणकर्ता हों ॥१९,२७.२॥

तिस्रो दिवस्तिस्रः पृथिवीस्त्रीण्यन्तरिक्षाणि चतुरः समुद्रान् ।
त्रिवृतं स्तोमं त्रिवृत आप आहुस्तास्त्वा रक्षन्तु त्रिवृता त्रिवृद्भिः ॥१९,२७.३॥

तीन द्युलोक, तीन भूलोक, तीन अन्तरिक्षलोक (पुण्यात्माओं के तीन प्रकार के गन्तव्य स्थल), चार सागर, स्तोम और जल त्रिवृत् कहे गये हैं। ये सभी तीनों प्रकार (तीनों आयामों में) तीन गुणों (त्रिगुणों) से युक्त होकरआपकी रक्षा करें ॥१९,२७.३॥

त्रीन् नाकांस्त्रीन् समुद्रांस्त्रीन् ब्रध्नांस्त्रीन् वैष्टपान् ।
त्रीन् मातरिश्वनस्त्रीन्सूर्यान् गोप्तॄन् कल्पयामि ते ॥१९,२७.४॥

हम तीन प्रकार के स्वर्ग लोकों को, तीन सागरों को, तीन भुवनों को, तीन वायु-प्रवाहों को, रश्मियों और उनके अधिष्ठाता भेद से तीन सूर्यो को आपके संरक्षणकर्ता के रूप में नियुक्त करते हैं ॥१९,२७.४॥

घृतेन त्वा समुक्षाम्यग्ने आज्येन वर्धयन् ।

अग्नेश्चन्द्रस्य सूर्यस्य मा प्राणं मायिनो दभन् ॥१९,२७.५॥

हे अग्निदेव ! यज्ञ के साधनभूत घी के द्वारा प्रवृद्ध करते हुए हम आपको भली प्रकार सींचते हैं। हे पुरुष ! अग्निदेव, चन्द्रमा और सूर्यदेव के अनुग्रह से आपके जीवन को मायावी लोग विनष्ट न कर सकें ॥१९,२७.५॥

मा वः प्राणं मा वोऽपानं मा हरो मायिनो दभन् ।
भ्राजन्तो विश्ववेदसो देवा दैव्येन धावत ॥१९,२७.६॥

हे पुरुष ! मायावी असुर आपके प्राण- अपान को विनष्ट न कर सकें । हे समस्त देवशक्तियो ! अपनी सर्वज्ञता से दमकते हुए अपनी दिव्य सामथ्र्यों के साथ आप भी इनके सहयोग – संरक्षण हेतु पधारें ॥१९,२७.६॥

प्राणेनाग्निं सं सृजति वातः प्राणेन संहितः ।
प्राणेन विश्वतोमुखं सूर्यं देवा अजनयन् ॥१९,२७.७॥

समिंधनकर्ता पुरुष प्राणवायु से अग्नि को संयुक्त करते हैं। बाहरी वायु मुख में स्थित प्राण के साथ जुड़ा रहता है । देवताओं ने सभी ओर प्रकाशित होने वाले सर्वतोमुखी सूर्यदेव को प्राण से ही उत्पन्न किया है ॥१९,२७.७॥

आयुषायुःकृतां जीवायुष्मान् जीव मा मृथाः ।
प्राणेनात्मन्वतां जीव मा मृत्योरुदगा वशम् ॥१९,२७.८॥

आयु बढ़ाने वाले (पूर्वज ऋषियों) द्वारा प्रदत्त आयु से आप जीवित रहें । दीर्घ काल तक आप जीवित रहें । मृत्यु को प्राप्त न हों । प्राणवान् आत्मज्ञानी के सदृश आप जीवित रहें । मृत्यु के वश में न रहें ॥१९,२७.८॥

देवानां निहितं निधिं यमिन्द्रोऽन्वविन्दत्पथिभिर्देवयानैः ।
आपो हिरण्यं जुगुपुस्त्रिवृद्भिस्तास्त्वा रक्षन्तु त्रिवृता त्रिवृद्भिः ॥१९,२७.९॥

देवताओं के जिस गुप्त कोष को इन्द्रदेव ने देवयान मार्ग से हूँढ़कर प्राप्त किया था, उस हिरण्य की त्रिवृत् जल ने सुरक्षा की थी । वे (हिरण्य) तीनों आयामों तथा तीनों गुणों से युक्त होकर आपको संरक्षण प्रदान करें ॥१९,२७.९॥

त्रयस्त्रिंशद्देवतास्त्रीणि च वीर्याणि प्रियायमाणा जुगुपुरप्स्वन्तः ।
अस्मिंश्चन्द्रे अधि यद्धिरण्यं तेनायं कृणवद्वीर्याणि ॥१९,२७.१०॥

तैंतीस प्रकार की देवशक्तियों ने तीन पराक्रमों से जिस प्रिय तेज को जल के अन्दर प्रतिष्ठित किया तथा आह्लादकारी चन्द्र में जो चमकने वाला तेजस् है, उसके प्रभाव से यह पुरुष वीरोचित कार्य सम्पन्न करे ॥१९,२७.१०॥

ये देवा दिव्येकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् ॥१९,२७.११॥

द्युलोक में जो ग्यारह दिव्य शक्तियाँ हैं, वे (दिव्यशक्तियाँ) इस हवि को ग्रहण करें ॥१९,२७.११॥

ये देवा अन्तरिक्ष एकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् ॥१९,२७.१२॥

अन्तरिक्ष लोक में जो ग्यारह दिव्य शक्तियाँ हैं, वे (दिव्यशक्तियाँ) इस हवि को ग्रहण करें ॥१९,२७.१२॥

ये देवा पृथिव्यामेकादश स्थ ते देवासो हविरिदं जुषध्वम् ॥१९,२७.१३॥

भूलोक में जो ग्यारह दिव्य शक्तियाँ हैं, वे (दिव्यशक्तियाँ) इस हवि को ग्रहण करें ॥१९,२७.१३॥

असपत्नं पुरस्तात्पश्चान् नो अभयं कृतम् ।
सविता मा दक्षिणत उत्तरान् मा शचीपतिः ॥१९,२७.१४॥

हे सविता और शचीपति देवो ! आप हमें सामने की (पूर्व) दिशा और पीछे की (पश्चिम) दिशा से, दक्षिण दिशा से और उत्तर दिशा से हमें शत्रुभय से मुक्त करें ॥१९,२७.१४॥

दिवो मादित्या रक्षन्तु भूम्या रक्षन्त्वग्नयः ।
इन्द्राग्नी रक्षतां मा पुरस्तादश्विनावभितः शर्म यछताम् ।
तिरश्चीन् अघ्न्या रक्षतु जातवेदा भूतकृतो मे सर्वतः सन्तु वर्म ॥१९,२७.१५॥

आदित्यदेव द्युलोक से और अग्निदेव पृथ्वी से हमारी सुरक्षा करें । इन्द्र और अग्निदेव आगे से और दोनों अश्विनीकुमार सभी दिशाओं से हमारा संरक्षण करें । तिरछे (टेढे) स्थानों से जातवेदा अग्निदेव और पञ्चभूतों के अधिष्ठाता देव हमें चारों ओर से सुरक्षा कवच प्रदान करें ॥१९,२७.१५॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त २८ – दर्भमणि सूक्त

दर्भमणि का वर्णन व स्तुति तथा द्वेष करने वालों के विनाश के लिए प्रार्थना

इमं बध्नामि ते मणिं दीर्घायुत्वाय तेजसे ।
दर्भं सपत्नदम्भनं द्विषतस्तपनं हृदः ॥१९,२८.१॥

हे पुरुष ! आपके दीर्घ जीवन और तेजस्विता के लिए हम इस दर्भमणि को तुम्हारे शरीर के साथ बाँधते हैं। यह दर्भमणि शत्रु संहारक और विद्वेषी शत्रुओं के हृदय को संतप्त करने वाली है ॥१९,२८.१॥

द्विषतस्तापयन् हृदः शत्रूणां तापयन् मनः ।
दुर्हार्दः सर्वांस्त्वं दर्भ घर्म इवाभीन्त्संतापयन् ॥१९,२८.२॥

हे दर्भमणे (विदारक क्षमता) ! आप द्वेषी शत्रुओं के हृदय-क्षेत्र को तथा मन को संतप्त करें। उन शत्रुओं के (गृह, परिवार, पशु आदि) सभी को सूर्य के समान संतप्त करके विनष्ट करें ॥१९,२८.२॥

घर्म इवाभितपन् दर्भ द्विषतो नितपन् मणे ।
हृदः सपत्नानां भिन्द्धीन्द्र इव विरुजं बलम् ॥१९,२८.३॥

हे दर्भमणे ! आप द्वेषी शत्रुओं को ग्रीष्म के समान सन्तप्त करते हुए नष्ट कर डालें। आप पराक्रमी इन्द्रदेव के समान आन्तरिक और बाह्य सामर्थ्य से शत्रुओं के हृदय क्षेत्र को छिन्न-भिन्न कर डालें ॥१९,२८.३॥

भिन्द्धि दर्भ सपत्नानां हृदयं द्विषतां मणे ।
उद्यन् त्वचमिव भूम्याः शिर एषां वि पातय ॥१९,२८.४॥

हे दर्भमणे ! आप द्वेषभाव रखने वाले वैरियों के हृदय का भेदन करें। उनके सिरों को आप उसी प्रकार काटकर गिरा दें, जिस प्रकार भूमि के त्वचारूपी ऊपरी भाग को मनुष्य गृह निर्माण हेतु काटकर फेंक देते हैं ॥१९,२८.४॥

भिन्द्धि दर्भ सपत्नान् मे भिन्द्धि मे पृतनायतः ।
भिन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दो भिन्द्धि मे द्विषतो मणे ॥१९,२८.५॥

हे दर्भमणे ! आप हमारे वैरियों को और सैन्य दल का गठन करने वाले शत्रुओं को भी नष्ट कर दें। सभी दुष्ट शत्रुओं को

विनष्ट करें तथा सभी विद्रोही शत्रुओं को छिन्न-भिन्न कर डालें । ॥१९,२८.५॥

छिन्द्धि दर्भ सपत्नान् मे छिन्द्धि मे पृतनायतः ।
छिन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दो छिन्द्धि मे द्विषतो मणे ॥१९,२८.६॥

हे दर्भमणे ! आप हमारे वैरियों और हमारे लिए सैन्यदल का गठन करने वाले शत्रुओं का छेदन करें । आप हमारे सभी दुष्ट शत्रुओं को समाप्त करें तथा द्वेषभाव रखने वाले शत्रुओं को छिन्न-भिन्न कर डालें ॥१९,२८.६॥

वृश्च दर्भ सपत्नान् मे वृश्च मे पृतनायतः ।
वृश्च मे सर्वान् दुर्हार्दो वृश्च मे द्विषतो मणे ॥१९,२८.७॥

हे दर्भमणे ! हमारे शत्रुओं का कर्तन करें, हमारे लिए सैन्यशक्ति का गठन करने वाले शत्रुओं को काट डालें । आप हमारे सभी दुष्ट वैरियों का कर्तन करें तथा वैर भाव रखने वाले शत्रुओं को भी काट डालें ॥१९,२८.७॥

कृन्त दर्भ सपत्नान् मे कृन्त मे पृतनायतः ।
कृन्त मे सर्वान् दुर्हार्दो कृन्त मे द्विषतो मणे ॥१९,२८.८॥

हैं दर्भमणे ! आप हमारे वैरियों को तथा हमारे लिए सैन्यबल एकत्रित करने वाले शत्रुओं को छिन्न-भिन्न करें। हमारे सभी दुष्ट वैरियों को काट डालें तथा द्वेष रखने वाले शत्रुओं को तोड़-फोड़ डालें ॥१९,२८.८॥

पिंश दर्भ सपत्नान् मे पिंश मे पृतनायतः ।
पिंश मे सर्वान् दुर्हार्दो पिंश मे द्विषतो मणे ॥१९,२८.९॥

हे दर्भमणे ! हमारे वैरियों को तथा हमारे लिए सैन्यशक्ति को संगृहीत करने वाले शत्रुओं को पीस डालें । हमारे दुष्ट वैरियों को एवं द्वेष-दुर्भाव रखने वाले सभी वैरियों को भी पीस डालें ॥१९,२८.९॥

विध्य दर्भ सपत्नान् मे विध्य मे पृतनायतः ।
विध्य मे सर्वान् दुर्हार्दो विध्य मे द्विषतो मणे ॥१९,२८.१०॥

हे दर्भमणे ! आप हमारे शत्रुओं का बेधन करें (ताड़ना करें, हमारे निमित्त सैन्यशक्ति का गठन करने वाले शत्रुओं को ताड़ित करें । हमारे सभी दुष्ट शत्रुओं तथा हमसे द्वेष रखने वाले वैरियों को भी आप प्रताड़ित करें ॥१९,२८.१०॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त २९- दर्भमणि सूक्त

दर्भमणि की स्तुति तथा वर्णन तथा सेना एकत्र करने वालों के नाश की कामना

निक्ष दर्भ सपत्नान् मे निक्ष मे पृतनायतः ।
निक्ष मे सर्वान् दुर्हार्दो निक्ष मे द्विषतो मणे ॥१९,२९.१॥

हे दर्भमणे (विदारक शक्ति) ! आप हमारे शत्रुओं पर शस्त्र प्रहार करें। हमारे प्रति सैन्यबल गठित करने वाले विद्रोहियों को, दुष्टात्माओं को तथा हमसे द्वेष रखने वालों को भी आप शस्त्र प्रहार करके समाप्त करें ॥१९,२९.१॥

तृन्द्धि दर्भ सपत्नान् मे तृन्द्धि मे पृतनायतः ।
तृन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दो तृन्द्धि मे द्विषतो मणे ॥१९,२९.२॥

हे दर्भमणे ! आप वैरियों का उच्छेदन करें । सैन्यबल एकत्र करने वाले विद्रोहियों, दुष्टों और द्वेष करने वालों को उच्छेदन करके उन्हें समाप्त करें ॥१९,२९.२॥

रुन्द्धि दर्भ सपत्नान् मे रुन्द्धि मे पृतनायतः ।
रुन्द्धि मे सर्वान् दुर्हार्दो रुन्द्धि मे द्विषतो मणे ॥१९,२९.३॥

हे दर्भमणे ! आप हमारे वैरियों तथा हमारे प्रति सैन्यदल का गठन करने वालों को सँध (रौंद) दें । दुष्टों और हमसे द्वेष रखने वाले वैरियों को भी आप रौंद डालें ॥१९,२९.३॥

मृण दर्भ सपत्नान् मे मृण मे पृतनायतः ।
मृण मे सर्वान् दुर्हार्दो मृण मे द्विषतो मणे ॥१९,२९.४॥

हे दर्भमणे ! आप हमारे विरोधियों तथा सैन्यदल तैयार करने वाले वैरियों का संहार करें । आप दुष्टों और द्वेषभाव रखने वाले हमारे शत्रुओं का भी संहार करें ॥१९,२९.४॥

मन्थ दर्भ सपत्नान् मे मन्थ मे पृतनायतः ।
मन्थ मे सर्वान् दुर्हार्दो मन्थ मे द्विषतो मणे ॥१९,२९.५॥

हे दर्भमणे ! आप हमारे विद्रोही शत्रुओं तथा सैन्यबल का गठन करने वाले शत्रुओं को भी मथ डालें । दुष्ट हृदयवालों और हमसे द्वेष रखने वाले शत्रुओं को भी मथ डालें ॥१९,२९.५॥

पिण्ड्ढि दर्भ सपत्नान् मे पिण्ड्ढि मे पृतनायतः ।

पिण्ड्ढि मे सर्वान् दुर्हार्दो पिण्ड्ढि मे द्विषतो मणे ॥१९,२९.६॥

हे दर्भमणे ! आप हमारे शत्रुओं के अहंकार को तथा सैन्य शक्ति का गठन करने वाले शत्रुओं को भी चूर्ण करें । आप दुष्ट स्वभाव वालों और हमसे वैरभाव रखने वाले शत्रुओं के अहं भाव को चूर्ण करें ॥१९,२९.६॥

ओष दर्भ सपत्नान् मे ओष मे पृतनायतः ।
ओष मे सर्वान् दुर्हार्दो ओष मे द्विषतो मणे ॥१९,२९.७॥

हे दर्भमणे ! आप हमारे विद्रोहियों तथा सैन्यबल एकत्र करने वाले विद्रोहियों को भी भस्म करें । दुष्ट हृदय तालों और हमसे द्वेष रखने वाले शत्रुओं को भी आप भस्मासात् कर डालें ॥१९,२९.७॥

दह दर्भ सपत्नान् मे दह मे पृतनायतः ।
दह मे सर्वान् दुर्हार्दो दह मे द्विषतो मणे ॥१९,२९.८॥

हे दर्भमणे ! आप हमारे विरोधियों तथा सैन्य बल का गठन करने वाले शत्रुओं को दग्ध करें । संवेदना शून्य विरोधियों और द्वेष-दुर्भाव रखने वाले शत्रुओं को भी आप दग्ध करें ॥१९,२९.८॥

जहि दर्भ सपत्नान् मे जहि मे पृतनायतः ।
जहि मे सर्वान् दुर्हार्दो जहि मे द्विषतो मणे ॥१९,२९.९॥

हे दर्भमणे ! आप हमारे विद्रोहियों तथा सैन्य बल का गठन करने वाले विद्रोहियों को भी मार गिराएँ। संवेदनारहित सभी दुष्टों और हमसे विद्वेष रखने वाले शत्रुओं का भी आप संहार करें ॥१९,२९.९॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ३० – दर्भमणि सूक्त

दर्भमणि की स्तुति तथा दर्भमणि की गाँठों में सुरक्षा कवच

यत्ते दर्भ जरामृत्यु शतं वर्मसु वर्म ते ।
तेनेमं वर्मिणं कृत्वा सपत्नां जहि वीर्यैः ॥१९,३०.१॥

है दर्भमणे ! आप में वृद्धावस्था के उपरान्त ही मृत्यु होने की शक्तियाँ सन्निहित हैं। जीर्णता और मृत्यु को दूर रखने वाला आपका जो कवच है, उससे इसे सुरक्षा प्रदान करें। अपनी सामर्थ्य से शत्रुओं का संहार करें ॥१९,३०.१॥

शतं ते दर्भ वर्माणि सहस्रं वीर्याणि ते ।
तमस्मै विश्वे त्वां देवा जरसे भर्तवा अदुः ॥१९,३०.२॥

हे दर्भमणे ! आपके सैकड़ों कवच और हजारों वीर्य (पराक्रम) हैं । समस्त देवों ने इस व्यक्ति की जरावस्था को दूर करने के निमित्त कवचरूप में और पोषण के लिए आपको ही नियुक्त किया है ॥१९,३०.२॥

त्वामाहुर्देववर्म त्वां दर्भ ब्रह्मणस्पतिम् ।
त्वामिन्द्रस्याहुर्वर्म त्वं राष्ट्राणि रक्षसि ॥१९,३०.३॥

है दर्भमणे ! आपको देवों को कवच कहा जाता है । आपको ही ब्रह्मणस्पति के नाम से पुकारा जाता है तथा आपको ही देवराज इन्द्रदेव का कवच भी कहा गया है । आप राष्ट्रों की रक्षा करें ॥१९,३०.३॥

सपत्नक्षयणं दर्भ द्विषतस्तपनं हृदः ।
मणिं क्षत्रस्य वर्धनं तनूपानं कृणोमि ते ॥१९,३०.४॥

हे दर्भ ! हम आपको शत्रुओं (विकारों) का नाश करने में समर्थ तथा विद्वेषियों के हृदय को सन्तप्त करने वाला मानते हैं । क्षात्रबल को समृद्ध करते हुए शारीरिक संरक्षक के रूप में आपको नियुक्त करते हैं ॥१९,३०.४॥

यत्समुद्रो अभ्यक्रन्दत्पर्जन्यो विद्युता सह ।
ततो हिरन्ययो बिन्दुस्ततो दर्भो अजायत ॥१९,३०.५॥

जलवर्षक मेघ विद्युत् के साथ गर्जना करते हैं, उससे स्वर्णमय जल बिन्दु और उससे कुशा की उत्पत्ति हुई ॥१९,३०.५॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ३१ – औदुम्बरमणि सूक्त

औदंबरमणि की स्तति, पुरुषों, पशुओं, अन्न तथा औषधियों की अधिकता की कामना तथा सरस्वती देवी की स्तुति

औदुम्बरेण मणिना पुष्टिकामाय वेधसा ।
पशूणां सर्वेषां स्फातिं गोष्ठे मे सविता करत्॥१९,३१.१॥

ज्ञानी अथवा विधाता ने औदुम्बर मणि से सभी प्रकार की पुष्टि चाहने वालों के लिए एक प्रयोग किया था, जिससे सवितादेव हमारे गोष्ठ में सभी प्रकार के पशुओं को बढ़ाएँ ॥१९,३१.१॥

यो नो अग्निर्गार्हपत्यः पशूनामधिपा असत्।
औदुम्बरो वृषा मणिः सं मा सृजतु पुष्ट्या ॥१९,३१.२॥

जो गार्हपत्य अग्नि हमारे पशुओं के अधिपति हैं, वे इस शक्ति-सम्पन्न औदुम्बर मणि को मारी पुष्टि के लिए सृजित करें ॥१९,३१.२॥

करीषिणीं फलवतीं स्वधामिरां च नो गृहे ।
औदुम्बरस्य तेजसा धाता पुष्टिं दधातु मे ॥१९,३१.३॥

धातादेव औदुम्बर मणि की तेजस्विता से हमारे अन्दर परिपुष्टता को प्रतिष्ठित करें। गोबर की खाद से परिपूर्ण करने वाली गौ सन्तानों (बछड़ों) से युक्त होकर हमें अन्न और दुग्ध आदि पर्याप्त मात्रा में प्रदान करे ॥१९,३१.३॥

यद्द्विपाच्च चतुष्पाच्च यान्यन्नानि ये रसाः ।
गृह्णेऽहं त्वेषां भूमानं बिभ्रदौदुम्बरं मणिम् ॥१९,३१.४॥

औदुम्बर मणि को धारण करके हम द्विपाद मनुष्यों, चतुष्पाद पशुओं तथा अन्य अन्नों तथा विविध रसों को प्रचुर मात्रा में उपलब्ध करते हैं ॥१९,३१.४॥

पुष्टिं पशूनां परि जग्रभाहं चतुष्पदां द्विपदां यच्च धान्यम् ।
पयः पशूनां रसमोषधीनां बृहस्पतिः सविता मे नि यच्छात्॥१९,३१.५॥

हम मनुष्यों, गौ आदि पशुओं तथा धान्यादि के लिए पोषक तत्त्व प्राप्त करें। सवितादेव और बृहस्पतिदेव पशुओं के सारभूत दूध और ओषधियों के रस हमें प्रदान करें ॥१९,३१.५॥

अहं पशूनामधिपा असानि मयि पुष्टं पुष्टपतिर्दधातु ।
मह्यमौदुम्बरो मणिर्द्रविणानि नि यछतु ॥१९,३१.६॥

हम पशुओं के अधिपति हों (स्वामी हों) । पुष्टि के अधिष्ठाता औदुम्बरमणि हमारे पशुओं की वृद्धि करे तथा हमें धन-सम्पदा प्रदान करे ॥१९,३१.६॥

उप मौदुम्बरो मणिः प्रजया च धनेन च ।
इन्द्रेण जिन्वितो मणिरा मागन्त्सह वर्चसा ॥१९,३१.७॥

औदुम्बर मणि प्रजा और वैभव के साथ हमें उपलब्ध हुई हैं । यह मणि इन्द्रदेव की प्रेरणा से तेजस्विता के साथ हमारे समीप आयी है ॥१९,३१.७॥

देवो मणिः सपत्नहा धनसा धनसातये ।
पशोरन्नस्य भूमानं गवां स्फातिं नि यछतु ॥१९,३१.८॥

देवसंज्ञक यह औदुम्बरमणि शत्रुओं की संहारक तथा अभीष्ट धन-सम्पदा की प्रदात्री है । यह मणि अन्य पशुओं के साथ हमारे गोधन की वृद्धि करे ॥१९,३१.८॥

यथाग्रे त्वं वनस्पते पुष्ठ्या सह जज्ञिषे ।

एवा धनस्य मे स्फातिमा दधातु सरस्वती ॥१९,३१.९॥

हे वनस्पतियों की रक्षक, औदुम्बरमणे ! आप जिस प्रकार ओषधियों, वनस्पतियों के साथ उत्पन्न होकर पुष्टि और वृद्धि को प्राप्त हुई हैं, उसी प्रकार सरस्वती देवी हमारे निमित्त धन-वैभव की वृद्धि करें ॥१९,३१.९॥

आ मे धनं सरस्वती पयस्फातिं च धान्यम् ।
सिनीवाल्युपा वहादयं चौदुम्बरो मणिः ॥१९,३१.१०॥

सरस्वती, सिनीवाली और औदुम्बरमणि, धन-धान्य और दुग्धादि वैभव को लेकर हमारे समीप पधारें ॥१९,३१.१०॥

त्वं मणीणामधिपा वृषासि त्वयि पुष्टं पुष्टपतिर्जजान ।
त्वयीमे वाजा द्रविणानि सर्वौदुम्बरः स त्वमस्मत्सहस्वारादारादरातिममतिं क्षुधं च ॥१९,३१.११॥

आप सभी मणियों की अधिपति और बलवान् हैं। पुष्टिपति ब्रह्मा ने आप में सभी पोषक तत्वों को भर दिया है। विभिन्न प्रकार के अन्न और धन आपमें सन्नहित हैं, ऐसी हे औदुम्बरमणे ! आप कृपणता, दुर्बुद्धि और भूख को हमसे दूर हटाएँ ॥१९,३१.११॥

ग्रामणीरसि ग्रामणीरुत्थाय अभिषिक्तोऽभि मा सिञ्च वर्चसा ।
तेजोऽसि तेजो मयि धारयाधि रयिरसि रयिं मे धेहि ॥१२॥

हे औदुम्बरमणे ! आप ग्राम की नेता हैं ।आप समूह से उठकर अभिषिक्त हों और हमें भी अपने वर्चस् से अभिषिक्त करें। आप तैजरूपा हैं, हममें तेजस्विता स्थापित करें आप धनरूपा हैं, हमें भी धन-धान्य प्रदान करें। ॥१९,३१.१२॥

पुष्टिरसि पुष्ट्या मा समङ्ग्धि गृहमेधी गृहपतिं मा कृणु ।
औदुम्बरः स त्वमस्मासु धेहि रयिं च नः सर्ववीरं नि यछ
रायस्पोषाय प्रति मुञ्चे अहं त्वाम् ॥१९,३१.१३॥

आप पुष्टिरूपा हैं, हमें भी पुष्ट बनाएँ । आप गृहमेधा हैं, हमें भी गृहपति की योग्यता प्रदान करें । ऐसी हे औदुम्बरमणे ! हममें ऐश्वर्य को प्रतिष्ठित करें, पु-पौत्रादि प्रदान करें । हम आपको धन-सम्पदा की वृद्धि के लिए धारण करते हैं ॥१९,३१.१३॥

अयमौदुम्बरो मणिर्वीरो वीराय बध्यते ।
स नः सनिं मधुमतीं कृणोतु रयिं च नः सर्ववीरं नि यछात्॥१९,३१.१४॥

यह औदुम्बर मणि स्वयं वीररूप है, इसीलिए वीरों को बाँधी जाती है। यह मणि हमें मधुर रसों के साथ धन-धान्यादि वैभव तथा वीर संतानें प्रदान करे ॥१९,३१.१४॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ३२ – दर्भ सूक्त

उग्र औषधि दर्भ का वर्णन

शतकाण्डो दुश्च्यवनः सहस्रपर्ण उत्तिरः ।
दर्भो य उग्र ओषधिस्तं ते बध्नाम्यायुषे ॥१९,३२.१॥

हे मनुष्य ! जो असंख्य (गाँठों) काण्डों से युक्त, कठिनाई से (नष्ट करने) हटाने योग्य, हजारों पत्तों से युक्त, सभी ओषधियों से श्रेष्ठ, प्रचण्ड शक्तिसम्पन्न 'दर्भरूप' ओषधि है, उसे हम आपके दीर्घायु के निमित्त बाँधते हैं॥१९,३२.१॥

नास्य केशान् प्र वपन्ति नोरसि ताडमा घ्नते ।
यस्मा अछिन्नपर्णेन दर्भेन शर्म यछति ॥१९,३२.२॥

(जिसे पुरुष के निमित्त) अखण्डित पत्तों वाला दर्भ सुख पहुँचाता है, उसके केशों को यमराज नहीं उखाड़ते। उसके वक्षस्थल को पीटते हुए उसे मारते भी नहीं हैं ॥१९,३२.२॥

दिवि ते तूलमोषधे पृथिव्यामसि निष्ठितः ।
त्वया सहस्रकाण्डेनायुः प्र वर्धयामहे ॥१९,३२.३॥

हे ओषधे ! आपका शिखा भाग आकाश में है और पृथ्वी पर आप स्थिर हैं। आपके असंख्य काण्डों द्वारा हमें अपनी आयु को बढ़ाते हैं ॥१९,३२.३॥

तिस्रो दिवो अत्यतृणत्तिस्र इमाः पृथिवीरुत ।
त्वयाहं दुर्हार्दो जिह्वां नि तृणद्मि वचांसि ॥१९,३२.४॥

(हे दर्भ !) आप त्रिवृत् द्युलोक और त्रिवृत् पृथ्वी को चीरकर उनमें संव्याप्त हो रहे हैं। आपके द्वारा हम संवेदना शून्य शत्रुओं की जिह्वा और कटुभाषी वाणियों को नष्ट कर डालते हैं ॥१९,३२.४॥

त्वमसि सहमानोऽहमस्मि सहस्वान् ।
उभौ सहस्वन्तौ भूत्वा सपत्नान् सहिषीवहि ॥१९,३२.५॥

आप जीतने में सक्षम हैं, हम भी संघर्ष की सामर्थ्य से युक्त हैं। हम दोनों परस्पर मिलकर, सामर्थ्य से युक्त होकर अपने शत्रुओं का दमन कर देंगे ॥१९,३२.५॥

सहस्व नो अभिमातिं सहस्व पृतनायतः ।

सहस्व सर्वान् दुर्हार्दः सुहार्दो मे बहून् कृधि ॥१९,३२.६॥

(हे दर्भ !) आप हमारे शत्रुओं को दबाएँ। सभी दुष्ट हृदय वाले शत्रुओं तथा सैन्यदल द्वारा आक्रमण करने वाले शत्रुओं को पराभूत करें तथा हमारे मित्रों की वृद्धि करें ॥१९,३२.६॥

दर्भेण देवजातेन दिवि ष्टम्भेन शश्वदित्।
तेनाहं शश्वतो जनामसनं सनवानि च ॥१९,३२.७॥

देवताओं के द्वारा उत्पन्न किये गये 'दर्भ' द्वारा और द्युलोक के स्तम्भरूप 'दर्भमणि' द्वारा हम दीर्घजीवी संतानों को प्राप्त करें ॥१९,३२.७॥

प्रियं मा दर्भ कृणु ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च ।
यस्मै च कामयामहे सर्वस्मै च विपश्यते ॥१९,३२.८॥

हे दर्भ ! ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मणों, क्षात्रतेज सम्पन्न क्षत्रियों, शूद्रों और आर्यश्रेष्ठों के लिए हम जिस प्रकार प्रियपात्र बन सकें, वैसा हमें बनाएँ। हम जिसके प्रति प्रेमपूर्ण व्यवहार करते हैं, उनके लिए आप भी हमें प्रियपात्र बनाएँ ॥१९,३२.८॥

यो जायमानः पृथिवीमदंहद्यो अस्तभ्नादन्तरिक्षं दिवं च ।

यं बिभ्रतं ननु पाप्मा विवेद स नोऽयं दर्भो वरुणो दिवा कः ॥१९,३२.९॥

जिस 'दर्भ ने उत्पन्न होते ही सम्पूर्ण पृथ्वी को सुदृढ़ कर दिया, जिसने अन्तरिक्ष और द्युलोक को स्थिर किया। जिसके धारणकर्ता को पाप संव्याप्त नहीं करता है । वह वरुणदेव की भाँति हमें प्रकाशित करे ॥१९,३२.९॥

सपत्नहा शतकाण्डः सहस्वान् ओषधीनां प्रथमः सं बभूव ।
स नोऽयं दर्भः परि पातु विश्वतस्तेन साक्षीय पृतनाः पृतन्यतः ॥१९,३२.१०॥

शत्रुसंहारक, शतकाण्डों से सम्पन्न, शक्तिमान् 'दर्भ' ओषधियों में प्रमुख बनकर प्रकट हुआ है । ऐसा 'दर्भ चारों ओर से हमारी रक्षा करे । हम सैन्यशक्ति के अभिलाषी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करें ॥१९,३२.१०॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ३३ -दर्भ सूक्त

सौ गांठों वाली दर्भ ओषधि की स्तुति, दर्भ नाम का रक्षा साधन शक्ति संपन्न

सहस्रार्घः शतकाण्डः पयस्वान् अपामग्निर्वीरुधां राजसूयम्।
स नोऽयं दर्भः परि पातु विश्वतो देवो मणिरायुषा सं सृजाति नः ॥१९,३३.१॥

अतिमूल्यवान् , सैकड़ों काण्डों से युक्त, दुग्धयुक्त जल, अग्नि, ओषधि एवं राजसूय यज्ञ की शक्ति एवं प्रभाव से सम्पन्न यह 'दर्भमणि' हमें सभी प्रकार से सुरक्षा प्रदान करे तथा दीर्घ आयुष्य प्रदान करे ॥१९,३३.१॥

घृतादुल्लुप्तो मधुमान् पयस्वान् भूमिद्दंहोऽच्युतश्च्यावयिष्णुः ।
नुदन्त्सपत्नान् अधरांश्च कृण्वन् दर्भा रोह महतामिन्द्रियेण ॥१९,३३.२॥

हे दर्भ ! आप घृत (तेज) से सिञ्चित, मधुमय दुग्ध से युक्त, अपनी जड़ों से पृथ्वी को सुदृढ़ करने वाले, क्षयरहित तथा शत्रुओं को च्युत करने वाले हैं। आप शत्रुओं को दूर हटाते हुए उन्हें पतित करें तथा इन्द्रियों की सामर्थ्य को बढ़ाएँ ॥१९,३३.२॥

त्वं भूमिमत्येष्योजसा त्वं वेद्यां सीदसि चारुरध्वरे ।
त्वां पवित्रमृषयोऽभरन्त त्वं पुनीहि दुरितान्यस्मत्॥१९,३३.३॥

(हे दर्भ) आप अपनी शक्ति से भूमि को लाँघ जाते तथा यज्ञवेदी पर सुन्दरढंग से विराजमान होते हैं। अषियों ने स्वयं को पवित्र बनाने के लिए आपको धारण किया। आप पापों को दूर करके हमें भी पावन बनाएँ ॥१९,३३.३॥

तीक्ष्णो राजा विषासही रक्षोहा विश्वचर्षणिः ।
ओजो देवानां बलमुग्रमेतत्तं ते बध्नामि जरसे स्वस्तये ॥१९,३३.४॥

यह दर्भ तीक्ष्ण, राजा के तुल्य श्रेष्ठ, शत्रुओं को पराभूत करने वाला, असुर संहारक, सभी प्राणियों का द्रष्टा तथा इन्द्रादि देवों की ओजस्विता एवं उग्रबल का हेतु है । हम

ऐसे दर्भ को वृद्धावस्था के कल्याण के लिए(आपके साथ बाँधते हैं ॥१९,३३.४॥

दर्भेण त्वं कृणवद्वीर्याणि दर्भं बिभ्रदात्मना मा व्यथिष्ठाः ।
अतिष्ठाय वर्चसाधान्यान्त्सूर्य इवा भाहि प्रदिशश्चतस्रः
॥१९,३३.५॥

हे वीर पुरुष ! आप'दर्भ' की शक्ति से पराक्रमी कर्म करें । इसे धारण करके अपने मन में स्वयं दुखी न हों। अपनी सामर्थ्य से दूसरों को प्रभावित करते हुए सूर्य के समान हीं चारों दिशाओं को प्रकाशित करें ॥१९,३३.५॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ३४ – जङ्गिड़मणि सूक्त

जंगिड़ नामक जड़ीबूटी का वर्णन तथा जंगिड मणि की महिमा

जाङ्गिडोऽसि जङ्गिडो रक्षितासि जङ्गिदः ।
द्विपाच्चतुष्पादस्माकं सर्वं रक्षतु जङ्गिदः ॥१९,३४.१॥

हे जङ्गिड़मणे ! आप सभी भय से हमें संरक्षण प्रदान करने वाली हैं। हमारे द्विपाद (मनुष्य समुदाय) और चतुष्पाद (गौ आदि पशुओं) की यह जङ्गिड़ मणि सुरक्षा करे ॥१९,३४.१॥

या गृत्स्यस्त्रिपञ्चाशीः शतं कृत्याकृतश्च ये ।
सर्वान् विनक्तु तेजसोऽरसां जङ्गिदस्करत्॥१९,३४.२॥

जो हिंसक कृत्याएँ एक सौ पचास की संख्या में हैं और जो सौ हिंसक कर्म करने वाले हैं, उन सभी को यह जङ्गिड़ मणि अपनी तेजस्विता से सत्त्वरहित करके उन्हें हमसे दूर करें ॥१९,३४.२॥

अरसं कृत्रिमं नादमरसाः सप्त विस्रसः ।

अपेतो जङ्गिडामतिमिषुमस्तेव शातय ॥१९,३४.३॥

(अभिचार कृत्य से प्रकट हुई) बनावटी ध्वनि को यह जङ्गिड़मणि सत्त्वहीन करे । हानिकारक सातों प्रवाह रसहीन हों। आप यहाँ से दुर्मति को उसी प्रकार दूर हटाएँ, जिस प्रकार बाण चलाने वालाशत्रुओं को दूर करता है ॥१९,३४.३॥

कृत्यादूषण एवायमथो अरातिदूषणः ।
अथो सहस्वाञ्जङ्गिडः प्र न आयुम्षि तारिषत्॥१९,३४.४॥

यह जङ्गिड़मणि हिंसक कृत्याओं को विनष्ट करने वाली है। यह शत्रुओं का विनाश करने वाली है। यह जङ्गिड़मणि सामर्थ्यशाली है । यह मणि हमारी आयु को बढ़ाए ॥१९,३४.४॥

स जङ्गिडस्य महिमा परि णः पातु विश्वतः ।
विष्कन्धं येन सासह संस्कन्धमोज ओजसा ॥१९,३४.५॥

जङ्गिड़मणि अपनी महत्ता द्वारा सभी दिशाओं से हमारी रक्षा करे । अपने ओज से वात-व्याधि को समूल नष्ट करे । संस्कन्ध रोग को हम इसी मणि की शक्ति से दूर करते हैं ॥१९,३४.५॥

त्रिष्ट्वा देवा अजनयन् निष्ठितं भूम्यामधि ।
तमु त्वाङ्गिरा इति ब्राह्मणाः पूर्व्या विदुः ॥१९,३४.६॥

पृथ्वी पर स्थायित्व प्रदान करने वाली (जङ्गिड) तुम्हें देवताओं ने तीन बार के प्रयास से उत्पन्न किया है । इसके विषय में पूर्वकालीन ब्राह्मण और अंगिरा ऋषि भली प्रकारे जानते हैं ॥१९,३४.६॥

न त्वा पूर्वा ओषधयो न त्वा तरन्ति या नवाः ।
विबाध उग्रो जङ्गिडः परिपाणः सुमङ्गलः ॥१९,३४.७॥

हे जङ्गिड़मणे ! पूर्व में पैदा हुई ओषधियाँ और जो नूतन ओषधियाँ हैं, वे भी सामर्थ्य में आपको नहीं लाँघ सकती हैं। आप रोगों के लिए विशेष रूप से अवरोध पैदा करने वाली, उमरूप तथा हमारे लिए श्रेष्ठ मंगलकारी संरक्षक के समान हैं ॥१९,३४.७॥

अथोपदान भगवो जाङ्गिडामितवीर्य ।
पुरा त उग्रा ग्रसत उपेन्द्रो वीर्यं ददौ ॥१९,३४.८॥

भगवान् की शक्ति के प्रतिनिधि हे जङ्गिड़मणे ! पराक्रमी शत्रु आपको अपना ग्रास बनाकर समाप्त न करें, इसलिए

देवराज इन्द्र ने आपमें प्रचण्ड शक्ति की स्थापना की है ॥१९,३४.८॥

उग्र इत्ते वनस्पत इन्द्र ओज्मानमा दधौ ।
अमीवाः सर्वाश्चातयं जहि रक्षांस्योषधे ॥१९,३४.९॥

हे जङ्गि॑ड़मणे ! इन्द्रदेव ने आपमें शक्ति की स्थापना की हैं । हे ओषधे ! आप सभी रोगों को विनष्ट करते हुए भय के मूल कारण असुरों का विनाश करें ॥१९,३४.९॥

आशरीकं विशरीकं बलासं पृष्ट्यामयम् ।
तक्मानं विश्वशारदमरसां जङ्गि॑डस्करत्॥१९,३४.१०॥

शरीर को हानि पहुँचाकर उसको नष्ट करने वाले रोगों, खाँसी, पृष्ठ भाग के रोगों तथा शरद् ऋतु में प्रभावित करने वाले ज्वर आदि विभिन्न रोगों को यह जङ्गि॑ड़मणि निस्सार करके नष्ट कर देती है ॥१९,३४.१०॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ३५ – जङ्गिड़ सूक्त

महा रोग नाशक जंगिड़ मणि का वर्णन

इन्द्रस्य नाम गृह्णन्त ऋसयो जङ्गिदं ददुः ।
देवा यं चक्रुर्भेषजमग्रे विष्कन्धदूषणम् ॥१९,३५.१॥

जिस (जङ्गिड़) को देवताओं ने सर्वप्रथम तैयार किया था। ऋषियों ने इन्द्रदेव की साक्षी में उस जङ्गिडमणि को (रोगोपचार हेतु) प्रदान किया ॥१९,३५.१॥

स नो रक्षतु जङ्गिडो धनपालो धनेव ।
देवा यं चक्रुर्ब्राह्मणाः परिपाणमरातिहम् ॥१९,३५.२॥

जिस प्रकार कोषाध्यक्ष प्रयत्नपूर्वक धन की सुरक्षा करता है, उसी प्रकार यह जङ्गिड़मणि हमें संरक्षण प्रदान करे, जिसे देवों और ब्रह्मनिष्ठों ने संरक्षक और शत्रुनाशक के रूप में बनाया है ॥१९,३५.२॥

दुर्हार्दः संघोरं चक्षुः पापकृत्वानमागमम् ।

तांस्त्वं सहस्रचक्षो प्रतीबोधेन नाशय परिपाणोऽसि जङ्गिडः ॥१९,३५.३॥

सहस्र नेत्रों से युक्त हे जङ्गिड़मणे ! आप दुष्ट हृदय वाले शत्रु की क्रूर दृष्टि को, हिंसा आदि पापकर्म करने वाले को तथा विनाश की इच्छा से आये हुए व्यक्ति को अपनी सजगदृष्टि से विनष्ट करें; क्योंकि आप सबके संरक्षक रूप में विख्यात हैं ॥१९,३५.३॥

परि मा दिवः परि मा पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात्परि मा वीरुद्भ्यः ।
परि मा भूतात्परि मोत भव्याद्दिशोदिशो जङ्गिडः पात्वस्मान् ॥१९,३५.४॥

यह जङ्गिड़मणि दिव्यलोक, अन्तरिक्ष, पृथ्वीलोक, ओषधियों, भूतकाल में हो चुकी और भविष्य में होने वाली घटनाओं से, दिशाओं और उपदिशाओं से होने वाले सभी प्रकार के अनिष्टों से हमें संरक्षण प्रदान करे ॥१९,३५.४॥

य ऋष्णवो देवकृता य उतो ववृतेऽन्यः ।
सर्वां स्तान् विश्वभेषजोऽरसां जङ्गिडस्करत्॥१९,३५.५॥

जो देवों द्वारा विनिर्मित हिंसक-कर्म और मनुष्यों से प्रेरित हिंसककृत्य हैं, उन सभी को सर्व चिकित्सक जङ्गिड़मणि सारहीन करे ॥१९,३५.५॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ३६ – शतवारमणि सूक्त

राजयक्ष्मा अर्थात टीबी रोग नाशक शतवार औषधि का वर्णन तथा पागलपन व अन्यरोगों का निवारण

शतवारो अनीनशद्यक्ष्मान् रक्षांसि तेजसा ।
आरोहन् वर्चसा सह मणिर्दुर्णामचातनः ॥१९,३६.१॥

(सैकड़ों रोगों की निवारको शतवार नामक ओषधि (मणि) अपने प्रभाव से रोगों को विनष्ट करे। शरीर से बाँधे जाने पर कुत्सित नाम वाले त्वचा रोगों की निवारक यह मणि अपनी तेजस्विता से शरीर के विकारों को भी भस्मसात् करे ॥१९,३६.१॥

शृङ्गाभ्यां रक्षो नुदते मूलेन यातुधान्यः ।
मध्येन यक्ष्मं बाधते नैनं पाप्माति तत्रति ॥१९,३६.२॥

यह शतवारमणि सींगों (अपने अग्रिम भागों) से आसुरीवृत्तियों को दूर करती है । मूलभाग से यातना देने वाले रोगों को दूर करती है तथा मध्य (काण्ड) भाग से

समस्त रोगों का निवारण करती है। इसे कोई भी रोग (पाप) लाँघ (कर बढ़) नहीं सकता ॥१९,३६.२॥

ये यक्ष्मासो अर्भका महान्तो ये च शब्दिनः ।
सर्वां दुर्णामहा मणिः शतवारो अनीनशत्॥१९,३६.३॥

जो अविकसित सूक्ष्म बीजरूप (यक्ष्मा आदि) रोग हैं, जो वृद्धि को प्राप्त हुए रोग हैं तथा जो शब्द करने वाले असाध्य रोग हैं, उन सबको यह दुष्ट नाम वाले रोगों की संहारक शतवार मणि समूल नष्ट करे ॥१९,३६.३॥

शतं वीरान् अजनयच्छतं यक्ष्मान् अपावपत्।
दुर्णाम्नः सर्वान् हत्वाव रक्षांसि धूनुते ॥१९,३६.४॥

यह (मणि) सौ(सैंकड़ों) वीरों (रोगनाशक शक्तियों) को जन्म देती है, सैकड़ों रोगों का निवारण करती है तथा सभी दुष्ट नाम वालों को नष्ट करके राक्षसों (रोगबीजों) या दुष्ट प्रवृत्तियों को कँपा देती है ॥१९,३६.४॥

हिरण्यशृङ्ग ऋषभः शातवारो अयं मणिः ।
दुर्णाम्नः सर्वांस्तृध्वाव रक्षांस्यक्रमीत्॥१९,३६.५॥

स्वर्ण की तरह चमकते हुए सींग (अगले भागों वाली, सभी ओषधियों में शक्तिशाली यह शतवार मणि कुत्सित नाम वाले सभी रोगों को विनष्ट करके रोगाणुओं को दूर कर देती है ॥१९,३६.५॥

शतमहं दुर्णाम्नीनां गन्धर्वाप्सरसां शतम् ।
शतं शश्वन्वतीनां शतवारेण वारये ॥१९,३६.६॥

गन्धर्व और अप्सरस् नामक देवयोनि के सैकड़ों रोगों को तथा उपचार के बाद भी बार-बार पीड़ा पहुँचाने वाले सैकड़ों रोगों को मैं इस शतवार नामक ओषधि (मणि) के द्वारा दूर करता हूँ ॥१९,३६.६॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ३७ – बलप्राप्ति सूक्त

अग्नि की स्तुति तथा प्रसन्नता के लिए यज्ञ

इदं वर्चो अग्निना दत्तमागन् भर्गो यशः सह ओजो वयो बलम् ।
त्रयस्त्रिंशद्यानि च वीर्याणि तान्यग्निः प्र ददातु मे ॥१९,३७.१॥

अग्निदेव हमें वर्चस्, तेजस्, यश, साहस, ओज, आयु (शारीरिक) बल प्रदान करते हैं । देवों के जो तैंतीस प्रकार के वीर्य (पराक्रम) हैं, अग्निदेव के अनुग्रह से हम उनके अधिकारी बने ॥१९,३७.१॥

वर्च आ धेहि मे तन्वां सह ओजो वयो बलम् ।
इन्द्रियाय त्वा कर्मणे वीर्याय प्रति गृह्णामि शतशारदाय ॥१९,३७.२॥

हे अग्ने ! आप हमारे शरीर में तेजस्विता, ओजस्विता, सत्साहस, सामर्थ्य और पराक्रम की स्थापना करें। हम इन्द्रियों की सुदृढ़ता, यज्ञादि कर्मों की सिद्धि और सौ वर्ष

की आयु प्राप्ति के लिए आपको धारण करते हैं ॥१९,३७.२॥

ऊर्जे त्वा बलाय त्वौजसे सहसे त्वा ।
अभिभूयाय त्वा राष्ट्रभृत्याय पर्यूहामि शतशारदाय ॥१९,३७.३॥

हम अन्न, बल, ओजस्विता और साहसिकता की वृद्धि के लिए, शत्रुओं को परास्त करने, राष्ट्र की सेवा करने तथा सौ वर्ष की दीर्घ आयु प्राप्त करने के लिए हम आपको (अग्नि की प्रेरणाओं को) धारण करते हैं ॥१९,३७.३॥

धात्रे विधात्रे समृधे भूतस्य पतये यजे ॥१९,३७.४॥

भीष्म आदि ऋतुओं, ऋतु-सम्बन्धी देवों, महीनों, संवत्सरों, धातादेव, विधातादेव, समृद्धि के देवता तथा समस्त प्राणियों के अधिपति की प्रसन्नता के लिए हम यज्ञन (यज्ञादि सत्कर्म करते हैं ॥१९,३७.४॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ३८ – यक्ष्मनाशन सूक्त

गुग्गुल नाम की ओषधि का वर्णन

न तं यक्ष्मा अरुन्धते नैनं शपथो अश्नुते ।
यं भेषजस्य गुल्गुलोः सुरभिर्गन्धो अश्नुते ॥१९,३८.१॥

उस मनुष्य को कोई रोग पीड़ित नहीं करता, दूसरों के द्वारा दिये गये अभिशाप, उसे स्पर्श तक नहीं कर पाते हैं, जिसके पास ओषधिरूप गुग्गुल (गुल्गुलु) की श्रेष्ठ सुगन्धि संव्याप्त रहती है ॥१९,३८.१॥

विष्वञ्चस्तस्माद्यक्ष्मा मृगा अश्वा इवेरते ।
यद्गुल्गुलु सैन्धवं यद्वाप्यसि समुद्रियम् ॥१९,३८.२॥

इस गुग्गुल की सुगन्धि से यक्ष्मा आदि रोग उसी प्रकार सभी दिशाओं को पलायन कर जाते हैं, जिस प्रकार शीघ्रगामी अश्व और मृग दौड़ जाते हैं। यह गुग्गुल (गुलालु) नामक ओषधि नदी या समुद्र के तटपर उत्पन्न होती है ॥१९,३८.२॥

उभयोरग्रभं नामास्मा अरिष्टतातये ॥१९,३८.३॥

हम इस रोगी के कल्याण के निमित्त गुग्गुल के दोनों स्वरूपों का वर्णन करते हैं ॥१९,३८.३

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ३९ – कुष्ठनाशन सूक्त

कुष्ठ नामक विशेष ओषधि का वर्णन तथा स्वर्ग में देवों का घर पीपल का वृक्ष

ऐतु देवस्त्रायमाणः कुष्ठो हिमवतस्परि ।
तक्मानं सर्वं नाशय सर्वाश्च यातुधान्यः ॥१९,३९.१॥

कुष्ठ रोग को दूरकर संरक्षण प्रदान करने वाली दिव्य ओषधि हिमालय पर्वत से हमें प्राप्त हो । यह दिव्य ओषधि सभी प्रकार के विकारों का क्षय करते हुए पीड़ादायक रोगों को दूर करे ॥१९,३९.१॥

त्रीणि ते कुष्ठ नामानि नद्यमारो नद्यारिषः ।
नद्यायं पुरुषो रिषत्।
यस्मै परिब्रवीमि त्वा सायंप्रातरथो दिवा ॥१९,३९.२॥

हे ओषधे ! आपके रहस्यमय तीन नाम हैं, जो क्रमशः नद्यमार, नद्यारिष और नद्य कहलाते हैं। जिस पुरुष को हम

प्रातः – सायं और दिन में (ओषधि प्रयोग) बतलाएँ, वह (रोग को) मिटाने में समर्थ हो ॥१९,३९.२॥

जीवला नाम ते माता जीवन्तो नाम ते पिता ।
नद्यायं पुरुषो रिषत्।
यस्मै परिब्रवीमि त्वा सायंप्रातरथो दिवा ॥१९,३९.३॥

हे ओषधे ! आपकी जन्मदात्री माता जीवला (प्राणयुक्त) और पिता जीवन्त (पोषण देने वाले नाम से प्रख्यात हैं । जिस पुरुष को हम प्रातः- सायं और दिन में (ओषधि प्रयोग) बतलाएँ, वह (रोग को) मिटाने में समर्थ हो ॥१९,३९.३॥

उत्तमो अस्योषधीनामनड्वान् जगतामिव व्याघ्रः श्वपदामिव ।
नद्यायं पुरुषो रिषत्।
यस्मै परिब्रवीमि त्वा सायंप्रातरथो दिवा ॥१९,३९.४॥

हे ओषधे !आप रोग निवारक ओषधियों में उसी प्रकार सर्वश्रेष्ठ हैं, जिस प्रकार (खुर वाले) पशुओं में भारवाहक बैल और (पंजे वाले पशुओं में) व्याघ्र सर्वश्रेष्ठ होता है । जिस पुरुष को हम प्रातः, सायं और दिन में (ओषधि प्रयोग) बतलाएँ, वह (रोग को) मिटाने में समर्थ हो ॥१९,३९.४॥

त्रिः शाम्बुभ्यो अङ्गिरेभ्यस्त्रिरादित्येभ्यस्परि ।
त्रिर्जातो विश्वदेवेभ्यः ।
स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति । ॥१९,३९.५॥

समस्त रोगों की निवारक जिस ओषधि को अंगिरावंशज शाम्बुओं, आदित्यदेवों तथा विश्वेदेवों द्वारा तीन प्रकार से प्रकट किया गया है। सोमरस के साथ विद्यमान रहने वाली वह कुछ ओषधि सभी रोगों का निवारण करती है । हे कूट ओषधे ! आप सभी प्रकार के कष्टदायी रोगों और सभी यातना देने वालों को नष्ट करें ॥१९,३९.५॥

अश्वत्थो देवसदनस्तृतीयस्यामितो दिवि ।
तत्रामृतस्य चक्षणं ततः कुष्ठो अजायत ।
स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति । ॥१९,३९.५॥

तृतीय लोक 'दिव्यलोक' में देवशक्तियों का निवास है, वहाँ अग्निदेव अश्वरूप में विद्यमान रहते हैं तथा वहीं अमृत का स्रोत भी है । यह कुष्ठ ओषधि पहले सोम (अमृत) के साथ दिव्यलोक में ही वास करती थी । हे ओषधे ! आप कष्टप्रद रोगों और यातनादायी सभी रोगाणुओं को विनष्ट करें ॥१९,३९.६॥

हिरण्ययी नौरचरद्धिरण्यबन्धना दिवि ।

तत्रामृतस्य चक्षणं ततः कुष्ठो अजायत ।
स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति । ॥१९,३९.७॥

स्वर्णनिर्मित और स्वर्णिम बँटे से बँधी हुई नाव दिव्यलोक में सदा घूमती रहती है। वहीं अमृत की ज्योति है, जहाँ से कुष्ठ की उत्पत्ति हुई है । वह कुष्ठ ओषधि समस्त रोगों को दूर करती है। यहीं कुष्ठ पूर्वकाल में अमृतरूप सोम के साथ वास करती थी। हे कुष्ठ (कुट) ओषधे ! आप कष्टप्रद रोगों और यातनादायी सभी रोगाणुओं को विनष्ट करें ॥१९,३९.७॥

यत्र नावप्रभ्रंशनं यत्र हिमवतः शिरः ।
तत्रामृतस्य चक्षणं ततः कुष्ठो अजायत ।
स कुष्ठो विश्वभेषजः साकं सोमेन तिष्ठति । ॥१९,३९.८॥

जिस (दिव्यलोक) से नीचे नहीं गिरना होता और जहाँ हिमयुक्त पर्वत का शिखर भाग है, जहाँ अमृत की ज्योति है, वहीं कूट ओषधि का प्राकट्य हुआ है। यही कूट सभी रोगों को दूर करती है। यह पहले दिव्यलोक में अमृतरूप सोम के साथ स्थित थी । हे ओषधे ! आप कष्टप्रद सभी रोगों तथा यातनादायी सभी रोगाणुओं को भी विनष्ट करें ॥१९,३९.८॥

यं त्वा वेद पूर्व इक्ष्वाको यं वा त्वा कुष्ठ काम्यः ।
यं वा वसो यमात्स्यस्तेनासि विश्वभेषजः ॥१९,३९.९॥

हे कूट (कुष्ठ) ओषधे ! सभी रोगों का निवारण करने वाली अचूक ओषधिरूप में आपका परिचय सर्वप्रथम राजा इक्ष्वाकु तथा काम के पुत्र ने प्राप्त किया था। वसु ने भी इसी रूप में आपकी जानकारी प्राप्त की थी। इस प्रकार आप सभी रोगों की निवारक श्रेष्ठ ओषधि सिद्ध हों ॥१९,३९.९॥

शीर्षशोकं तृतीयकं सदंदिर्यश्च हायनः ।
तक्मानं विश्वधावीर्याधराञ्चं परा सुव ॥१९,३९.१०॥

हे कूट (कुष्ठ) ! तृतीय द्युलोक आपकी शीर्षभाग है। आप आधि- व्याधियों की निवारक हैं । विभिन्न सामथ्र्यों से सम्पन्न हे ओषधे ! आप कष्टप्रद रोगों को अधोगामी करके सर्वथा दूर करें ॥१९,३९.१०॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ४० – मेधा सूक्त

दोषों को दूर करने के लिए बृहस्पति की स्तुति, जल देवता की प्रशंसा, द्यावा पृथ्वी तथा अश्विनी कुमारों की प्रशंसा

यन् मे छिद्रं मनसो यच्च वाचः सरस्वती मन्युमन्तं जगाम ।
विश्वैस्तद्देवैः सह संविदानः सं दधातु बृहस्पतिः ॥१९,४०.१॥

हमारे जो मानसिक छिद्र (दोष) हैं, जो वाणी के छिद्र (दोष हैं तथा जो क्रोधजन्य दोष हैं, उन सब को समस्त देवशक्तियों के साथ मिलकर बृहस्पतिदेव दूर करें ॥१९,४०.१॥

मा न आपो मेधां मा ब्रह्म प्र मथिष्टन ।
सुष्यदा यूयं स्यन्दध्वमुपहूतोऽहं सुमेधा वर्चस्वी ॥१९,४०.२॥

हे जलदेव ! आप हमारी मेधा को कलुषित न होने दें। हमारे वेदाभ्यास को क्षीण न होने दें । आप सुखपूर्वक प्रवाहित होते रहें । आपके द्वारा अनुगृहीत होकर हम मेधासम्पन्न और ब्रह्मबल से युक्त हों ॥१९,४०.२॥

मा नो मेधां मा नो दीक्षां मा नो हिंसिष्टं यत्तपः ।
शिवा नः शं सन्त्वायुषे शिवा भवन्तु मातरः ॥१९,४०.३॥

(हे द्यावा-पृथिवी !) आप हमारी मेधा को विनष्ट न होने दें। हमारी दीक्षा को हानि न पहुँचने दें । हम जो तप: साधना कर रहे हैं, उसे भी विनष्ट न करें। (जल) हमारी आयु के लिए कल्याणकारी हो । मातृवत् प्रवाह हमारे लिए कल्याणप्रद हो ॥१९,४०.३॥

या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः ।
तामस्मे रासतामिषम् ॥१९,४०.४॥

हे अश्विनीदेवो ! ज्योतिर्मयी (मेधा, विद्या या रात्रि में पूर्णता दे, अन्धकार से पार करे, हमें शक्ति प्रदान करे॥१९,४०.४॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ४१ – राष्ट्रबल सूक्त

तप की दीक्षा

भद्रमिछन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे ।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु
॥(१९,४१.१॥

सबके हितचिन्तक, आत्मज्ञानी श्रेष सृष्टि के प्रारम्भ में तप और दीक्षादि नियमों का पालन करने लगे। उसी से राष्ट्रीय भावना, बल और सामर्थ्य की उत्पत्ति हुई । अतएव ज्ञानी लोग उस (राष्ट्र के समक्ष विनम्र हों (राष्ट्रसेवा करें) ॥(१९,४१.१॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ४२ – ब्रह्मयज्ञ सूक्त

ब्रह्म का वर्णन तथा इंद्र की प्रशंसा

ब्रह्म होता ब्रह्म यज्ञा ब्रह्मणा स्वरवो मिताः ।
अध्वर्युर्ब्रह्मणो जातो ब्रह्मणोऽन्तर्हितं हविः ॥१९,४२.१॥

ब्रह्म ही यज्ञ का होता है । यज्ञ भी ब्रह्मस्वरूप ही है । ब्रह्म से ही सात स्वरों के ज्ञाता (उद्गातृगणीहुए हैं। अध्वर्युगण भी ब्रह्मशक्ति से ही उत्पन्न हुए हैं । ब्रह्मतत्त्व में ही यज्ञीय हवि भी अन्तर्निहित ॥१९,४२.१॥

ब्रह्म स्रुचो घृतवतीर्ब्रह्मणा वेदिरुद्धिता ।
ब्रह्म यज्ञस्य तत्त्वं च ऋत्विजो ये हविष्कृतः ।
शमिताय स्वाहा ॥१९,४२.२॥

घी से भरे हुए सुपात्र, यज्ञवेदी, यज्ञ- प्रक्रिया तथा आहुतियाँ प्रदान करने वाले अंत्वग्गण- ये सभी ब्रह्म (परमात्मतत्त्व) के ही स्वरूप हैं, शान्तिदायक ब्रह्म के लिए ही यह आहुति समर्पित है ॥१९,४२.२॥

अंहोमुचे प्र भरे मनीषामा सुत्राव्णे सुमतिमावृणानः ।
इममिन्द्र प्रति हव्यं गृभाय सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः
॥१९,४२.३॥

पापों से मुक्त कराने वाले, श्रेष्ठ रक्षक (इन्द्र) के प्रति हम अपनी बुद्धि समर्पित करते हैं और स्तुतियों का गान करते हैं। हे इन्द्रदेव ! यह हव्य स्वीकार करें, इस यजमान की कामनाएँ सत्य (पूर्ण) हों ॥१९,४२.३॥

अंहोमुचं व्रषभं यज्ञियानां विराजन्तं प्रथममध्वराणम् ।
अपां नपातमश्विना हुवे धिय इन्द्रियेण त इन्द्रियं दत्तमोजः
॥१९,४२.४॥

पापों से मुक्ति दिलाने वाले, यज्ञीय वर्षा करने वाले, यज्ञों में सर्वोत्तम पद पर विराजमान, जल को न गिरने देने वाले (अग्निदेव) और अश्विनीकुमारों का हम आवाहन करते हैं । वे हमें इन्द्रियशक्ति और बल प्रदान करें ॥१९,४२.४॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ४३ – ब्रह्मा सूक्त

अग्नि आदि देवों की स्तुति सगुण तथा ब्रह्म का स्वरूप जानने वालों कि गति

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह ।
अग्निर्मा तत्र नयत्वग्निर्मेधा दधातु मे ।
अग्नये स्वाहा ॥१९,४३.१॥

दीक्षा के अनुशासनों के पालनकर्ता और तप- साधना करने वाले ब्रह्मवेत्ता जिस परमपद को प्राप्त करते हैं, अग्निदेव हमें वहीं ले जाएँ। वे हमें मेधाशक्ति प्रदान करें। उन्हीं के निमित्त यह आहुति समर्पित हैं ॥१९,४३.१॥

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह ।
वायुर्मा तत्र नयतु वायुः प्रणान् दधातु मे वायवे स्वाहा ॥१९,४३.२॥

दीक्षा के अनुशासनों का पालन करने वाले और तप-साधना करने वाले ब्रह्मवेत्ता जिस परमपद को प्राप्त करते

हैं, वायुदेव हमें वहीं ले जाएँ। वे पंचप्राणों को हममें प्रतिष्ठित करें ।उन्हीं के निमित्त यह आहुति समर्पित हैं। ॥१९,४३.२॥

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह ।
सूर्यो मा तत्र नयतु चक्षुः सूर्यो दधातु मे ।
सूर्याय स्वाहा ॥१९,४३.३॥

दीक्षा के अनुशासनों का पालन करने वाले और तप-साधना करने वाले ब्रह्मवेत्ता जिस परमपद को प्राप्त करते हैं, सूर्यदेव हमें वहीं पहुँचाएँ । वे हममें दर्शनक्षमता स्थापित करें । यह श्रेष्ठ आहुति उन्हीं को समर्पित है॥१९,४३.३॥

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह ।
चन्द्रो मा तत्र नयतु मनश्चन्द्रो दधातु मे ।
चन्द्राय स्वाहा ॥१९,४३.४॥

दीक्षा के अनुशासनों का पालन करने वाले और तप साधना करने वाले ब्रह्मवेत्ता जिस परमपद को प्राप्त करते हैं, चन्द्रदेव हमें वही स्थान प्रदान करें ।वे हममें श्रेष्ठ मन की स्थापना करें, उनके लिए यह आहुति अर्पित है॥१९,४३.४॥

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह ।
सोमो मा तत्र नयतु पयः सोमो दधातु मे ।

सोमाय स्वाहा ॥१९,४३.५॥

दीक्षा के अनुशासनों का पालन करने वाले और तप-साधना करने वाले ब्रह्मवेत्ता जिस परमपद को प्राप्त करते हैं, सोमदेव हमें भी उसी स्थान की प्राप्ति कराएँ और पोषक रस प्रदान करें ।उन्हीं को यह आहुति अर्पित है॥१९,४३.५॥

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह ।
इन्द्रो मा तत्र नयतु बलमिन्द्रो दधातु मे ।
इन्द्राय स्वाहा ॥१९,४३.६॥

दीक्षा के अनुशासनों का पालन करने वाले और तप साधना करने वाले ब्रह्मवेत्ता जिस परमपद को प्राप्त करते हैं, इन्द्रदेव हमें वही स्थान उपलब्ध कराएँ ।वे हमें शारीरिक पुष्टि प्रदान करें ।उन्हींको यह आहुति अर्पित है॥१९,४३.६॥

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह ।
आपो मा तत्र नयत्वमृतं मोप तिष्ठतु ।
अद्भ्यः स्वाहा ॥१९,४३.७॥

दीक्षा के अनुशासनों का पालन करने वाले और तप साधना करने वाले ब्रह्मवेत्ता जिस परमपद को प्राप्त करते हैं, आप

देव हमें वहीं स्थान प्राप्त कराएँ । वे हमें अमृतत्त्व भी प्रदान करें। उन्हीं के निमित्त यह आहुति समर्पित है ॥१९,४३.७॥

यत्र ब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसा सह ।
ब्रह्मा मा तत्र नयतु ब्रह्मा ब्रह्म दधातु मे ।
ब्रह्मणे स्वाहा ॥१९,४३.८॥

दीक्षा के अनुशासनों का पालन करने वाले और तप साधना करने वाले ब्रह्मवेत्ता जिस परमपद को प्राप्त करते हैं, ब्रह्मा हमें वही स्थान प्राप्त कराएँ ।वे हमें ब्रह्मविद्या की प्रेरणा प्रदान करें ।उन्हीं को यह आहुति अर्पित है॥१९,४३.८॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ४४ – भैषज्य सूक्त

आंजन का वर्णन तथा स्तति, प्राण रक्षक आंजन तथा राजा वरुण की स्तुति

आयुषोऽसि प्रतरणं विप्रं भेषजमुच्यसे ।
तदाञ्जन त्वं शंताते शमापो अभयं कृतम् ॥१९,४४.१॥

हे आञ्जन ! आप मनुष्यों को सौ वर्ष की पूर्ण आयु प्रदान करने वाले हैं । चिकित्सकों के कथनानुसार आप विशेष स्फूर्तिवान् और कल्याणरूप हैं । आप हमें शान्ति और अभय प्रदान करें ॥१९,४४.१॥

यो हरिमा जायान्योऽङ्गभेदो विषल्पकः ।
सर्वं ते यक्ष्ममङ्गेभ्यो बहिर्निर्हन्त्वाञ्जनम् ॥१९,४४.२॥

हे पुरुष ! आपके शरीर में जो पाण्डु (पीलिया) नामक रोग, स्त्री सम्पर्क द्वारा होने वाला रोग, वातादि द्वारा उत्पन्न अंगभेद रोग अथवा विसर्पक (एग्जीमा-व्रण) आदि जो भी कष्टकारी राग हों, उन सभी को यह आञ्जन (मणि) आपके शरीर से पृथक् करे ॥१९,४४.२॥

आञ्जनं पृथिव्यां जातं भद्रं पुरुषजीवनम् ।
कृणोत्वप्रमायुकं रथजूतिमनागसम् ॥१९,४४.३॥

पृथ्वी से उत्पन्न हुआ कल्याणप्रद और मनुष्यों को जीवनी शक्ति प्रदान करने वाला यह आञ्जन (मणि) हमें अमरत्व प्रदान करता है । यह हमें रथ के समान गतिशील और पापमुक्त बनाता हैं ॥१९,४४.३॥

प्राण प्राणं त्रायस्वासो असवे मृड ।
निर्ऋते निर्ऋत्या नः पाशेभ्यो मुञ्च ॥१९,४४.४॥

हे (दिव्य) प्राण ! आप हमारे प्राण को संरक्षण प्रदान करें । हे दुःखरहित प्राण ! आप हमारे प्राण को सुख प्रदान करें । हे पापदेवते ! आप दुर्गति (दुःखदायिनी प्रकृति) के बन्धनों से हमें मुक्त कराएँ ॥१९,४४.४॥

सिन्धोर्गर्भोऽसि विद्युतां पुष्पम् ।
वातः प्राणः सूर्यश्चक्षुर्दिवस्पयः ॥१९,४४.५॥

हे आञ्जन ! आप समुद्रीय जल के गर्भ तथा बिजलियों के पुष्प (वृष्टि जल के रूप में जाने जाते हैं। वायु आपके प्राण,

सूर्य नेत्र और दिव्यलोक की पोषक धाराएँ आपके लिए रसरूप हैं ॥१९,४४.५॥

देवाञ्जन त्रैककुद परि मा पाहि विश्वतः ।
न त्वा तरन्त्योषधयो बाह्याः पर्वतीया उत ॥१९,४४.६॥

हे दिव्य आञ्जन ! आप बैंककुद(तीनों लोकों में सर्वश्रेष्ठ) पर्वत पर उत्पन्न हुए हैं। आप हमारी चारों ओर से रक्षा करें । पर्वतों से भिन्न स्थानों पर उत्पन्न होने वाली ओषधियाँ आपकी अपेक्षा कम लाभप्रद होती हैं ॥१९,४४.६॥

वीदं मध्यमवासृपद्रक्षोहामीवचातनः ।
अमीवाः सर्वाश्चातयन् नाशयदभिभा इतः ॥१९,४४.७॥

असुर संहारक और रोग विनाशक यह आञ्जन पर्वत शिखर से नीचे आकर प्रत्येक वस्तु में फैल जाता है । यह समस्त विकारों को विनष्ट कर देता है । यह आक्रामक रोगों का भी निवारण कर देता है ॥१९,४४.७॥

बह्विदं राजन् वरुणानृतमाह पूरुषः ।
तस्मात्सहस्रवीर्य मुञ्च नः पर्यंहसः ॥१९,४४.८॥

हे पापनिवारक राजा वरुण ! यह पुरुष प्रात:काल से लेकर शयन तक अतिशय मिथ्याभाषण कर चुका है। इसे दोष मुक्त करें । हजारों बलों से सम्पन्न हे आञ्जन ओषधे ! आप मिथ्या-भाषण के पाप से हमें मुक्त करें ॥१९,४४.८॥

यदापो अघ्न्या इति वरुणेति यदूचिम ।
तस्मात्सहस्रवीर्य मुञ्च नः पर्यंहसः ॥१९,४४.९॥

जल के अधिष्ठाता न मारने योग्य हे वरुणदेव ! जो हम कहते हैं, उसे आप साक्षीरूप में जानें। हे असीम शक्तियुक्त आञ्जन ! सभी पापकर्मों के कुप्रभाव से आप हमें मुक्त रखें ॥१९,४४.९॥

मित्रश्च त्वा वरुणश्चानुप्रेयतुराञ्जन ।
तौ त्वानुगत्य दूरं भोगाय पुनरोहतुः ॥१९,४४.१०॥

हे आञ्जन ! मित्र और वरुणदेव दिव्यलोक से भूमि पर पहुँचे, पुन: लौटकर आपके पीछे-पीछे गये। आप सुखोपभोग के लिए उनको यहाँ लेकर आएँ ॥१९,४४.१०॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ४५ – आञ्जन सूक्त

आंजन का वर्णन और स्तुति, अग्नि की स्तति, इंद्र की प्रशंसा तथा भगदेव की स्तुति

ऋणादृणमिव सं नय कृत्यां कृत्याकृतो गृहम् ।
चक्षुर्मन्त्रस्य दुर्हार्दः पृष्टीरपि शृणाञ्जन ॥१९,४५.१॥

हे आञ्जन ! जैसे ऋण लेने वाला पुरुष ऋण का बोझ ऋणदाता को सौंप देता है, वैसे ही घातक प्रयोग हेतु भेजी गई कृत्या को, भेजने वाले पुरुष पर ही लौटाते हुए आप दुष्ट हृदय वाले शत्रु की पसलियों को तोड़ दें ॥१९,४५.१॥

यदस्मासु दुष्वप्न्यं यद्गोषु यच्च नो गृहे ।
अनामगस्तं च दुर्हार्दः प्रियः प्रति मुञ्चताम् ॥१९,४५.२॥

हममें, हमारे पशुओं में तथा हमारे भवनों में जो भी दुःस्वप्न की भाँति भयंकर हो, वह सब दुष्ट हृदय वाले के समीप प्रिय वस्तु के समान पहुँचे ॥१९,४५.२॥

अपामूर्ज ओजसो वावृधानमग्नेर्जातमधि जातवेदसः ।

चतुर्वीरं पर्वतीयं यदाञ्जनं दिशः प्रदिशः करदिच्छिवास्ते ॥१९,४५.३॥

जल की ऊर्जा और सामर्थ्य से वृद्धि को प्राप्त करने वाला, जातवेदा अग्नि से उत्पन्न होने वाला, अपनी सामर्थ्य से चारों दिशाओं में व्याप्त तथा पर्वत पर उत्पन्न होने वाला आञ्जन हमारे निमित्त दिशाओं और उपदिशाओं को मंगलप्रद करे ॥१९,४५.३॥

चतुर्वीरं बध्यत आञ्जनं ते सर्वा दिशो अभयास्ते भवन्तु ।
ध्रुवस्तिष्ठासि सवितेव चार्य इमा विशो अभि हरन्तु ते बलिम् ॥१९,४५.४॥

हे श्रेष्ठ पुरुष ! चतुर्दिक शक्ति का विस्तार करने वाली अञ्जनमणि को आपके शरीर पर बाँधते हैं। इसे धारण करने से आपको सभी दिशाओं से निर्भयता प्राप्त हो । आप सूर्य सदृश सभी को प्रकाशित करते हुए स्थिर रहें । सभी प्रजाजन श्रेष्ठ पदार्थों को उपहाररूप में आपके लिए समर्पित करते रहें ॥१९,४५.४॥

आक्ष्वैकं मणिमेकं क्रुणुष्व स्नाह्येकेना पिबैकमेषाम् ।
चतुर्वीरं नैर्ऋतेभ्यश्चतुर्भ्यो ग्राह्या बन्धेभ्यः परि पात्वस्मान् ॥१९,४५.५॥

हे पुरुष ! आप आञ्जन की एक मात्रा को आँखों में लगाएँ, दूसरे को मणिरूप बनाएँ । उसकी एक मात्रा को स्नान हेतु प्रयुक्त करें, एक मात्रा का पान करें । यह चार वीरों की सामर्थ्ययुक्त आञ्जन चार प्रकार के राक्षसी बन्धनों तथा अपने चंगुल में जकड़ने वाले रोगों से हमें संरक्षण प्रदान करे ॥१९,४५.५॥

अग्निर्माग्निनावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे ।
तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा ॥१९,४५.६॥

अग्रणी, गुणसम्पन्न अग्निदेव अपनी शत्रुसंतापक सामर्थ्य द्वारा हमारी रक्षा करें । प्राण, अपान, दीर्घजीवन, ब्रह्मवर्चस, सामर्थ्य, तेज, कल्याणकारी जीवन तथा श्रेष्ठ विभूतियों के लिए यह आहुति समर्पित करते हैं ॥१९,४५.६॥

इन्द्रो मेन्द्रियेणावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे ।
तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा ॥१९,४५.७॥

देवराज इन्द्र अपने पराक्रम द्वारा हमारी रक्षा करें। प्राण, अपान, दीर्घजीवन , ब्रह्मवर्चस, सामर्थ्य, तेज, कल्याणकारी जीवन तथा श्रेष्ठ विभूतियों के निमित्त यह आहुति समर्पित करते हैं ॥१९,४५.७॥

सोमो मा सौम्येनावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे ।
तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा ॥१९,४५.८॥

सोमदेव अपनी सौम्य सामर्थ्य द्वारा हमारी रक्षा करें। प्राण, अपान, दीर्घजीवन, ब्रह्मवर्चसओज, तेज, कल्याणकारी जीवन तथा श्रेष्ठ विभूतियों के निमित्त यह आहुति समर्पित करते हैं ॥१९,४५.८॥

भगो म भगेनावतु प्राणायापानायायुषे वर्चस ओजसे ।
तेजसे स्वस्तये सुभूतये स्वाहा ॥१९,४५.९॥

भगदेव सौभाग्ययुक्त सामर्थ्य से हमारी रक्षा करें। प्राण, अपान, दीर्घजीवन, ब्रह्मवर्चस , ओज, तेज, मंगलकारी जीवन और उत्तम विभूतियों के निमित्त यह आहुति समर्पित करते हैं ॥१९,४५.९॥

मरुतो मा गणैरवन्तु प्राणायापानायुषे वर्चस ओजसे तेजसे
।
स्वस्तये सुभूतये स्वाहा ॥१९,४५.१०॥

मरुद्गण अपने गणों की शक्ति द्वारा हमारी रक्षा करें । प्राण, अपान, आयु, तेज, ओज, ब्रह्मवर्चस, सुखी कल्याणकारी

जीवन और उत्तम ऐश्वर्य प्राप्ति के निमित्त यह आहुति समर्पित करते हैं ॥१९,४५.१०॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ४६ – अस्तृतमणि सूक्त

आस्तृत मणि का वर्णन तथा स्तुति, नीलवर्ण के अंधकार वाली रात्रि का वर्णन, कल्याण कारिणी रात्रि का वर्णन तथा रात्रि के गण देवता

प्रजापतिष्ट्वा बध्नात्प्रथममस्तृतं वीर्याय कम् ।
तत्ते बध्नाम्यायुषे वर्चस ओजसे च बलाय चास्तृतस्त्वाभि रक्षतु ॥१९,४६.१॥

सर्वप्रथम प्रजापति ब्रह्मा ने शौर्य की आकांक्षा से अस्तृतमणि को धारण किया था ।हे मनुष्य इस मणि को हम आयु, तेज, सामर्थ्य और बल की प्राप्ति हेतु (आपके शरीर में) बाँधते हैं। यह आपको संरक्षण प्रदान करे॥१९,४६.१॥

ऊर्ध्वस्तिष्ठतु रक्षन्न् अप्रमादमस्तृतेमं मा त्वा दभन् पणयो यातुधानाः ।
इन्द्र इव दस्यून् अव धूनुष्व पृतन्यतः सर्वां छत्रून् वि षहस्वास्तृतस्त्वाभि रक्षतु ॥१९,४६.२॥

हे मणे ! आप उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित तथा जागरूक रहते हुए इसकी सुरक्षा करें । यातना देने वाले असुर आपकी सामर्थ्य का नाश न कर सकें। जिस प्रकार इन्द्रदेव शत्रुओं को विनष्ट करते हैं, उसी प्रकार आप सैन्यशक्ति द्वारा आक्रमण करने वाले शत्रुओं का नाश करें । हे पुरुष ! अस्तृतमणि आपको संरक्षण प्रदान करे ॥१९,४६.२॥

शतं च न प्रहरन्तो निघ्नन्तो न तस्तिरे ।
तस्मिन्न् इन्द्रः पर्यदत्त चक्षुः प्राणमथो बलमस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ॥१९,४६.३॥

घातक प्रहार और हिंसक आक्रमण किये जाते हुए भी इस मणि से पार नहीं पाया जा सकता। इन्द्रदेव ने शत्रुओं द्वारा अवध्य इस मणि के अन्दर दर्शन- शक्ति, प्राणशक्ति और सामर्थ्य को स्थापित किया है। यह मणि अपने धारण करने वाले पुरुष की सुरक्षा करे ॥१९,४६.३॥

इन्द्रस्य त्वा वर्मणा परि धापयामो यो देवानामधिराजो बभूव ।
पुनस्त्वा देवाः प्र णयन्तु सर्वेऽस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ॥१९,४६.४॥

हे अस्तृत मणे ! हम आपको इन्द्रदेव के कवच से आच्छादित करते हैं। सभी देव भी आपको प्रेरित करें । आप अपने धारककर्ता का संरक्षण करें ॥१९,४६.४॥

अस्मिन् मणावेकशतं वीर्याणि सहस्रं प्राणा अस्मिन्न् अस्तृते ।
व्याघ्रः शत्रून् अभि तिष्ठ सर्वान् यस्त्वा पृतन्यादधरः सो अस्त्वस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ॥१९,४६.५॥

इस अस्तृतमणि में एक सौ एक प्रकार की शक्तियाँ तथा असीम प्राणबल हैं । हे मणिधारक पुरुष ! आप शत्रुओं पर बाघ के समान प्रहार करें । जो आपके ऊपर सैन्यशक्ति द्वारा आक्रमण करने के इच्छुक हों, वे परास्त हों। यह अस्तृतमणि आपको पूर्ण संरक्षण प्रदान करे ॥१९,४६.५॥

घृतादुल्लुप्तो मधुमान् पयस्वान्त्सहस्रप्राणः शतयोनिर्वयोधाः ।
शम्भूश्च मयोभूश्चोर्जस्वांश्च पयस्वांश्चास्तृतस्त्वाभि रक्षतु ॥१९,४६.६॥

घी, दूध और मधु से परिपूर्ण, समस्त देवशक्तियों से अनुप्राणित होने से असीम सामर्थ्ययुक्त, इन्द्रदेव के कवच से युक्त, दीर्घजीवन एवं कल्याणकारी, शारीरिक सुखों की

प्रदाता, शक्ति और दिव्य रसों से परिपूर्ण यह अस्तृतमणि धारण करने वाले को संरक्षण प्रदान करे ॥१९,४६.६॥

यथा त्वमुत्तरोऽसो असपत्नः सपत्नहा ।
सजातानामसद्वशी तथा त्वा सविता करदस्तृतस्त्वाभि रक्षतु ॥१९,४६.७॥

हे साधक मनुष्य ! जिस प्रकार से आप सबसे उत्कृष्ट, शत्रुरहित, सजातियों को अपने वशीभूत करने वाले बन सकें, सर्वप्रेरक सवितादेव आपको वैसा ही बनाएँ । यह अस्तृतमणि आपको संरक्षण प्रदान करे ॥१९,४६.७॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ४७ – रात्रि सूक्त

रात्रि का वर्णन तथा प्रशंसा और उष:काल की कामना

आ रात्रि पार्थिवं रजः पितुरप्रायि धामभिः ।
दिवः सदांसि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः ॥१९,४७.१॥

हे रात्रे ! आपका अन्धकार पृथ्वीलोक और पितृलोक (द्युलोक) सभी स्थानों में संव्याप्त हो गया है। यह अन्धकार तीनों लोकों में संव्याप्त होकर विद्यमान है । पृथ्वी पर मात्र अन्धकार ही व्याप्त है ॥१९,४७.१॥

न यस्याः पारं ददृशे न योयुवद्विश्वमस्यां नि विशते यदेजति ।
अरिष्टासस्त उर्वि तमस्वति रात्रि पारमशीमहि भद्रे पारमशीमहि ॥१९,४७.२॥

जिसका दूसरा छोर दिखाई नहीं देता, जिसमें सम्पूर्ण विश्व एक ही दिखाई देता है, प्रयत्नशील प्राणी भी इस रात्रि में सो जाते हैं । अन्धकारयुक्त हे रात्रे ! हम सभी विनाशरहित

होकर आपसे पार हो जाएँ । हे कल्याणी !आपके अन्धकार से हम मुक्ति पाएँ ॥१९,४७.२॥

ये ते रात्रि नृचक्षसो द्रष्टारो नवतिर्नव ।
अशीतिः सन्त्यष्टा उतो ते सप्त सप्ततिः ॥१९,४७.३॥

हे रात्रे ! मनुष्यों के कर्माकर्म का निरीक्षण करने वाले आपके जो निन्यानबे, अट्ठासी और सतहत्तर गण (शक्ति धाराएँ हैं, उन सबके द्वारा आप हमारा संरक्षण करें ॥१९,४७.३॥

षष्टिश्च षट्च रेवति पञ्चाशत्पञ्च सुम्नयि ।
चत्वारश्चत्वारिंशच्च त्रयस्त्रिंशच्च वाजिनि ॥१९,४७.४॥

धन एवं सुख प्रदान करने वाली हे रात्रे ! आप अपने चौसठ, पचपन, चवालीस तथा तैतीस दिव्य शक्तिधाराओं द्वारा हमें सुरक्षा प्रदान करें ॥१९,४७.४॥

द्वौ च ते विंशतिश्च ते रात्र्येकादशावमाः ।
तेभिर्नो अद्य पायुभिर्नु पाहि दुहितर्दिवः ॥१९,४७.५॥

हे रात्रि ! आपके बाईस तथा कम से कम ग्यारह संरक्षक हैं । हे दिव्यलोक की कन्या रात्रे ! आप उन रक्षकों द्वारा इस समय हमें संरक्षण प्रदान करें ॥१९,४७.५॥

रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत मा नो दुःशंस ईशत ।
मा नो अद्य गवां स्तेनो मावीनां वृक ईशत ॥१९,४७.६॥

हे रात्रेदेवि ! आप हमारी रक्षा करें । पापी पुरुष या कुख्यात व्यक्ति हमारे ऊपर अधिकार न कर सकें । चोर हमारी गौओं पर अधिकार न कर सकें तथा भेड़िया हमारी भेड़ों को बलपूर्वक ले जाने में सफल न होने पाए ॥१९,४७.६॥

माश्वानां भद्रे तस्करो मा नृणां यातुधान्यः ।
परमेभिः पथिभि स्तेनो धावतु तस्करः ।
परेण दत्वती रज्जुः परेणाघायुरर्षतु ॥१९,४७.७॥

हे रात्रे ! घोड़ों के तस्कर और मनुष्यों को कष्ट पहुँचाने वाले हमारे लिए कष्टदायक न हों । धन को चुराने वाले चोर, दूर के मार्गों से पलायन करें । हमारे प्रति हिंसक भाव से प्रेरित दुष्ट पुरुष भी दूर चले जाएँ ॥१९,४७.७॥

अध रात्रि तृष्टधूममशीर्षाणमहिं कृणु ।
हनू वृकस्य जम्भया स्तेनं द्रुपदे जहि ॥१९,४७.८॥

हे रात्रे ! जहरीले धुएँ (श्वास) से पीड़ा पहुँचाने वाले सर्प को आप मस्तक रहित कर दें । भेड़िये जैसे हिंसक व्यक्ति के जबड़ों को तोड़ डालें और धन के अपहर्ता को आप बँटे से बाँधकर दण्डित करें ॥१९,४७.८॥

त्वयि रात्रि वसामसि स्वपिष्यामसि जागृहि ।
गोभ्यो नः शर्म यच्छाश्वेभ्यः पुरुषेभ्यः ॥१९,४७.९॥

हे रात्रे ! हम आपके आश्रय में निवास करते हैं । जब हम शयन करें, उस समय आप सजग रहें । आप हमारी गौओं, अश्वादि पशुओं तथा प्रजाजनों के लिए भी सुखमय आश्रय प्रदान करें ॥१९,४७.९॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ४८- रात्रि सूक्त

रात्रि का वर्णन व स्तुति

अथो यानि च यस्मा ह यानि चान्तः परीणहि ।
तानि ते परि दद्मसि ॥१९,४८.१॥

हे रात्रे ! जिन्हें हम जानते हैं, (ऐसी प्रकट वस्तुएँ तथा जो बन्द मंजूषा में (अप्रकट या अज्ञात वस्तुएँ हैं, उन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सभी साधनों को हम आपके लिए समर्पित करते हैं ॥१९,४८.१॥

रात्रि मातरुषसे नः परि देहि ।
उषा नो अह्ने परि ददात्वहस्तुभ्यं विभावरि ॥१९,४८.२॥

हे माता ! हे रात्रे ! आप अपने पश्चात् उषाकाल के आश्रय में हमें पहुँचा दें । उषा हमें दिन को समर्पित कर दे । दिन पुनः आपको ही सौंप दे ॥१९,४८.२॥

यत्किं चेदं पतयति यत्किं चेदं सरीसृपम् ।
यत्किं च पर्वतायासत्वं तस्मात्त्वं रात्रि पाहि नः ॥१९,४८.३॥

हे रात्रे ! आकाश मार्ग में उड़ने वाले (बाज़ आदि पक्षी), भूमि पर रेंगकर चलने वाले (सर्पादि) तथा पर्वतीय जंगलों में घूमने वाले (बाघ आदि) हिंसक पशुओं से आप हमें संरक्षण प्रदान करें ॥१९,४८.३॥

सा पश्चात्पाहि सा पुरः सोत्तरादधरादुत ।
गोपाय नो विभावरि स्तोतारस्त इह स्मसि ॥१९,४८.४॥

हे रात्रे ! आप आगे, पीछे, ऊपर तथा नीचे (पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण) चारों दिशाओं से हमारी सुरक्षा करें । हे तेजस्विनी रात्रे ! आप हमारी सुरक्षा अवश्य करें, क्योंकि हम आपकी स्तुति करते हैं ॥१९,४८.४॥

ये रात्रिमनुतिष्ठन्ति ये च भूतेषु जाग्रति ।
पशून् ये सर्वान् रक्षन्ति ते न आत्मसु जाग्रति ते नः पशुषु जाग्रति ॥१९,४८.५॥

जो साधक रात्रि में जप-अनुष्ठान आदि करते हुए जागते रहते हैं । जो गौ आदि पशुओं तथा प्राणियों की सुरक्षा के लिए रात्रि में जागरण करते हैं वे ही हमारे प्रजाजनों तथा पशुओं की सुरक्षा के प्रति भी जागरूक रहें ॥१९,४८.५॥

वेद वै रात्रि ते नाम घृताची नाम वा असि ।
तां त्वां भरद्वाजो वेद सा नो वित्तेऽधि जाग्रति ॥१९,४८.६॥

हे रात्रे ! हम आपके प्रभाव को भली- भाँति जानते हैं। दीप्तिमती (घृताची) के रूप में आपकी प्रसिद्धि है। भरद्वाज ऋषि आपको इसी नाम से जानते हैं। आप हमारे वैभव की रक्षा के प्रति जागरूक रहें ॥१९,४८.६॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ४९ – रात्रि सूक्त

रात्रि का वर्णन व वंदना

इषिरा योषा युवतिर्दमूना रात्री देवस्य सवितुर्भगस्य ।
अश्वक्षभा सुहवा संभृतश्रीरा पप्रौ द्यावापृथिवी महित्वा
॥१९,४९.१॥

अभीष्ट, चिरयुवा नारी सदृश, अपने को नियन्त्रण में रखने वाली, भगदेव एवं सवितादेव की शक्ति शीघ्रता से प्रवृत्त होने वाली, नेत्रों की अवहेलना करने वाली, यह रात्रि अपनी महत्ता से द्यावापृथिवी को पूर्ण कर देती है ॥१९,४९.१॥

अति विश्वान्यरुहद्गम्भिरो वर्षिष्ठमरुहन्त श्रविष्ठाः ।
उशती रात्र्यनु सा भद्राभि तिष्ठते मित्र इव स्वधाभिः
॥१९,४९.२॥

गहन अन्धकार विश्व को आच्छादित करके विराजमान है । यह (रात्रि) विश्व समुदाय को हृदय से चाहती हुई आरोहित हुई है। जिस प्रकार मित्र (सूर्यदेव) विश्व में प्राण संचार करते

हैं, उसी प्रकार यह कल्याणकारी रात्रि भी अपनी शक्तियों का संचार करती है ॥१९,४९.२॥

वर्ये वन्दे सुभगे सुजात आजगन् रात्रि सुमना इह स्याम् ।
अस्मांस्त्रायस्व नर्याणि जाता अथो यानि गव्यानि पुष्ट्या
॥१९,४९.३॥

उत्तम, वरणीय, वन्दनीय, सौभाग्यवती हे रात्रे ! श्रेष्ठ गुणों के साथ आपका अवतरण हो रहा है। यहाँ श्रेष्ठ मनवाली होकर आप हमारा संरक्षण करें । मनुष्यों और गौ आदि पशुओं के कल्याण के निमित्त पैदा होने वाले पदार्थों की भी आप सुरक्षा करें ॥१९,४९.३॥

सिंहस्य रात्र्युशती पींषस्य व्याघ्रस्य द्वीपिनो वर्च आ ददे ।
अश्वस्य ब्रध्नं पुरुषस्य मायुं पुरु रूपाणि कृणुषे विभाती
॥१९,४९.४॥

यह अभिलाषामयी रात्रि गजसमूह, सिंह, हरिन, गेंडा तथा बाघ आदि पशुओं की क्षमताओं को (तेजस्विता को) ग्रहण कर लेती है । अश्व की स्वाभाविक गति और मनुष्यों की वाशक्ति को भी अपने वश में करती है । इस प्रकार स्वयं विशेष रूप से चमकती हुई रात्रि विभिन्न स्वरूपों में दिखाई देती है ॥१९,४९.४॥

शिवां रात्रिमनुसूर्यं च हिमस्य माता सुहवा नो अस्तु ।
अस्य स्तोमस्य सुभगे नि बोध येन त्वा वन्दे विश्वासु दिक्षु
॥१९,४९.५॥

मंगलकारिणी रात्रि तथा उसके स्वामी सूर्यदेव की हम वन्दना करते हैं । हिम (सर्दी) को उत्पन्न करने वाली रात्रि हमारे लिए स्तुति करने योग्य है । हे सौभाग्यवती गन्ने । आप हमारी उस प्रार्थना को समझें, जिससे हम सभी दिशाओं में संव्याप्त आपकी वन्दना करते हैं ॥१९,४९.५॥

स्तोमस्य नो विभावरि रात्रि राजेव जोषसे ।
असाम सर्ववीरा भवाम सर्ववेदसो व्युछन्तीरनूषसः
॥१९,४९.६॥

हे तेजस्विनी रात्रे ! राजा द्वारा स्तोताओं की प्रार्थना को स्नेहपूर्वक सुनने के समान ही आप हमारी प्रार्थना से प्रसन्न हों। आप नित्यप्रति प्रकट होने वाले उषाकाल में हम साधकों को सदा वीर सन्तानों और समस्त वैभव सम्पदा से युक्त करें ॥१९,४९.६॥

शम्या ह नाम दधिषे मम दिप्सन्ति ये धना ।

रात्रीहि तान् असुतपा य स्तेनो न विद्यते यत्पुनर्न विद्यते ॥१९,४९.७॥

हे रात्रे ! आप "शम्या" (विश्राम देने वाली) नाम से जानी जाती हैं । जो शत्रु हमारे धन वैभव के अपहरणकर्ता हैं, उनके प्राणों को संतप्त करती हुई, आप आगमन करें । चोर- लुटेरे राष्ट्र में विद्यमान न रहें तथा उनकी पुन: उत्पन्न होने की सम्भावना भी न रहे ॥१९,४९.७॥

भद्रासि रात्रि चमसो न विष्टो विष्वङ्गोरूपं युवतिर्बिभर्षि ।
चक्षुष्मती मे उशती वपूम्षि प्रति त्वं दिव्या न क्षाममुक्थाः
॥१९,४९.८॥

है रात्रे ! आप चमस पात्र के समान ही मंगलकारिणी हैं । अन्धकार के रूप में सर्वत्र व्याप्त हैं तथा गौ की भाँति पोषक रस प्रदान करती हैं। आप हमें परिपुष्ट करती हुई, नेत्र ज्योति प्रदान करें । नक्षत्रों से सुशोभित आकाश की भाँति आप पृथ्वी को भी सजाएँ ॥१९,४९.८॥

यो अद्य स्तेन आयत्यघायुर्मर्त्यो रिपुः ।
रात्री तस्य प्रतीत्य प्र ग्रीवाः प्र शिरो हनत्॥१९,४९.९॥

हे तेजस्विनी रात्रे ! चारों ओर हत्या की योजना से आ रहे दुष्टों को आप उल्टे पैर वापस भगा दें। आप उनकी गर्दन और सिर पर प्रहार करें ॥१९,४९.९॥

प्र पादौ न यथायति प्र हस्तौ न यथाशिषत्।
यो मलिम्लुरुपायति स संपिष्टो अपायति ।
अपायति स्वपायति शुष्के स्थाणावपायति ॥१९,४९.१०॥

हे रात्रे ! आप शत्रु के दोनों पैरों, दोनों हाथों को तोड़ डालें, जिससे वह पुनः हत्या का कुत्सित कार्य न कर सके। हमारे समीप आने वाले चोर या हत्यारे को कुचलकर वापस करें, जिससे वह निर्जन वन के सूखें वृक्ष का ही आश्रय प्राप्त करे ॥१९,४९.१०॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ५०- रात्रि सूक्त

रात्रि का वर्णन व वंदना

अध रात्रि तृष्टधूममशीर्षाणमहिं कृणु ।
अक्षौ वृकस्य निर्जह्यास्तेन तं द्रुपदे जहि ॥१९,५०.१॥

हे रात्रे ! जहरीली श्वास छोड़ने वाले साँप को आप छिन्न-मस्तक (सिर रहित) करें । भेड़िये की दोनों आँखों को दृष्टि विहीन करके उसे वृक्ष के नीचे समाप्त करें ॥१९,५०.१॥

ये ते रात्र्यनड्वाहस्तीक्ष्णशृङ्गाः स्वाशवः ।
तेभिर्नो अद्य पारयाति दुर्गाणि विश्वहा ॥१९,५०.२॥

हे रात्रे !तीव्रगामी, तीखे सींगों से युक्त भारवाहक आपके जो बैल हैं, उनसे हमें सभी संकटों से पार करें ॥१९,५०.२॥

रात्रिंरात्रिमरिष्यन्तस्तरेम तन्वा वयम् ।
गम्भीरमप्लवा इव न तरेयुररातयः ॥१९,५०.३॥

हे रात्रे !हम शरीरों से सुरक्षित प्रत्येक रात्रि से पार हों, शत्रुनौकारहित यात्रियों की तरह पार न हो सकें ॥१९,५०.३॥

यथा शाम्याकः प्रपतन्न् अपवान् नानुविद्यते ।
एवा रात्रि प्र पातय यो अस्मामभ्यघायति ॥१९,५०.४॥

श्यामाक (साँवा) नामक अन्न के एक बार (जमीन पर गिरने के बाद पुनः उसको ढूँढ़कर एकत्र कर पाना सम्भव नहीं होता हे रात्रे ! जो हमारे पास पाप की दुर्भावना से आ रहा है, उसे आप साँवा की भाँति नष्ट कर दें ॥१९,५०.४॥

अप स्तेनं वासयो गोअजमुत तस्करम् ।
अथो यो अर्वतः शिरोऽभिधाय निनीषति ॥१९,५०.५॥

हे रात्रे ! आप उन सभी प्रकार के अपहर्ताओं को, जो वस्त्र, गौ, बकरी के साथ-साथ घोड़ों को रस्सी से बाँधकर ले जाते हैं, उन्हें आप दूर हटाएँ ॥१९,५०.५॥

यदद्य रात्रि सुभगे विभजन्त्ययो वसु ।
यदेतदस्मान् भोजय यथेदन्यान् उपायसि ॥१९,५०.६॥

स्वर्ण आदि वैभव को बाँटने वाली हे सौभाग्यवती रात्रे ! आप अपना धन हमें प्रदान करें; हम उसका उपयोग कर सकें। वह धन हमारे शत्रुओं को न प्राप्त हो ॥१९,५०.६॥

उषसे नः परि देहि सर्वान् रात्र्यनागसः ।
उषा नो अह्ने आ भजादहस्तुभ्यं विभावरि ॥१९,५०.७॥

हे रात्रे ! हम निष्पाप स्तोताओं को आप उषा के नियन्त्रण में सौंप दें, उषा दिन को प्रदान कर दे, दिन हमें संरक्षण प्रदान करता हुआ पुन: आपको सौंप दे। हे तेजस्विनी रात्रे ! इस प्रकार आप हमारी सुरक्षा करें ॥१९,५०.७॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ५१ – आत्मा सूक्त

कर्म का अनुष्ठान करने का इच्छुक

अयुतोऽहमयुतो म आत्मायुतं मे चक्षुरयुतं मे श्रोत्रम् ।
अयुतो मे प्राणोऽयुतो मेऽपानोऽयुतो मे व्यानोऽयुतोऽहं सर्वः
॥१९,५१.१॥

हम पूर्णतायुक्त हैं, हमारी आत्मा पूर्ण है, हमारे शरीर, शारीरिक अंग, नेत्र, कान, नासिका, प्राण, अपान, व्यान भी परिपूर्ण हैं । हम सभी इन्द्रियों की शक्ति से परिपूर्ण हैं ॥१९,५१.१॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां प्रसूत आ रभे ॥१९,५१.२॥

सर्वप्रेरक सवितादेवता की प्रेरणा से, अश्विनीकुमारों की भुजाओं से और पूषादेव के हाथों से प्रेरित हम (साधक) मनुष्य इस कार्य का शुभारम्भ करते हैं ॥१९,५१.२॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ५२ – काम सूक्त

काम की स्तुति और काम से मित्र के समान आचरण करने की इच्छा

कामस्तदग्रे समवर्तत मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्।
स काम कामेन बृहता सयोनी रायस्पोषं यजमानाय धेहि ॥१९,५२.१॥

सर्वप्रथम काम की उत्पत्ति हुई । काम ही मन का प्रथम बीज हुआ । विराट् काम सृष्टि- उत्पादन की ईश्वरीय कामना का सहोदर है । यह यजमान को धन और पुष्टि प्रदान करे ॥१९,५२.१॥

त्वं काम सहसासि प्रतिष्ठितो विभुर्विभावा सख आ सखीयते ।
त्वमुग्रः पृतनासु ससहिः सह ओजो यजमानाय धेहि ॥१९,५२.२॥

हे काम !आप सामर्थ्यवान् हैं ।आप सर्वव्यापक, तेजसम्पन्न और मित्रवत् व्यवहार करने वाले के साथ मित्र भाव रखते

हैं। आप शत्रुओं को वश में करने वाले वीर हैं, आप यजमान को ओजस् और शक्तिसम्पन्न बनाएँ ॥१९,५२.२॥

दूराच्चकमानाय प्रतिपाणायाक्षये ।
आस्मा अशृण्वन्न् आशाः कामेनाजनयन्त्स्वः ॥१९,५२.३॥

सभी दिशाएँ दुर्लभ फल की कामना करने वाले याजक को अभिलषित फल प्रदान करने के लिए संकल्पित हैं। वे सभी प्रकार के सुख भी प्रदान करें ॥१९,५२.३॥

कामेन मा काम आगन् हृदयाद्धृदयं परि ।
यदमीषामदो मनस्तदैतूप मामिह ॥१९,५२.४॥

हमारी ओर काम के द्वारा ही काम का आगमन हुआ है । हृदय द्वारा हृदय की ओर भी काम का आगमन हुआ है। उन श्रेष्ठ जनों का मन भी हमारे पास आए ॥१९,५२.४॥

यत्काम कामयमाना इदं कृण्मसि ते हविः ।
तन् नः सर्वं समृध्यतामथैतस्य हविषो वीहि स्वाहा ॥१९,५२.५॥

हे काम ! जिस अभिलाषा की पूर्ति के लिए हम आपको हवि प्रदान करते हैं, हमारी वह इच्छा पूर्ण हो । यह हवि

आपके लिए समर्पित है, आप इसे स्वीकार करें ॥१९,५२.५॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ५३ – काल सूक्त

काल का वर्णन, काल रूप परमात्मा तथा सूर्य का संसार को प्रकाशित करना

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः ।
(तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा
॥१९,५३.१॥

काल स्वरूप अश्व विश्वरूपी रथ का वाहक है । वह सात किरणों और सहस्र आँखों वाला है ।वह जरारहित और प्रचुर पराक्रम सम्पन्न है, समस्त लोक उसके चक्र हैं । उस (अश्व या रथ) पर बुद्धिमान् ही आरोहण करते हैं ॥१९,५३.१॥

सप्त चक्रान् वहति काल एष सप्तास्य नाभीरमृतं न्वक्षः ।
स इमा विश्वा भुवनान्यञ्जत्कालः स ईयते प्रथमो नु देवः
॥१९,५३.२॥

वह काल सात चक्रों का वाहक है । (उन चक्रों की) सात नाभियाँ हैं तथा वह अक्ष (धुरा) अमृत-अनश्वर है । वह प्रथम

देव 'काल' सभी भुवनों को प्रकट करता हुआ सतत गतिशील है ॥१९,५३.२॥

पूर्णः कुम्भोऽधि काल आहितस्तं वै पश्यामो बहुधा नु सन्तम् ।
स इमा विश्वा भुवनानि प्रत्यङ्कालं तमाहुः परमे व्योमन् ॥१९,५३.३॥

विश्व ब्रह्माण्डरूप भरा हुआ कुम्भ, काल के ऊपर स्थापित है। संत- ज्ञानीजन उस काल को (दिवस-रात्रि आदि) विभिन्न रूपों में देखते हैं। वह काल इन दृश्यमान प्राणियों के सामने प्रकट होकर उन्हें अपने में समाहित कर लेता है । मनीषीगण उस काल को विकारों से रहित आकाश के समान (निर्लेप) बताते हैं ॥१९,५३.३॥

स एव सं भुवनान्याभरत्स एव सं भुवनानि पर्येत्।
पिता सन्न् अभवत्पुत्र एषां तस्माद्वै नान्यत्परमस्ति तेजः ॥१९,५३.४॥

वह काल समस्त भुवनों का पोषण करने वाला तथा सभी में श्रेष्ठ रीति से संव्याप्त है । वही भूतकाल में इन (प्राणियों) का पिता और अगले जन्म में इनका पुत्र हो जाता है । इस काल से उत्तम कोई भी तेज नहीं है ॥१९,५३.४॥

कालोऽमूं दिवमजनयत्काल इमाः पृथिवीरुत ।
काले ह भूतं भव्यं चेषितं ह वि तिष्ठते ॥१९,५३.५॥

काल ने ही इस दिव्यलोक को उत्पन्न किया और इसी ने सभी प्राणियों की आश्रयभूता भूमि को उत्पन्न किया है । भूत, भविष्यत् और वर्तमान सभी इस अविनाशी काल के आश्रित रहते हैं ॥१९,५३.५॥

कालो भूतिमसृजत काले तपति सूर्यः ।
काले ह विश्वा भूतानि काले चक्षुर्वि पश्यति ॥१९,५३.६॥

काल ने ही इस सृष्टि का सृजन किया है । काल की प्रेरणा से ही सूर्यदेव इस संसार को प्रकाशित करते हैं। इसी काल के आश्रित समस्त प्राणी हैं। नेत्र भी इसी काल के आश्रित होकर विविध पदार्थों को देखते हैं ॥१९,५३.६॥

काले मनः काले प्राणः काले नाम समाहितम् ।
कालेन सर्वा नन्दन्त्यागतेन प्रजा इमाः ॥१९,५३.७॥

काल में ही मन, काल में ही प्राण तथा काल में ही सभी नाम समाहित हैं, जो समयानुसार प्रकट होते रहते हैं। काल की

अनुकूलता से ही समस्त प्रजाजन आनन्दित होते हैं ॥१९,५३.७॥

काले तपः काले ज्येष्ठं काले ब्रह्म समाहितम् ।
कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पितासीत्प्रजापतेः ॥१९,५३.८॥

तप:शक्ति, महानता (ज्येष्ठता) तथा ब्रह्मविद्या इसी काल में सन्नहित है । काल ही सभी (स्थावर- जङ्गम विश्व ब्रह्माण्ड) का ईश्वर, समस्त प्रजा का पालक तथा सबका पिता है ॥१९,५३.८॥

तेनेषितं तेन जातं तदु तस्मिन् प्रतिष्ठितम् ।
कालो ह ब्रह्म भूत्वा बिभर्ति परमेष्ठिनम् ॥१९,५३.९॥

यह संसार काल द्वारा प्रेरित, उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ तथा उसी के आश्रय में प्रतिष्ठित भी हैं । काल ही अपनी ब्राह्मी चेतना को विस्तृत करके, परमेष्ठी (प्रजापति) को धारण करता हैं ॥१९,५३.९॥

कालः प्रजा असृजत कालो अग्रे प्रजापतिम् ।
स्वयंभूः कश्यपः कालात्तपः कालादजायत ॥१९,५३.१०॥

सृष्टि के प्रारम्भ में काल ने सर्वप्रथम प्रजापति का सृजन किया, तत्पश्चात् प्रजाजनों की रचना की । काल स्वयंभू (स्वयं उत्पन्न) है । सबके द्रष्टा कश्यप काल से प्रादुर्भूत हुए तथा काल से ही तप:शक्ति उत्पन्न हुई ॥१९,५३.१०॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ५४ – काल सूक्त

काल का वर्णन तथा सभी की गति का कारण काल

कालादापः समभवन् कालाद्ब्रह्म तपो दिशः ।
कालेनोदेति सूर्यः काले नि विशते पुनः ॥१९,५४.१॥

काल से आपः, ज्ञान तपःशक्ति तथा दिशाएँ उत्पन्न हुई हैं। काल की सामर्थ्य से सूर्य उदित होता है, पुनः उसी (काल) में प्रविष्ट भी हो जाता है ॥१९,५४.१॥

कालेन वातः पवते कालेन पृथिवी मही ।
द्यौर्मही काल आहिता ॥१९,५४.२॥

काल की प्रेरणा से वायुदेव प्रवाहित होते हैं, काल से यह विशाल पृथ्वी गतिमान् हो रही है, विशाल दिव्यलोक भी काल के आश्रय में ही स्थित है ॥१९,५४.२॥

कालो ह भूतं भव्यं च पुत्रो अजनयत्पुरा ।
कालादृचः समभवन् यजुः कालादजायत ॥१९,५४.३॥

काल के द्वारा पूर्व समय में भूत और भविष्य को उत्पन्न किया गया है। काल से ही ऋग्वेद की ऋचाएँ और यजुर्वेद के मन्त्र भी प्रकट हुए हैं ॥१९,५४.३॥

कालो यज्ञं समैरयद्देवेभ्यो भागमक्षितम् ।
काले गन्धर्वाप्सरसः काले लोकाः प्रतिष्ठिताः ॥१९,५४.४॥

काल ने ही क्षयरहित यज्ञ-भाग को देवत्व संवर्द्धक शक्तियों के निमित्त प्रेरित किया है। काल से ही गन्धर्व और अप्सराओं का प्रादुर्भाव हुआ। समस्त लोक काल में ही प्रतिष्ठित हैं ॥१९,५४.४॥

कालेऽयमङ्गिरा देवोऽथर्वा चाधि तिष्ठतः ।
इमं च लोकं परमं च लोकं पुण्यांश्च लोकान् विधृतीश्च पुण्याः ।
सर्वांल्लोकान् अभिजित्य ब्रह्मणा कालः स ईयते परमो नु देवः ॥१९,५४.५॥

अंगिरा और अथर्वा श्रुष अपने उत्पादनकर्ता इस काल में ही अधिष्ठित हैं। इहलोक, परलोक और पुण्यलोकों तथा पवित्र मर्यादाओं को जीतकर वह कालदेव ब्रह्म ज्ञान से युक्त होकर सर्वत्र व्याप्त हो जाता है ॥१९,५४.५॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ५५ – रायस्पोष प्राप्ति सूक्त

अग्नि देव की स्तुति तथा संपूर्ण अन्न और जीवन की कामना

रात्रिंरात्रिमप्रयातं भरन्तोऽश्वायेव तिष्ठते घासमस्मै ।
रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम ॥१९,५५.१॥

जैसे प्रत्येक रात्रि में गमनन करने वाले घोड़े को घास प्रदान करते हैं, वैसे हे अग्ने ! हम आपको हवि प्रदान करते हैं ।आप धन, पुष्टि तथा अन्न प्रदान करें, जिससे प्रसन्न होकर आपके समीप रहते हुए कष्ट से मुक्त रहें ॥१९,५५.१॥

या ते वसोर्वात इषुः सा त एषा तया नो मृड ।
रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम ॥१९,५५.२॥

हे अग्निदेव ! आप आश्रय प्रदाता हैं। आप अपने वायुरूप बाण से हमें सुखी करें । हे अग्निदेव ! आपके समीप वास

करने वाले हम कष्टरहित स्थिति में धन, पुष्टि तथा अभीष्ट अन्नादि से सदैव आनन्दित रहें ॥१९,५५.२॥

सायंसायं गृहपतिर्नो अग्निः प्रातःप्रातः सौमनसस्य दाता ।
वसोर्वसोर्वसुदान एधि वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम ॥१९,५५.३॥

गार्हपत्य अग्निदेव प्रत्येक प्रातः-सायं हम सभी को श्रेष्ठ मन वाला बनाते हैं । हे अग्ने ! आप श्रेष्ठ सम्पदाएँ प्रदान करके हमारी वृद्धि करें। आपको हविष्यान्न से प्रदीप्त करते हुए हम शारीरिक परिपुष्टता प्राप्त करें ॥१९,५५.३॥

प्रातःप्रातर्गृहपतिर्नो अग्निः सायंसायं सौमनसस्य दाता ।
वसोर्वसोर्वसुदान एधीन्धानास्त्वा शतंहिमा ऋधेम ॥१९,५५.४॥

गार्हपत्य अग्निदेव हमें प्रत्येक प्रातः- सायं श्रेष्ठ मन प्रदान करने वाले हैं । हे अग्निदेव ! आप श्रेष्ठ वैभव देते हुए हमारी वृद्धि करें । आपको हविष्यान्न से प्रदीप्त करते हुए हम सौ वर्ष का जीवन पूर्ण करें ॥१९,५५.४॥

अपश्चा दग्धान्नस्य भूयासम् ।
अन्नादायान्नपतये रुद्राय नमो अग्नये ।
सभ्यः सभां मे पाहि ये च सभ्याः सभासदः ॥१९,५५.५॥

जले हुए अन्न भाग से हम मुक्त रहें ।अन्न के सेवनकर्ता अन्नपति रुद्ररूप अग्निदेव को नमस्कार है ।सभा में उपस्थित आप सभी इसकी सुरक्षा करें ।जो सभा में पधारने वाले सभासद् हैं, वे भी हमारी सभा का संरक्षण करें॥१९,५५.५॥

अहरहर्बलिमित्ते हरन्तोऽश्वायेव तिष्ठते घासमग्ने ॥१९,५५.६॥

बहुतों द्वारा आवाहित ऐश्वर्ययुक्त (हे इन्द्राग्ने !) आपके उपासक हम सब अन्न का उपभोग सम्पूर्ण आयु तक कर सकें । जो साधक घोड़े को घास देने के समान ही प्रतिदिन आपके निमित्त बलिवैश्व यज्ञ करते हैं, उन्हेंआप जीवन पर्यन्त प्रचुर अन्न प्रदान करें ॥१९,५५.६॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ५६ – स्वप्ननाशन सूक्त

बुरे स्वप्न के अभिमानी क्रूर पिशाच का वर्णन, स्वप्न से बचने का उपाय वरुण ने आदित्यों को बताया

यमस्य लोकादध्या बभूविथ प्रमदा मर्त्यान् प्र युनक्षि धीरः ।
एकाकिना सरथं यासि विद्वान्त्स्वप्नं मिमानो असुरस्य योनौ
॥१९,५६.१॥

(हे दुःस्वप्न !) तुम यमलोक से पृथ्वी पर आए हो, निःसंकोच-निर्भय होकर तुम स्त्रियों और मरणधर्मा मनुष्यों के समीप पहुँच जाते हो। तुम प्राणधारी आत्माओं के हृदयस्थल में दुःस्वप्न का निर्माण कर देते हो और उनके रथ (मनोरथ पर साथ ही बैठकर जाते हो ॥१९,५६.१॥

बन्धस्त्वाग्रे विश्वचया अपश्यत्पुरा रात्र्या जनितोरेके अह्नि ।
ततः स्वप्नेदमध्या बभूविथ भिषग्भ्यो रूपमपगूहमानः
॥१९,५६.२॥

हे दुःस्वप्न ! सबके स्रष्टा (स्व-स्व कर्मानुसार) आबद्धकर्ता ने रात्रि के उद्भव से पूर्व एक दिन तुम्हें देखा था। उसी समय

से तुम इस जगत् में संव्याप्त हो । वैद्यों से तुम अपने स्वरूप को छिपा लेते हो ॥१९,५६.२॥

बृहद्वावासुरेभ्योऽधि देवान् उपावर्तत महिमानमिछन् ।
तस्मै स्वप्नाय दधुराधिपत्यं त्रयस्त्रिंशासः स्वरानशानाः ॥१९,५६.३॥

तीव्र रूप से गतिशील, महत्त्वाकांक्षा से प्रेरित होकर स्वप्न असुरों के समीप से देवताओं के निकट पहुँचा। उस स्वन को तैंतीस देवों ने सामर्थ्य प्रदान की ॥१९,५६.३॥

नैतां विदुः पितरो नोत देवा येषां जल्पिश्चरत्यन्तरेदम् ।
त्रिते स्वप्नमदधुराप्त्ये नर आदित्यासो वरुणेनानुशिष्टाः ॥१९,५६.४॥

इस स्वप्न में जिनका वार्तालाप चलता है, उन्हें न तो पितरगण जानते हैं और न देवगण । वरुणदेव द्वारा उपदिष्ट नेतृत्वकर्ता आदित्य इस स्वप्न के अप् तत्त्व (सृष्टि के मूल क्रियाशील तत्त्व) से उत्पन्न त्रित (त्रिगुणात्मक सृष्टि) में स्थापित करते हैं ॥१९,५६.४॥

यस्य क्रूरमभजन्त दुष्कृतोऽस्वप्नेन सुकृतः पुण्यमायुः ।

स्वर्मदसि परमेण बन्धुना तप्यमानस्य मनसोऽधि जज्ञिषे ॥१९,५६.५॥

जिस स्वन के प्रभाव से दुष्ट- दुराचारी भयंकर फल प्राप्त करते हैं और पुण्यात्मा पुण्यकर्मों के प्रभाव से दीर्घायु को भोगते हैं, ऐसे हे स्वप्न ! तुम परम बन्धु (परमात्मा या जीवात्मा) के साथ रहते हुए स्वर्गीय सुखों काआनन्द पाते हो तथा तपाये गये मन से उत्पन्न होते हो ॥१९,५६.५॥

विद्म ते सर्वाः परिजाः पुरस्ताद्विद्म स्वप्न यो अधिपा इहा ते । यशश्विनो नो यशसेह पाह्याराद्विषेभिरप याहि दूरम् ॥१९,५६.६॥

हे स्वप्न ! तुम्हारे सभी साथी परिजनों को हम जानते हैं, तुम्हारे जो अधिपति हैं, उनसे भी हम परिचित हैं। हमारी यशस्विता (श्रेष्ठ कर्तृत्व) द्वारा दु:स्वप्नों से हमारी रक्षा करो और हमारे विद्वेषियों को हमसे दूर ले जाओ ॥१९,५६.६॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ५७ – स्वप्ननाशन सूक्त

दुःस्वप्न नाशन

यथा कलां यथा शफं यथा र्णं सन्नयन्ति ।
एवा दुष्वप्न्यं सर्वमप्रिये सं नयामसि ॥१९,५७.१॥

जिस प्रकार (चन्द्रमा की) कलाएँ (क्रमशः) बढ़ती-घटती हैं, जैसे (अश्व) खुरों से (कदमों से क्रमशः) मार्ग तय किया जाता है तथा जिस प्रकार ऋण (क्रमशः) चुकाया जाता है, उसी प्रकार हम दुःस्वप्नजन्य सभी अनिष्टोंको अप्रिय शत्रुओं पर फेंकते हैं ॥१९,५७.१॥

सं राजानो अगुः समृणाम्यगुः सं कुष्ठा अगुः सं कला अगुः ।
समस्मासु यद्दुष्वप्न्यं निर्द्विषते दुष्वप्न्यं सुवाम ॥१९,५७.२॥

जिस प्रकार राजा (युद्ध के लिए संघबद्ध होते हैं, जैसे ऋणभार (थोड़ा-थोड़ा जुड़ते हुए इकट्ठा हो जाता है, जैसे कुष्ठ आदि रोग (थोड़ा-थोड़ा करके) बढ़ जाते हैं तथा कलाएँ संयुक्त होकर (पूर्ण चन्द्र का) आकार बनाती हैं,

उसी प्रकार दुःस्वप्न बढ़ते हैं। हम दुःस्वप्नों को द्वेष करने वालों की ओर धकेलते हैं ॥१९,५७.२॥

देवानां पत्नीनां गर्भ यमस्य कर यो भद्रः स्वप्न ।
स मम यः पापस्तद्द्विषते प्र हिण्मः ।
मा तृष्टानामसि कृष्णशकुनेर्मुखम् ॥१९,५७.३॥

हे देवपत्नियों के गर्भ (पुत्र), यम के हाथ, स्वप्न !आप हमें अपना मंगलप्रद भाग प्रदान करें तथा आपके अनिष्ट भाग को हम शत्रुओं की ओर प्रेरित करते हैं । हे स्वप्नः !आप काले पक्षी के मुख दर्शन के समान न हों ॥१९,५७.३॥

तं त्वा स्वप्न तथा सं विद्म स त्वं स्वप्नाश्व इव कायमश्व इव नीनाहम् ।
अनास्माकं देवपीयुं पियारुं वप यदस्मासु दुष्वप्न्यं यद्गोषु यच्च नो गृहे ॥१९,५७.४॥

हे स्वप्न ! आपके सम्बन्ध में हम भली प्रकार जानते हैं । जिस प्रकार घोड़ा शरीर को झटककर धूलि को झाड़ देता है और काठी पर रखी वस्तु को गिरा देता है, उसी प्रकार गौओं तथा गृह से सम्बन्धित हमारे दुःस्वप्नों के प्रभाव को आप हमसे भिन्न देवत्व के विरोधी दुष्टों पर फेंक दें ॥१९,५७.४॥

अनास्माकस्तद्देवपीयुः पियारुर्निष्कमिव प्रति मुञ्चताम् ।
नवारत्नीन् अपमया अस्माकं ततः परि ।
दुष्वप्न्यं सर्वं द्विषते निर्दयामसि ॥१९,५७.५॥

हे देव ! हमसे भिन्न जो देवों के निन्दक दुष्ट शत्रु हैं, वे दुःस्वप्न जन्य कुप्रभाव को आभूषण के समान धारण करें । दुःस्वप्न से उत्पन्न कुप्रभाव को आप हमसे नौ हाथ तक दूर हटाएँ । दुःस्वप्नजन्य दुष्प्रभाव को हम विद्वेषी शत्रुपक्ष की ओर प्रेरित करते हैं ॥१९,५७.५॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ५८ – यज्ञ सूक्त

परमात्मा से संबंधित ज्ञान और आकाश और पथ्वी से तेज की याचना इंद्रियों को निर्देश

घृतस्य जूतिः समना सदेवा संवत्सरं हविषा वर्धयन्ती ।
श्रोत्रं चक्षुः प्राणोऽछिन्नो नो अस्त्वछिन्ना वयमायुषो वर्चसः ॥१९,५८.१॥

दैवी शक्तियों के साथ मन लगाकर अविच्छिन्न गति से प्रदान की गई घृत (तेज) की आहुति से संवत्सर की वृद्धि होती है। हमारे प्राण, कान, नाक, तेज और आयु अविच्छिन्न रहें ॥१९,५८.१॥

उपास्मान् प्राणो ह्वयतामुप प्राणं हवामहे ।
वर्चो जग्राह पृथिव्यन्तरिक्षं वर्चः सोमो बृहस्पतिर्विधत्ता ॥१९,५८.२॥

प्राण में चिरजीवी बनाएँ, हम प्राणों का आवाहन करते हैं । पृथ्वी, अन्तरिक्ष, सोम, बृहस्पति और विशिष्ट पुष्टिदाता

सूर्यदेव ने हमारे लिए तेजस्विता को धारण किया हैं ॥१९,५८.२॥

वर्चसो द्यावापृथिवी संग्रहणी बभूवथुर्वर्चो गृहीत्वा पृथिवीमनु सं चरेम ।
यशसं गावो गोपतिमुप तिष्ठन्त्यायतीर्यशो गृहीत्वा पृथिवीमनु सं चरेम ॥१९,५८.३॥

हे द्यावापृथिवी ! आप तेजस्विता संगृहीत करने वाली हैं ।उसे प्राप्त करके हम पृथ्वी पर संचरित करेंगे। यशस्विता के साथ हमें गौओं की प्राप्ति हो ।हम गौओं और कीर्ति को पाकर पृथ्वी पर विचरण योग्य बन सकें॥१९,५८.३॥

व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणो वर्मा सीव्यध्वं बहुला पृथूनि ।
पुरः कृणुध्वमायसीरधृष्टा मा वः सुस्रोच्चमसो दंहत तम् ॥१९,५८.४॥

(हे मनुष्यो !) आप गोशाला का निर्माण करें, वह निश्चित रूप से आपका पोषण करने में सक्षम है। आप बड़े-बड़े कवचों को सिलकर तैयार करें । अपनी सुरक्षा हेतु लोहे की सुदृढ़ नगरियों को इस प्रकार बनाएँ, जिससे शत्रुपक्ष आक्रमण न कर सके। आपके अन्न, जल आदि रखने के पात्र भी चुएँ नहीं, उन्हें सुदृढ़ बनाएँ ॥१९,५८.४॥

यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि ।
इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः ॥१९,५८.५॥

यज्ञ के चक्षु और मुख (अग्नि) विशेष रूप से पोषण करने वाले हैं हम वाणी, श्रोत्र तथा मन को संयुक्त करके उन्हें आहुति अर्पित करते हैं । विश्वकर्मा द्वारा विस्तारित इस यज्ञ में श्रेष्ठ विचारों वाले सभी देव पधारें ॥१९,५८.५॥

ये देवानामृत्विजो ये च यज्ञिया येभ्यो हव्यं क्रियते भागधेयम् ।
इमं यज्ञं सह पत्नीभिरेत्य यावन्तो देवास्तविषा मादयन्ताम् ॥६॥

जो देवों के ऋत्विज् एवं पूज्य हैं, जिनके निमित्त हविष्यान्न समर्पित करने का विधान है, ऐसे सभी देवगण अपनी शक्तियों के साथ इस यज्ञ में आकर हमारे द्वारा प्रदत्त हवि पाकर परितृप्त हों ॥१९,५८.६॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ५९ – यज्ञ सूक्त

अग्नि की स्तुति

त्वमग्ने व्रतपा असि देव आ मर्त्येष्वा ।
त्वं यज्ञेष्वीड्यः ॥१९,५.१॥

हे अग्निदेव ! आप मनुष्यों के बीच व्रतों के संरक्षक हैं और यज्ञों में स्तुति योग्य हैं ॥१९,५९.१॥

यद्वो वयं प्रमिनाम व्रतानि विदुषां देवा अविदुष्टरासः ।
अग्निष्टद्विश्वादा पृणातु विद्वान्त्सोमस्य यो ब्राह्मणामाविवेश
॥१९,५९.२॥

हे देवगण ! आपके व्रत- अनुशासन से अनभिज्ञ हम लोग जो भी त्रुटियाँ करें, उन्हें यज्ञीय व्रतों के ज्ञाता अग्निदेव अवश्य पूर्ण करें । सोमपूजक ब्रह्मनिष्ठों के समान ही अग्निदेव उस स्थान पर विराजमान हैं ॥१९,५९.२॥

आ देवानामपि पन्थामगन्म यच्छक्नवाम तदनुप्रवोढुम् ।

अग्निर्विद्वान्त्स यजात्स इद्धोता सोऽध्वरान्त्स ऋतून् कल्पयाति ॥१९,५९.३॥

हम देवत्व के मार्ग पर गतिमान् हों । हमारा वह कार्य अनुकूलतापूर्वक पूर्ण हो । वे ज्ञानी अग्निदेव निश्चित रूप से होता हैं । वे ऋतुओं और यज्ञों को समर्थ बनाएँ ॥१९,५९.३॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ६० – अङ्ग सूक्त

शारीरिक स्वास्थ्य की कामना

वाङ्ग आसन् नसोः प्राणश्चक्षुरक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः ।
अपलिताः केशा अशोणा दन्ता बहु बाह्वोर्बलम् ॥१९,६०.१॥

हमारे मुख में वाणी, नासिका में प्राण, नेत्रों में उत्तम दृष्टि कानों में श्रवण शक्ति, श्वेत रंग से रहित केशों में सौन्दर्य रहे । हमारे दाँत अक्षुण्ण तथा भुजाएँ बलिष्ठ रहें ॥१९,६०.१॥

ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः पादयोः ।
प्रतिष्ठा अरिष्टानि मे सर्वात्मानिभृष्टः ॥१९,६०.२॥

हमारे ऊरुओं (जंघाओं) में ओज, पिंडलियों में गतिशीलता और पैरों में स्थिर रहने की सामर्थ्य विद्यमानरहे । हमारे सभी शारीरिक अंग-अवयव नीरोग रहें तथा आत्मबल गिरे नहीं ॥१९,६०.२॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ६१ – पूर्ण आयु सूक्त

अग्नि से पूर्ण आयुष्य की कामना

तनूस्तन्वा मे सहे दतः सर्वमायुरशीय ।
स्योनं मे सीद पुरुः पृणस्व पवमानः स्वर्गे ॥१९,६१.१॥

हम शरीर के अंगों, दाँतों की स्वस्थता सहित पूर्ण आयुष्य प्राप्त करें । हे पवमान (अग्निदेव) ! आप सुखपूर्वक हमारे यहाँ प्रतिष्ठित रहें और स्वर्गलोग में हमें सुख से परिपूर्ण रखें ॥१९,६२.१॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ६२ – सर्वप्रिय सूक्त

अग्नि की स्तुति

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु ।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये ॥१९,६२.१॥

है अग्निदेव ! आप हमें देवताओं एवं राजाओं का प्रिय बनाएँ । शूद्रों, आर्यों आदि सभी दर्शकों का भी प्रिय पात्र बनाएँ ॥१९,६२.१॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ६३- आयुवर्धन सूक्त

ब्रह्मणस्पति की स्तुति

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेन बोधय ।
आयुः प्राणं प्रजां पशून् कीर्तिं यजमानं च वर्धय ॥१९,६३.१॥

हे ज्ञान के स्वामी (ब्रह्मणस्पते) ! आप स्वयं उठकर देवशक्तियों को यज्ञीय प्रयोजनों के लिए प्रेरित करें । आप यजमान की आयुष्य, प्राण (जीवनीशक्ति), प्रजा, पशुधन तथा कीर्ति को भी बढ़ाएँ ॥१९,६३.१॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ६४- दीर्घायु सूक्त

जातवेद अग्नि की स्तुति

अग्ने समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे ।
स मे श्रद्धां च मेधां च जातवेदाः प्र यच्छतु ॥१९,६४.१॥

जातवेदा अग्निदेव के लिए हम समिधा लेकर आये हैं । समिधाओं से प्रदीप्त हुए अग्निदेव हमें श्रद्धा और मेधा प्रदान करें ॥१९,६४.१॥

इध्मेन त्वा जातवेदः समिधा वर्धयामसि ।
तथा त्वमस्मान् वर्धय प्रजया च धनेन च ॥१९,६४.२॥

हे सर्वज्ञाता अग्निदेव ! जिस प्रकार हम आपको समिधाओं से प्रवृद्ध करते हैं, उसी प्रकार आप हमें सन्तानरूप प्रजा और धन सम्पदाओं से बढ़ाएँ- सम्पन्न बनाएँ ॥१९,६४.२॥

यदग्ने यानि कानि चिदा ते दारूणि दध्मसि ।
सर्वं तदस्तु मे शिवं तज्जुषस्व यविष्ठ्य ॥१९,६४.३॥

हे अग्निदेव ! आपके निमित्त हम जो भी काष्ठ लाकर रखते हैं, वे सभी हमारे निमित्त कल्याणकारी हों । हे तरुण अग्निदेव ! आप इन समिधाओं का सेवन करें ॥१९,६४.३॥

एतास्ते अग्ने समिधस्त्वमिद्धः समिद्धव ।
आयुरस्मासु धेह्यमृतत्वमाचार्याय ॥१९,६४.४॥

हे अग्निदेव ! आपके निमित्त ये समिधाएँ लाई गई हैं, इनसे आप प्रज्वलित हों । आप हम समिधाधानकर्ताओं को दीर्घ आयुष्य प्रदान करें। आप हमारे आचार्य को भी अमरता प्रदान करें ॥१९,६४.४॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ६५- सूक्त

सूर्य की प्रशंसा

हरिः सुपर्णो दिवमारुहोऽर्चिषा ये त्वा दिप्सन्ति दिवमुत्पतन्तम् ।
अव तां जहि हरसा जातवेदोऽबिभ्यदुग्रोऽर्चिषा दिवमा रोह सूर्य ॥१९,६५.१॥

हरि (दुःखहर्ता) सुपर्ण (सूर्यदेव) अपनी तेजस्विता से आकाश पर आरूढ़ होते हैं। हे जातवेदा सूर्यदेव ! आकाश में आरूढ़ होते समय जो अवरोधक आपको हानि पहुँचाते हैं, उन्हें आप अपने संहारक तेज से विनष्ट करें । निर्भय होकर आप अपने प्रचण्ड पराक्रम से द्युलोक पर आरोहण करें ॥१९,६५.१॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ६६ – असुरक्षयणम् सूक्त

जातवेद सूर्य की वंदना

अयोजाला असुरा मायिनोऽयस्मयैः पाशैरङ्किनो ये चरन्ति ।
तांस्ते रन्धयामि हरसा जातवेदः सहस्रऋष्टिः सपत्नान्
प्रमृणन् पाहि वज्रः ॥१९,६६.१॥

हे जातवेदा ! जो मायावी राक्षस लौहपाश और लौहजाल हाथ में लेकर विचरण करते हैं, उन सभी को हम आपके तेज से नष्ट करते हैं ।आप हजारों नौकों (रश्मियों) वाले वज्र से शत्रुओं का संहार करके हमारी रक्षा करें ॥१९,६६.१॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ६७ – दीर्घायु सूक्त

सूर्य देव की स्तुति

पश्येम शरदः शतम् ॥१९,६७.१॥

(हे सूर्यदेव !) हम सौ वर्षों तक देखें ॥१९,६७.१॥

जीवेम शरदः शतम् ॥१९,६७.२॥

हम सौ वर्ष तक जीवित रहें । ॥१९,६७.२॥

बुध्येम शरदः शतम् ॥१९,६७.३॥

हम सौ वर्ष तक ज्ञान- सम्पन्न रहें ॥१९,६७.३॥

रोहेम शरदः शतम् ॥१९,६७.४॥

हम सौ वर्ष तक निरंतर वृद्धि करते रहें ॥१९,६७.४॥

पूषेम शरदः शतम् ॥१९,६७.५॥

हम सौ वर्ष तक परिपुष्ट रहें॥१९,६७.५॥

भवेम शरदः शतम् ॥१९,६७.६॥

भूषेम शरदः शतम् ॥१९,६७.७॥

भूयसीः शरदः शतम् ॥१९,६७.८॥

हम सौ वर्ष तक सन्तान आदि के प्रभाव से भली प्रकार सम्पन्न रहें । सौ वर्ष से भी अधिक समय तक हम जीवित रहें ॥१९,६७.६-१९,६७.८॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ६८ – वेदोक्तकर्म सूक्त

व्यान और प्राण वायु के मूल आधार का विस्तार

अव्यसश्च व्यचसश्च बिलं वि ष्यामि मायया ।
ताभ्यामुद्धृत्य वेदमथ कर्माणि कृण्महे ॥१९,६८.१॥

हम व्यापक और अव्यापक (प्राण तत्त्व) के बिल (मर्म या गुह्य आश्रय स्थल) में कुशलतापूर्वक प्रवेश करते हैं। उनके ज्ञान के उद्धरण द्वारा हम कर्मानुष्ठान करते हैं ॥१९,६८.१॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ६९- आपः सूक्त

इंद्र आदि देवगण की स्तुति

जीवा स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् ॥१९,६९.१॥

(हे देवगण !) आप आयु सम्पन्न हैं । हम भी आयुष्मान् हों, हम पूर्ण आयु (१०० वर्ष) तक जीवित रहें ॥१९,६९.१॥

उपजीवा स्थोप जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् ॥१९,६९.२॥

आप दीर्घ आयु से युक्त हैं, हम भी दीर्घायु सम्पन्न हों, हम सम्पूर्ण आयु पर्यन्त जीवन धारण किये रहें ॥१९,६९.२॥

संजीवा स्थ सं जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् ॥१९,६९.३॥

आप श्रेष्ठ जीवनयापन करने वाले हैं, हम भी श्रेष्ठ जीवनयापन करें और सम्पूर्ण आयु तक जिएँ ॥१९,६९.३॥

जीवला स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम् ॥१९,६९.४॥

हे देवगण ! आप जीवन युक्त हैं, हम भी जीवन सम्पन्न रहें, पूर्ण आयु तक जीवन धारण किये रहें ॥१९,६९.४॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ७० – पूर्णायु सूक्त

इंद्र की स्तुति

इन्द्र जीव सूर्य जीव देवा जीवा जीव्यासमहम् ।
सर्वमायुर्जीव्यासम् ॥१९,७०.१॥

हे इन्द्रदेव ! आप जीवनयुक्त रहें । हे सूर्यदेव ! आप जीवन सम्पन्न रहें । हे देवशक्तियो ! आप भी जीवन्त रहें। हम भी चिरकाल तक जीवन धारण किये रहें ॥१९,७०.१॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ७१-वेदमाता सूक्त

सावित्री देवी की स्तुति

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् ।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् ।
मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ॥१९,७१.१॥

हम साधकों द्वारा स्तुत (पूजित हुई, अभीष्ट फल प्रदान करने वाली वेदमाता (गायत्री) द्विजों को पवित्रता और प्रेरणा प्रदान करने वाली हैं। आप हमें दीर्घ जीवन प्राणशक्ति, सुसन्तति, श्रेष्ठ पशु (धन), कीर्ति, धन- वैभव और ब्रह्मतेज प्रदान करके ब्रह्मलोक के लिए प्रस्थान करें ॥१९,७१.१॥

॥अथर्ववेद – एकोनाविंश काण्डम्॥

सूक्त ७२ – परमात्मा सूक्त

देवों से मनचाहे कर्म के फल की याचना

यस्मात्कोशादुदभराम वेदं तस्मिन्न् अन्तरव दध्म एनम् ।
कृतमिष्टं ब्रह्मणो वीर्येण तेन मा देवास्तपसावतेह
॥१९,७२.१॥

जिस कोश से हमने वेद को निकाला है, उसी स्थान में उसे (वेद को) पुन: प्रतिष्ठित करते हैं । ज्ञान की शक्ति (वीर्य) से जो अभीष्ट कर्म किया गया है, देव शक्तियाँ उस तप के द्वारा हमारा संरक्षण करें ॥१९,७२.१॥

॥इति एकोनाविंश काण्डम्॥